www.terapanthinfo.com

इस अंक में

अहिंसक-नैतिक चेतना का अग्रदूत पाक्षिक

अणुव्रत

वर्ष : 55 ■ अंक : 12 ■ 16-30 अप्रैल, 2010

संपादक : डॉ. महेन्द्र कर्णावट
सहयोगी संपादक : निर्मल एम. रांका

अणुव्रत में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से संपादक/प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है।

❐ सदस्यता शुल्क :

- एक प्रति : बारह रु.
- वार्षिक : 300 रु.
- त्रैवार्षिक : 700 रु.
- दस वर्षीय : 2000 रु.

❐ विज्ञापन सहयोग :

- द्वितीय मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- तृतीय मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- चतुर्थ मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- साधारण पृष्ठ 'पूरा' : 3,000 रु.
- साधारण पृष्ठ 'आधा' : 2,000 रु.

❐ सम्पर्क सूत्र :
अणुव्रत महासमिति
210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली--110002

दूरभाष : (011) 23233345
फैक्स : (011) 23239963

E-mail : anuvrat_mahasamiti@yahoo.com
Website : anuvratinfo.org

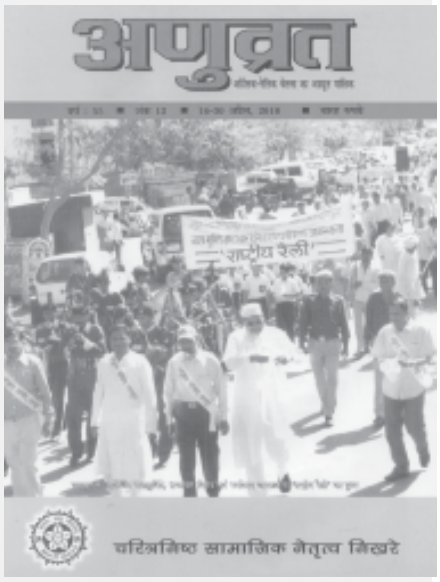

- निःशस्त्रीकरण का सिद्धांत — *आचार्य तुलसी* — 3
- जीवन की तुला : समता के बटखरे — *आचार्य महाप्रज्ञ* — 5
- ग्लोबल वार्मिंग का कारण पशु-हत्या भी है — *स्वामी वाहिद काज़मी* — 7
- पर्यावरण से दुश्मनी निभाता विकास — *अमिताभ पाण्डेय* — 8
- रचनात्मक लेखन — *सुरेश पंडित* — 10
- नैतिकता से दूर होती शिक्षा — *कृष्ण कुमार वर्मा* — 13
- सघन अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र - टमकोर — *रमेश कुमार जीनगर* — 14
- सकारात्मक चिंतन — *सीताराम गुप्ता* — 15
- कविता और भेड़चाल — *जसविंदर शर्मा* — 16
- गणतंत्र की गरिमा — *सुषमा जैन* — 18
- पूर्वोत्तर भारत की यात्रा :2: — *डॉ. महेन्द्र कर्णावट* — 20
- विश्व शांति का मूलमंत्र — *विधानाचार्य ब्रज त्रिलोक* — 26
- रहस्य अध्यात्म चिकित्सा का — *मुनि किशनलाल* — 28
- दादी माँ की महानता — *अखिलेश कुमार* — 30

■ स्तंभ

- संपादकीय — 2
- राष्ट्र चिंतन — 6
- प्रेरणा — 10
- कविता — 9, 17
- पाठकों के स्वर — 25
- झाँकी है हिन्दुस्तान की — 27
- अणुव्रत आंदोलन — 33-38
- कृति — 39

www.terapanthinfo.com

चरित्रनिष्ठ सामाजिक नेतृत्व निखरे

समाज के जर्जर हालात को बदलने के लिए रूढ़ मान्यताओं एवं कुरूढ़ियों के ढाँचे को ढहा कर स्वस्थ परम्पराओं को प्रतिष्ठापित करना आवश्यक होता है। समाजोत्थान का श्रमसाध्य कार्य पूर्व में आध्यात्मिक एवं सामाजिक नेतृत्व के द्वारा समय-समय पर होता रहा है, जिसके परिणाम स्वरूप समाज ने कई बार नई करवटें लीं। आध्यात्मिक नेतृत्व से दिशा एवं प्रेरणा पाकर सामाजिक नेतृत्व ने प्रारंभ से ही समाज परिवर्तन के क्रम में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है। सौभाग्य से आज सबल चरित्रसम्पन्न आध्यात्मिक नेतृत्व के द्वारा धार्मिक एवं स्वस्थ चिंतन की धारा तो प्रवाहित हो रही है लेकिन चरित्रशील सामाजिक नेतृत्व के अभाव में परिवार- समाज में नकारात्मक चिंतन एवं परिवर्तन घटित हो रहा है। इससे समाज में मूल्यविहीन परम्पराएँ प्रतिष्ठित हो रही हैं और स्वस्थ परम्पराएँ बिखर रही हैं। बढ़ती मूल्यविहीनता के कारण समाज में स्वच्छंद भोग की वृत्ति बढ़ी है तो प्रदर्शन-आडम्बर ने समग्र समाज को अपने मोहपाश में बाँध लिया है। **बढ़ते स्वच्छंद भोग और आडम्बर से अनुशासनहीन व्यक्ति तो नजर आ रहे हैं, अनुशासित समाज नहीं। इसके मूल में हमारा सामाजिक नेतृत्व है जिसकी कथनी और करनी में भारी अंतर है।**

वर्तमान में सामाजिक नेतृत्व उन परिवारों से आ रहा है जो सर्व साधन-सुविधा-अर्थ सम्पन्न हैं। अर्थ सम्पन्न नेतृत्व से संयम-सादगी की अपेक्षा रखना बेमानी है। समाज को सही दिशा और सही नेतृत्व वही व्यक्ति दे सकता है जिसका जीवन सादगी और संयम से ओतप्रोत हो। जो व्यक्ति चरित्र सम्पन्न है वही समाज को ईमानदार नेतृत्व दे सकता है और जनता के दर्द को महसूस कर सकता है।

इतिहास पुरुष महाराज शिवाजी मुगल सेना से बचने के लिए वेश बदलकर घूमते रहते थे। एक बार वे एक अत्यंत गरीब ब्राह्मण के घर जा पहुँचे। प्रतिदिन भिक्षा लाकर ब्राह्मण विनायक देव अपने परिवार का जीवन यापन करता था। गरीब होते हुए भी ब्राह्मण देवता ने शिवाजी का पूरा सत्कार किया। एक दिन भिक्षा बहुत कम मिली। विनायक देव ने प्राप्त अन्न से भोजन बनाकर शिवाजी, अपनी माँ को खिला दिया और स्वयं भूखा सो गया। शिवाजी इस स्थिति को देख भीतर से काँप उठे। शिवाजी ने कुछ देर सोचा, निर्णय लिया और तत्काल मुगल सूबेदार को एक पत्र लिखा मैं शिवाजी इस ब्राह्मण के घर ठहरा हुआ हूँ मुझे पकड़ लें और यह सूचना देने के लिए विनायक देव ब्राह्मण को घोषित इनाम की दो हजार अशर्फियाँ दे दें। मुगल सूबेदार शिवाजी की ईमानदारी और चरित्र सम्पन्नता से परिचित था। उसने विनायक को दो हजार अशर्फियों का घोषित इनाम देकर शिवाजी को गिरफ्तार कर लिया। बाद में तानाजी से विनायक देव को ज्ञात हुआ कि उसके अतिथि तो स्वयं शिवाजी महाराज थे। वह रोने लगा कि मैंने ही वह जघन्य अपराध किया है जिसका कोई प्रायश्चित नहीं। तब तानाजी ने उसे समझाया और मुगल सूबेदार से संघर्ष कर महाराज शिवाजी को छुड़ाया।

आज हमें शिवाजी जैसे ईमानदार, चरित्रसम्पन्न एवं दूसरे के दुःख को समझने वाले सामाजिक नेतृत्व की आवश्यकता है जो समाज के साथ रह समाज को बदलने की इच्छाशक्ति रखते हों और जिनकी कथनी-करनी में अंतर न हो। सौभाग्य से अणुव्रत अनुशास्ता के रूप में आचार्य महाप्रज्ञ का सशक्त आध्यात्मिक नेतृत्व हमें प्राप्त है जिनकी विचार दृष्टि सामाजिक व्यवस्थाओं को बदलने में सक्षम है। आवश्यकता इस बात की है कि अणुव्रत अनुशास्ता के चिन्तन को जीवन का आधार बना चरित्रनिष्ठ सामाजिक नेतृत्व निखरे, जो व्याप्त जड़ता, प्रदर्शन, आडम्बर पर प्रहार कर समाज में सादगी, ईमानदारी, त्याग, संयम को प्रतिष्ठापित कर समाज को नई दिशा-नई गति दे सके।

● **डॉ. महेन्द्र कर्णावट**

www.terapanthinfo.com

निःशस्त्रीकरण का सिद्धांत

आचार्य तुलसी

निःशस्त्रीकरण आज की अंतर्राष्ट्रीय चर्चा का विषय है। शस्त्र-निर्माण और शस्त्र-प्रयोग के आतंक ने मनुष्य को इतना डरा दिया है कि अब वह निःशस्त्रीकरण की ओर आशाभरी निगाहों से देख रहा है। निःशस्त्रीकरण शब्द इस युग का है। युग पुरुष महावीर के युग का शब्द है शस्त्रपरिज्ञा। आयारो के प्रथम अध्ययन का नाम है सत्यपरण्णिा शस्त्रपरिज्ञा।

'शस्त्रपरिज्ञा' शब्द दो शब्दों का जोड़ है शस्त्र और परिज्ञा। शस्त्र के दो रूप हैं द्रव्यशस्त्र और भावशस्त्र। द्रव्यशस्त्र शस्त्र रूप में प्रयुक्त होने वाला पदार्थ होता है, भावशस्त्र है व्यक्ति का असंयम या अविरति। सीधे शब्दों में कहा जाए तो भावशस्त्र का अर्थ है हिंसा के भाव।

परिज्ञा के दो रूप हैं ज्ञ परिज्ञा और प्रत्याख्यान परिज्ञा। ज्ञ परिज्ञा से जाना जाता है और प्रत्याख्यान परिज्ञा से हेय का प्रत्याख्यान किया जाता है। इसके लिए शस्त्र-विवेक शब्द भी काम में आता है। शस्त्र-विवेक की पूरी व्याख्या इस प्रकार होती है 'शस्त्र का निर्माण न हो, उसका क्रय न हो, उसके द्वारा किसी का प्राण-वियोजन न हो।' संक्षेप में कहा जाए तो इसका वाच्यार्थ है शस्त्र मत बनो। जब तक व्यक्ति शस्त्र बना रहता है, मार-काट होती रहती है।

संयम आश्वासन है

पाषाणयुग में मनुष्य प्रस्तरशस्त्रों का प्रयोग करता था। काष्ठ और लौह के शस्त्र बाद में बने। शस्त्रों का विकास होते-होते उसकी यात्रा अणु-युग तक पहुँच गई। आने वाली सदी में अणु से भी सुक्ष्म और मारक शस्त्रों का निर्माण हो सकता है। युग पुरुष महावीर ने कहा है *अत्थि सत्थं परं परेण, नत्थि असत्थं परं परेण।* शस्त्र में, हिंसा परम्परा चलती है। अशस्त्र में, अहिंसा में कोई परम्परा नहीं है। ईंट का जवाब पत्थर से दिया जा सकता है। अहिंसा अशस्त्र है, संयम अशस्त्र है, अहिंसा और संयम का जवाबी हमला क्या हो सकता है?

संयम क्या है? मन, वाणी और शरीर पर अपना नियंत्रण ही संयम है। अपने से अपना अनुशासन, यही संयम है। सारा संसार असंयम की दिशा में बढ़ रहा है। विश्व स्तर की समस्याओं में सबसे बड़ी समस्या असंयम की है। इसका समाधान खोजे बिना किसी भी समस्या का समाधान संभव नहीं है। क्योंकि समस्याओं का कोई ओर-छोर नहीं है। भूत को भगाया जाता है तो पलीत जाग जाता है। एक समस्या को समाप्त किया जाता है तो दूसरी खड़ी हो जाती है। इस समस्या-बहुल समय में मनुष्य के लिए कोई आश्वासन है तो वह है संयम। इसके द्वारा ही हिंसा को नियंत्रित किया जा सकता है।

शस्त्रपरिज्ञा के दो रूप

शस्त्रपरिज्ञा छोटा-सा शब्द है। इसकी अर्थ-मीमांसा बहुत गहरी है। उस गंभीरता तक हर व्यक्ति की पहुँच नहीं हो सकती। इस दृष्टि से तत्त्वप्रतिपादन के कई स्तर निर्धारित हैं। सामान्यतः कोई नया व्यक्ति सम्पर्क में आता है। उसे साधुचर्या की जानकारी दी जाती है तो पदयात्रा, केशलोच, रात को नहीं खाना, रात को पानी नहीं पीना, भिक्षा से जीवनयापन करना आदि प्राथमिक बातें बताई जाती हैं। कोई बौद्धिक व्यक्ति आता है तो उसको समता, सहिष्णुता, लाभ-अलाभ में समभाव, ध्यान आदि गंभीर तत्त्व समझाए जाते हैं। आने वाला धर्म और दर्शन का मर्मज्ञ होतो आत्मवाद, कर्मवाद, स्याद्वाद, दान, दया, मिश्रधर्म आदि का मर्म बताया जाता है।

शस्त्रपरिज्ञा के संदर्भ में भी दोनों प्रकार से विवेचन होता है। किसी को पीटो मत, मारो मत आदि शस्त्र से उपरत होने का स्थूल रूप है। सूक्ष्मता से देखा जाए तो क्रोध, मान, माया, लोभ, कलह, अभ्याख्यान, पैशुन्य आदि

> **"जो क्रोध करता है, वह भीतर से संतप्त होता ही है। शरीर के स्तर पर उसे कम्पन, रक्तचाप की वृद्धि, हृदयरोग आदि अनेक बीमारियों का उपहार मिलता है। इसलिए आयंकदंसी अहियं ति णच्चा आतंकदर्शी व्यक्ति क्रोध आदि निषोधात्मक भावों में अपना अहित देखकर उनसे दूर रहने का प्रयास करें। ऐसा करने वाला किसी का हित संपादन कर सके या नहीं, कम-से-कम अपना अहित नहीं करेगा।"**

तीक्ष्ण शस्त्र हैं। इन शस्त्रों की परिज्ञा आवश्यक है।

क्रोधी अपना अहित करता है

हिंसक व्यक्ति स्थूल और सूक्ष्म दोनों प्रकार के शस्त्रों का उपयोग करता है। वह सोचता है कि उसके शस्त्र से दूसरा व्यक्ति मरता है। पर दूसरे को मारने वाला पहले स्वयं को मारता है। स्वयं को मारे बिना दूसरे पर प्रहार नहीं किया जा सकता। एक व्यक्ति क्रोध करता है। उसके क्रोध से दूसरा व्यक्ति क्रोधित या उत्तेजित हो, यह अनिवार्यता नहीं है। क्रोध करने वाला उसका नुकसान करना चाहता है। पर वह उत्तेजित नहीं होगा तो उसका कुछ भी अहित नहीं होगा।

जो क्रोध करता है, वह भीतर से संतप्त होता ही है। शरीर के स्तर पर उसे कम्पन, रक्तचाप की वृद्धि, हृदयरोग आदि अनेक बीमारियों का उपहार मिलता है। इसलिए आयंकदंसी अहियं ति णच्चा आतंकदर्शी व्यक्ति क्रोध आदि निषोधात्मक भावों में अपना अहित देखकर उनसे दूर रहने का प्रयास करें। ऐसा करने वाला किसी का हित संपादन कर सके या नहीं, कम-से-कम अपना अहित नहीं करेगा। अठारह पाप निषेधात्मक भाव हैं। आत्महित की प्रेरणा से इनसे निवृत्त हुआ जा सकता है। जो व्यक्ति आत्महित या निर्जरा के लिए तपस्या करता है, साधना करता है, वह कभी निराश नहीं होता। निराशा उसे मिलती है, जो किसी आकांक्षा में बंधकर साधना का पथ स्वीकार करता है।

वक्ता को लाभ ही मिलता है

मैं प्रवचन करता हूँ। हजारों लोग प्रवचन सुनते हैं। श्रोता लोग प्रवचन को ध्यान से सुनें, यह आवश्यक नहीं है। यह भी आवश्यक नहीं है कि सब लोग मेरी बात मानकर धार्मिक बनें। कोई मेरी बात नहीं सुनता है, नहीं समझता है और अपने जीवन का क्रम नहीं बदलता है, इस बात को लेकर मुझे निराशा क्यों हो?

एकांत हितकारी बात सुनने पर भी सब श्रोता धार्मिक नहीं बन सकते। अनुग्रह बुद्धि से बोलने वाला वक्ता उससे निश्चित रूप से लाभान्वित होता है।

श्रोता को लाभ न हो तो वक्ता को लाभ कैसे मिलेगा? यह गणित यहाँ काम नहीं करता। श्रोता का अपना कर्तृत्व है और वक्ता का अपना। श्रोता को लाभ होगा सुने हुए उपदेश पर अमल करने से। वक्ता बिना किसी आकांक्षा के बोलता है। उसका बोलना ही तपस्या है। यदि उसके मन में पूजा-प्रतिष्ठा पाने की लालसा है तो उसका बोलना तपस्या नहीं हो सकता। पूजा-प्रतिष्ठा उसे मिले या नहीं, प्रवचन करने से होने वाली निर्जरा के लाभ से वह अवश्य वंचित रह जाता है।

प्रश्न गणित का नहीं, समझ का है

मालिक ने नौकर को वैद्य के पास भेजा। वह गया और वैद्य को लेकर लौटा। इसमें समय बहुत लग गया। मालिक ने विलम्ब का कारण पूछा। नौकर बोला 'मैं एक साथ अनेक काम करके आया हूँ।' मालिक ने कामों का विवरण मांगा तो वह बोला 'वैद्यजी को लाना ही था। वैद्य मालिश कराने का परामर्श देता तो मालिश करने वाले को बुलाने जाना पड़ता। यह भी संभव है कि वैद्य की दवा फेल हो जाए और मरीज मर जाए। उसके लिए कफन की जरूरत होगी, वह भी मैं साथ ही ले आया हूँ।'

मालिक ने कहा 'तुमने ऐसी अशुभ कल्पनाएं क्यों की?' नौकर बोला 'लालाजी! मैं इतना मूर्ख नहीं हूँ कि एक काम के लिए बार-बार घूमता रहूँ।' मालिक सिर थाम कर बैठ गया। नौकर का यह गणित किसकी समझ में आ सकता है और किसके लिए उपयोगी हो सकता है।

इस समग्र कथन का सार इतना ही है कि हमारी विवेक चेतना सदा जागृत रहे। हम कुछ बोलें तो विवेक से बोलें और करें तो विवेक से करें। विवेक ही वह तत्त्व है, जो व्यक्ति को शस्त्र बनने तथा शस्त्र का प्रयोग करने से बचा सकता है।

दो व्यक्ति धर्माराधना नहीं कर पाते

इस संसार में ऐसे व्यक्ति भी हैं, जिनकी विवेक चेतना जागृत नहीं होती। विवेक चेतना के जागरण के बिना व्यक्ति धार्मिक नहीं बन सकता। महावीर ने कहा है कि दो प्रकार के व्यक्ति धर्म की आराधना नहीं कर सकते। वे दो प्रकार के व्यक्ति हैं आर्त और प्रमादी 'अट्टावि संता अदुवा पमत्ता'। आर्त व्यक्ति दुःखी होता है। दुःख में डूबा हुआ आदमी अपने भीतर नहीं देख सकता। जब तक आत्मदर्शन की स्थिति नहीं बनती, धार्मिकता नहीं आ सकती।

प्रमाद वे करते हैं, जो विलासी होते हैं। विलासिता में आकंठ निमग्न व्यक्ति अपने कर्त्तव्य को भी विस्मृत कर देते हैं। धर्म जैसे आध्यात्मिक तत्त्व को समझने के लिए उन्हें अवकाश ही नहीं मिलता। उनके जीवन का लक्ष्य दैहिक स्तर से आगे नहीं बढ़ता। देह के स्तर पर जीने वाले लोग पदार्थाभिमुख वृत्ति वाले होते हैं। पदार्थ को देहधारण का साधन मानना, पदार्थ की उपयोगिता स्वीकार करना है। पदार्थ को ही सब कुछ मान लेना सत्य से आंखमिचौनी करना है। सत्य से आंख मूंदने की स्थिति में व्यक्ति अनर्थ हिंसा में प्रवृत्त होता है।

राजनीति का क्षेत्र हो या समाज का, धार्मिक मतवादों की समस्या हो या परिवार की, हिंसा ने अपने पांव सब जगह फैला लिए। उसकी पकड़ जितनी गहरी होती जा रही है, निःशस्त्रीकरण की अपेक्षा उतनी ही बढ़ती जा रही है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अंतर्राष्ट्रीय मंच से निःशस्त्रीकरण की आवाज उठ रही है। धार्मिक लोगों के लिए यह अच्छा अवसर है। इस अवसर का उचित लाभ उठाकर शस्त्रनिर्माण की चेतना को रूपांतरित करने का प्रयोग हो तो मनुष्य के मन से शस्त्र का भय समाप्त हो सकता है।

जीवन की तुला : समता के बटखरे

आचार्य महाप्रज्ञ

एक आदमी गाय रखता है, उसे घास खिलाता है, दूध दुहकर गर्म करता है और जमाता है। दही का फिर बिलौना करता है। इतना कार्य क्यों करता है? यह लम्बी और दीर्घकालीन प्रक्रिया नवनीत के लिए की जाती है। स्नेह और मक्खन के लिए ही यह परिश्रम किया जाता है। जीवन में खाने-पीने, श्रम आदि की सारी लम्बी प्रक्रिया इसलिए करते हैं कि सुख और शांति से जी सकें।

जीवन का नवनीत है शांति। जिंदगी का मक्खन है मन की शांति। हम धर्म, भगवान् और शास्त्रों के पीछे शांति के लिए ही जाते हैं। हजारों मील की यात्रा करके भी व्यक्ति वहाँ पहुँच जाता है, जहाँ शांति मिलने की आशा हो, समाधि मिलती हो। शांति नहीं मिलती है ऐसा नहीं कहा जा सकता, किन्तु शांति का प्राप्त होना सहज नहीं है क्योंकि शांति के लिए जो तपस्या चाहिए, व्यक्ति उसे कर नहीं पाता। चार मास की तपस्या करना सरल होता है किन्तु चार मिनट के लिए भी समभाव में रहना कठिन बात है।

मन में उच्चावच भाव आते हैं, उतार-चढ़ाव की स्थिति पैदा होती है तो शांति भंग हो जाती है। यह परिस्थितियों के कारण आता है। व्यक्ति स्वयं में स्थित नहीं है, दूसरों से प्रभावित होता है। रात होते ही नींद आने लगती है, सुबह होते ही चाय-जलपान की आवश्यकता महसूस हो जाती है। वह क्षेत्र, व्यक्ति, मान, अपमान, सम्मान से प्रभावित होता है। यदि इनसे व्यक्ति प्रभावित नहीं होता तो कठिनाई नहीं होती।

शंकर के पास एक बार शनिदेव आये और बोले, ''भगवन्! अब आपकी राशि पर साढ़े साती के साथ आने वाला हूँ।'' शनिदेव चले गये लेकिन शंकर को उसके कथन से अपमान का अनुभव हुआ। उन्होंने शनि की चुनौती स्वीकार कर ली और सोचा कि मैं गुफा में जाकर साढ़े सात वर्षों तक निरन्तर तपस्या और साधना में लग जाऊंगा, फिर देखें वह मेरा क्या बिगाड़ लेता है। शंकर ने साढ़े सात वर्षों तक एकांत में साधना की, खाना-पीना कुछ भी नहीं किया। समय पूरा होने पर शनि आया तो शंकर ने कहा ''छोकरे! तूने मेरा क्या बिगाड़ लिया?'' शनि ने हंसकर कहा ''भगवन! भला इससे अधिक कष्ट क्या दे सकता था कि आप पूरे साढ़े सात वर्षों तक भूखे और प्यासे रहे।'' जब शंकर भी परिस्थिति से प्रभावित हो गए तो साधारण व्यक्ति की क्या बात?

मन की परिस्थितियों से अप्रभावित रखना कठिन है। कोई आदमी सम्मान देता है, प्रशंसा करता है तो गर्व का भाव आ जाता है। इसके प्रतिकूल कहीं अपमान हो जाए अथवा आलोचना हो तो क्रोध का भाव आता है। यह हर्ष और क्रोध स्वयं का नहीं, बाहर से आता है, ये बाहरी नाले और सुराख जब बन्द नहीं होंगे, शांति नहीं मिलेगी। इन आश्रवों छेदों और खिड़कियों को जब तक बन्द नहीं करेंगे, तब तक दूसरों के हाथ के खिलौने बने रहेंगे। हमारे भाग्य की कुंजी दूसरे के हाथों में चल रही है। टेप-रिकार्डर बोलता है किन्तु यह आवाज उसकी नहीं, किसी दूसरे व्यक्ति की है। ठीक वही गति हमारी है।

हम स्वयं अपने भाग्य के स्वामी नहीं है। अपने आपको स्वयं के बटखरों, गजों से तोलना-मापना नहीं जानते। दूसरों के ही बटखरों से तोलते हैं। दूसरों के कहने से ही अपने को अच्छा या बुरा मान लेते हैं। अच्छे-बुरे का मानदंड अपना नहीं, लोग जैसा कहते हैं व्यक्ति वैसा ही बन जाता है। जब तक मनुष्य दूसरों के इशारे पर नाचता रहेगा तब तक शांति की कल्पना नहीं हो सकती। इसलिए दूसरों की इच्छा और इशारे पर नाचना बंद करना जरूरी है।

जब तक समता की साधना नहीं होगी, तब तक धर्म और शांति प्राप्त नहीं की जा सकती। भगवान् महावीर ने सामायिक की बात कही, समता की साधना का उपदेश दिया। हमें वैमनस्य से बचना है, तभी शांति की बात सहज होगी। यह बात कहने में सुगम है। किन्तु करना कठिन है। शेर की गुफा में जाने से भी अधिक कठिन है विषम भाव से बचना। कहा गया

''लाभा-लाभे सुहे दुक्खे, जीविए मरणे तहा।
समो निन्दा पंससासु, तहा माणावमाणओ।''

लाभ-अलाभ, सुख-दुःख, जीवन-मरण, मान-अपमान आदि में समभाव रखो। बात ठीक लगती है, किन्तु व्यवहार में देखें कि क्या स्थिति है? अनुकूल में प्रसन्नता, प्रतिकूल में दुःख होता है मनःस्थिति में परिवर्तन हो जाता है। प्रतिकूल से निराशा, हीन भावना, दयनीयता आती है, जिससे अनेक घटनाएं घटित होती हैं। आत्महत्या जैसी भयावह स्थिति पैदा हो जाती है। लाभ-अलाभ में समान रहना कठिन है। राम को दशरथ ने राज्य देने की घोषणा की तो हर्ष नहीं, वनवास दिया तो विषाद नहीं। सचमुच यह तभी संभव है यदि व्यक्ति राम हो।

राम अर्थात् अपने आप में रमण करने वाला। बाह्य में रमण करने वाला

शांति नहीं पा सकता। अपने आप में रमण करना ही शांति है। सुख-दुःख, जीवन-मरण में समान रहना बहुत कठिन है। मनुष्य मरने की स्थिति को सपने में देखकर भी रोने लगता है। फिर साक्षात् मौत देखकर उसकी जो हालत होती है, उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। यदि किसी को मरने का दिन बता दिया जाए तो वह भय से अधमरा हो जाता है। कभी-कभी मौत के भय से मौत भी हो जाती है। इसी प्रकार मान और अपमान का प्रश्न भी है। अपने अपमान के लिए प्रतिशोध की बात तुरन्त उठती है, भले ही सामने वाले व्यक्ति के मन में कहीं थोड़ी-बहुत भी अपमान करने की भावना नहीं हो।

समझदार व्यक्ति बोलता नहीं, भाव प्रदर्शित नहीं करता, किन्तु गांठ बांध लेता है। मन को सीधा घुमा देता है, मोड़ लेने की भी जरूरत नहीं होती। अपमान-सम्मान में सम रहना दुष्कर है। मानसिक विषमता, उतार-चढ़ाव, पर विजय पाए बिना शांति नहीं शांति फल है, बीज नहीं। शांति कार्य नहीं, परिणाम है। बीज के बिना फल नहीं। उसका कारण है समभाव समता की आराधना किए बिना शांति का प्रश्न सुलझने वाला नहीं है। धर्म क्या है? समता के सिवाय कोई धर्म नहीं है। भगवान् महावीर ने समता का उपदेश दिया है। जैन-शासन से समता को हटा दें तो कुछ नहीं बचेगा।

आज धर्म के क्षेत्र को भी व्यवहार के बाटों से तोलते हैं, दुनियावी लोग स्थिति को व्यवहार से तोल सकते हैं। वे मान का सम्मान, अपमान का तिरस्कार से प्रत्युत्तर दे सकते हैं।

धार्मिक ऐसा नहीं कर सकता। वह प्रतिकूल के लिए भी अनुकूल ही करेगा। महावीर ने चण्डकौशिक के प्रति भी कल्याण का ही चिन्तन किया। वैरभाव के बदले में भी वात्सल्य का भाव प्रदर्शित किया। जिस जीवन में समता का विकास नहीं, अध्यात्म का विकास नहीं, वहाँ शांति नहीं। धर्म और शांति का मूल है समता भाव।

समता की साधना और विकास तब तक नहीं हो सकता जब तक हम दूसरे के प्रतिकूल व्यवहार को नहीं भूलते। यह भूलना भोलापन नहीं, मूर्खता भी नहीं। हर स्थिति को समझकर भी जो विरोधी व्यवहार नहीं करेगा, वही धार्मिक है। जिस व्यक्ति के मन में धर्म है, वह समझकर भी वैसा व्यवहार नहीं करेगा। जिस दिन दूसरों के मनोभावों से प्रभावित होकर अपने मनोभाव व्यक्त नहीं करेंगे, दूसरों के पैरों से प्रभावित होकर नहीं चलेंगे। तब समता और समभाव प्रकट होगा। अध्यात्म का द्वार खुलेगा और मन को शांति मिलेगी।

जो सारे साधन होते हुए भी बिलखते-बिलखते जीते हैं, घृणा, ईर्ष्या, द्वेष, लोभ, क्रोध आदि अवगुण पालकर अपने जीवन में घुन लगा लेते हैं, वे सचमुच जीना ही नहीं जानते। जो धार्मिक नहीं होता, वह जीने की कला नहीं जानता। धर्म के मर्म को समझने वाला ही सुख से जी सकता है।

राष्ट्र चिन्तन

◆ आम आदमी को उसके घर पर ही न्याय सुनिश्चित करने वाला ''ग्राम न्यायालय कानून'' देश के सभी राज्यों में जल्द लागू होना चाहिए। इससे देश में 5000 से अधिक अदालतें और खुल जाएंगी जिससे न्याय मिलने की प्रक्रिया में तेजी आएगी। ग्राम न्यायालय कानून पारित किया गया है। कानून पूरी तरह लागू होने पर न्याय प्रक्रिया में पारदर्शिता आएगी। सरकार ने अलग-अलग राज्यों में केन्द्रीय जाँच-ब्यूरो की 71 अतिरिक्त अदालतें गठित करने का फैंसला किया है। ये अदालतें अपना कामकाज सामान्य अदालतों से ज्यादा तेजी से करेंगी और लंबित मामलों की संख्या कम होगी। सरकार न्यायिक बुनियादी ढांचे के सुधार की प्रक्रिया जारी रखेगी ताकि सभी नागरिकों को तेजी से न्याय सुनिश्चित किया जा सके। हर स्तर पर मामलों के लंबित रहने के कारण भारत की न्याय व्यवस्था की साख धूमिल हुई है।

डॉ. मनमोहन सिंह
प्रधानमंत्री

◆ देश को आगामी 12 वर्षों में अतिरिक्त 600 विश्वविद्यालयों और 35,000 कॉलेजों की जरूरत है, ताकि सभी लोगों को शिक्षा सुलभ हो सके। इस हेतु एक प्रमापन सिस्टम होना चाहिए और शैक्षिक संस्थानों को अपनी संपत्ति, फैकल्टी, शिक्षक-छात्र अनुपात इत्यादि का भी खुलासा होना चाहिए। ग्रास इनरॉलमेन्ट अनुपात को बढ़ाने के लिए हमें अस्पृश्य विचारों को तलाशना होगा और उन्हें बढ़ावा देना होगा। शिक्षा के अधिकार को सर्वसुलभ बनाने के लिए लोगों को विद्यालयों के प्रति अपनी सामुदायिक जिम्मेदारी का निर्वाह करना होगा। क्योंकि उनकी मैनेजमेंट कमेटी के 75 प्रतिशत सदस्य स्थानीय लोग ही होते हैं, जिसमें बच्चों की माताओं की बड़ी संख्या है।

कपिल सिब्बल
मानव संसाधन विकास मंत्री

ग्लोबल वार्मिंग का कारण पशु-हत्या भी है

स्वामी वाहिद काज़मी

अभी कुछ समय पूर्व केन्द्रीय पर्यावरण मंत्री माननीय जयराम रमेश ने एक रिपोर्ट जारी की है। इस रिपोर्ट में कई ऐसे तथ्यों पर पड़ा पर्दा बड़ी ईमानदारी से उठाया गया है, जो हमारे सामने रहते तो हैं, पर हम अपनी आदत से मजबूर उनको अनदेखा करने की 'उदारता' फ़रमाने के पुराने आदी हैं। जहाँ रिपोर्ट यह कहती है कि देश के स्वास्थ्य व जी. डी.पी. पर पर्यावरण प्रदूषण के बढ़ते हुए दुष्प्रभाव को देखते हुए अब आवश्यक है कि देश में पर्यावरण प्रदूषण को रोकने तथा वातावरण में सुधार के लिए नयी कार्यनीति अपनायी जाए।' वहीं यह भी जताती है कि हमारे शहर दुनिया में सबसे गंदे हैं। यदि गंदगी व कूड़े-कर्कट के लिए कोई नोबल पुरस्कार होता तो निःसंदेह वह भारत को ही मिलता।' और जो सबसे चौंकाने वाली व पोशीदा सच्चाई है वह यह कि 'विश्व को ग्लोबल वार्मिंग से बचाने के लिए आवश्यक है कि बीफ़ (गोमांस) का सेवन न किया जाए। जिन देशों में यह खाया जाता है वे उसका उपयोग घटाएं। हमारी पृथ्वी में अधिकतम कार्बन का उत्पादन बीफ़ से ही होता है।'

यह रिपोर्ट ही नहीं, इससे पूर्व ही यह घिनौनी सच्चाई उजागर हो चुकी है। पिछले वर्ष 'संयुक्त राष्ट्र खाद्य एवं कृषि संगठन' के एक अध्ययन से यह उजागर हुआ था कि पृथ्वी में जितनी भी ग्रीन हाउस गैस उत्पन्न होती हैं, उसका पांचवा हिस्सा मांस उद्योग से ही पैदा होता है। उक्त अध्ययन के अनुसार एक किलो गौमांस से छत्तीस किलो, एक किलो भेड़ के मांस से 17.4 किलो, एक किलो चिकन से 4.75 किलो कार्बन उत्पन्न होता है। इस प्रकार इनसे उत्पन्न होने वाली गैस से ही ग्लोबल वार्मिंग को बढ़ावा मिल रहा है। भारत, जहाँ अधिकतर लोग शाकाहारी हैं, की अपेक्षा पश्चिम के विकसित देशों में मांसाहार 70 से 80 गुणा अधिक है। इन विकसित व धनवान देशों में सबसे अधिक बीफ़ व पोर्क (सुअर का मांस) खाया जाता है। वहाँ इनके बड़े-बड़े फार्म तथा मांस प्रोसेस करने वाले कारखाने हैं। उनकी जघन्यता मैं एक लेख में स्पष्ट कर चुका हूँ।

पश्चिमी देशों ने यही घिनौनी लानत, बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के कंधे पर चढ़कर भारत जैसे देशों में भी बड़ी तेजी से फैलाना शुरू कर दी है। और हम अंधों की तरह उसे मज़े ले-लेकर चाट रहे हैं। मेरे अनदेखे बुज़ुर्ग डॉ. नेमिचंदजी (इंदौर) ने एक सचित्र पुस्तिका 'कत्लखानेः 100 तथ्य' भेजी थी। उसमें उन्होंने साफ लिखा है, 'क़त्लखाना- तहजीब हिन्दुस्तानियों को नंगा भूखा रखकर गोरों के तन-बदन पर अधिक चर्बी चाहती है।' उक्त पुस्तिका के अनुसार 'मैक-डोनॉल्ड, कंटुकी फ्राइड चिकन, टाटम फ़ार्क्स, विंपी वेंडी इत्यादि बहुराष्ट्रीय कम्पनियां भारत में अपने पांव जमा रही हैं, इस तरह दुनिया के ग़रीब देशों को अधिकतम खाद्य निर्यात के लिए अपने खूनी शिकंजे में कस रही हैं। ख़याल रहे मैक्डोनॉल्ड का साम्राज्य से सीधा सम्बन्ध है। यह कंपनी काले लोगों को अधिक भूखा व ग़रीब रखना चाहती है। गोरों के बदन पर अधिक चर्बी चाहती है। इस तथ्य को जानकर आप स्तब्ध रह जाएंगे कि जो 14 करोड़ पचास लाख टन अनाज और सोया पशुओं को खिलाया जा रहा है, उससे प्रतिवर्ष सिर्फ दो करोड़ दस लाख टन मांस उत्पादित होता है अर्थात 20 अरब अमेरिकी डॉलर मूल्य का 12 करोड़ 40 लाख टन अनाज प्रतिवर्ष नष्ट हो जाता है। उपर्युक्त धनराशि से विश्व की सम्पूर्ण आबादी को एक वर्ष के लिए खाना, कपड़ा और मकान उपलब्ध कराये जा सकते हैं। यह है भयावह क़त्लखाना-तहजीब जिसे हमारी सरकार बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के षड़यंत्र से शक्ल देने में लगी है।'

जाहिर है स्व. नेमिचंद जी की यह टिप्पणी काफ़ी पहले की है। अब तो स्थिति यह है कि बहुराष्ट्रीय कम्पनियां भारत में अपना जाल फैला चुकी हैं और हम आंखें मूंद कर अपने पेट को मुर्दों का क़ब्रिस्तान बना चुके हैं। बेशक कोई न कोई बार-बार चेताता रहे कि जब भी आप 'बिग मैक' को कुतर रहे होते हैं तब आप मैकडोनॉल्ड साम्राज्य द्वारा इस ग्रह (प्लेनेट) को सर्वनाश की ओर धकेल रहे होते हैं।' और यह कि "मैकडोनॉल्ड का मीनू (आहार सूची) पूरी तरह मांस पर आधारित है। इसका मतलब है कि वह पशुओं की पैदाइश, परवरिश और क़त्ल केवल मैकडोनॉल्ड उत्पादों के लिए करता है।' अब अलग से यह बताने की तो शायद आवश्यकता ही नहीं कि उन उत्पादों में चर्बी, शक्कर, मांस और सोडियम (नमक) होते हैं, जो छाती और आंत के कैंसर तथा हृदय-रोग के प्रमुख कारण बनते हैं।

हैरानी नहीं, मेरे सामने एक धारदार सवाल खड़ा हो जाता है कि आखिर ज्यों-ज्यों दवा की जा रही है, त्यों-त्यों मर्ज़ बढ़ता क्यों जा रहा है? पिछले सप्ताह एक खबर मेरी नज़र से गुजरी कि अब भारतीय शाकाहारी व्यंजन समोसा भी अपने परंपरागत रूप-आकार, सुवास-स्वाद से 'प्रगति' कर मांसाहारी व्यंजन की शक्ल लेता जा रहा है। उस मॉर्डन समोसे का नामकरण भी समोसा नहीं सैम किया गया है और उसकी दो किस्में मांस-मिश्रित सैम और चिकन सैम लोकप्रिय भी होने लगे हैं। गनीमत यह है कि अभी 'सैम' इतना सस्ता और बाजारू नहीं हुआ है कि गली-मोहल्लों में बिकने लगे। क्या यह चिंताजनक स्थिति नहीं है कि हम एक अच्छे खासे शाकाहारी व्यंजन को भी मांस मिश्रित बनाने में संकोच नहीं कर रहे। अगर यही स्वाद का चटखारा और रसना-रस है तो ऐसे चटखारे और ऐसे रस पर हज़ार बार लानत।

10, राज होटल, पुल चमेली,
अम्बाला छावनी–133001 (हरियाणा)

पर्यावरण से दुश्मनी निभाता विकास

अमिताभ पाण्डेय

आधुनिक विकास ने पर्यावरण को अपूरणीय क्षति पहुँचाई है। हमारे आस-पास के जंगल व पहाड़ नष्ट हो रहे हैं। प्राकृतिक जलस्रोत या तो विलुप्त होते जा रहे हैं या प्रदूषित। आवश्यकता इस बात की है कि पर्यावरण और विकास में आपसी संतुलन बनाए रखा जाए।

मनुष्य और प्रकृति के बीच ऐसे संबंध हैं कि प्रकृति के बिना मानव जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। जल, जंगल, जमीन से मनुष्य को जीवन जीने की शक्ति मिलती है। प्रकृति ने मनुष्य को बिन मांगे अनमोल उपहार दिए हैं। स्वच्छ हवा, साफ पानी, खाद्यान्न के लिए उपजाऊ भूमि, फलदार वृक्ष आदि के साथ ही प्रकृति के अन्य साधन मनुष्य के जीवन को स्वस्थ व ऊर्जावान बनाते हैं।

वैज्ञानिकों द्वारा अनेक शोध के उपरांत जो निष्कर्ष निकले हैं उनसे यह साबित हो गया है कि प्राकृतिक वातावरण को बेहतर बनाए रखते हुए ही मानव जीवन का आनन्द लिया जा सकता है। प्राकृतिक संसाधनों को नुकसान पहुँचाने से मानव जीवन पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। इस सर्वमान्य तथ्य का ज्ञान होने के बाद भी मानव जीवन में सुख-सुविधाओं के प्रति बहते मोह ने नए-नए आविष्कारों को जन्म दिया है। ऐसे आविष्कार प्रकृति व पर्यावरण के लिए खतरा बनते जा रहे हैं। मनुष्य ने अपनी सुविधा के लिए जल, जंगल, जमीन, आकाश, पाताल हर तरफ मनमाने प्रयोग किए और प्रकृति के द्वारा उपलब्ध साधनों का हद से अधिक दुरुपयोग किया। अपने स्वार्थ के लिए मनुष्य प्राकृतिक वातावरण को लगातार नुकसान पहुँचाता चला जा रहा है। वैज्ञानिकों द्वारा बार-बार चेतावनी दिए जाने के बावजूद प्रकृति से अधिकतम पदार्थ प्राप्त कर लेने की इच्छा खत्म नहीं हो रही। प्रकृति का दोहन खूब हो रहा है।

प्राकृतिक संसाधनों के निरंतर एवं असीमित दोहन ने दुनियाभर में पर्यावरण के लिए चिंताजनक स्थिति निर्मित कर दी है। अपने लाभ के लिए मनुष्य द्वारा विकास के नाम पर कई ऐसे आविष्कार भी कर दिए गए जो जल, जंगल, जमीन में जहर घोल रहे हैं, जानवरों की मौत का कारण बने हैं। प्रकृति के उपहारों का ऐसा दुरुपयोग किया कि धरती, आकाश, पाताल जहाँ से जो मिल सकता था उसे लेने में कोई कसर बाकी न रखी। इस बेहिसाब दोहन का यह नतीजा है कि आज पर्यावरण का संकट पूरी दुनिया पर छा गया है। पर्यावरण संकट के दुष्परिणाम अकाल, बाढ़, भूकम्प, भूस्खलन जैसी आपदाओं के रूप में हमारे सामने आ रहे हैं।

पर्यावरण संकट से उत्पन्न प्राकृतिक आपदाओं के कारण होने वाली जन-धन आदि की हानि भी विकास की अंधाधुंध रफ्तार को नहीं रोक पाई है। उपजाऊ जमीन, घने जंगल, अनेक प्रकार के जल स्रोत सहित अन्य प्राकृतिक संसाधन विकास की बलि चढ़ चुके हैं फिर भी मानव जीवन के लिए खतरा साबित हो चुके विकास की सीमा रेखा को बहस से सर्वसम्मति तक की प्रक्रिया तय नहीं हो पाई है।

विकास की कोई सीमा रेखा तय न होने का नतीजा यह है कि आज अधिकांश जल स्रोत प्रदूषित होकर समाप्ति की ओर जा रहे हैं। जल संकट साल दर साल गहराता जा रहा है। हरी-भरी जमीन जलविहीन होकर रेगिस्तान में बदलने की स्थिति में है। हवा में बढ़ता जहरीला धुआं बढ़ते-बढ़ते ओजोन परत को भी नुकसान पहुँचाने की स्थिति निर्मित कर चुका है। धरती का तापमान लगातार बढ़ता जा रहा है जिसके चलते प्रकृति में अनेक नुकसानदेह परिवर्तन हो रहे हैं।

ऐसे हालात में यह जरूरी हो गया है कि विकास प्रक्रिया को इस प्रकार सीमित व व्यवस्थित बनाया जाए कि विकास और पर्यावरण के बीच संतुलन कायम रह सके। विकास की प्रक्रिया को इस प्रकार निर्धारित किया जाए कि उससे प्राकृतिक संसाधनों पर विपरीत प्रभाव न हो। इसके लिए यह भी आवश्यक है कि विकास की कोई गतिविधि शुरू करने के पूर्व ही उससे होने वाली पर्यावरणीय क्षति, प्राकृतिक नुकसान का सही-सही आंकलन किया जाए। जहाँ विकास किया जा रहा है वहाँ का प्राकृतिक पर्यावरण कैसे बनाए रखा जाए इस बारे में गंभीरता से विचार होना चाहिए। यदि विकास के साथ-साथ पर्यावरण की भी गंभीरता से चिंता की जाए तो बिगड़ती प्राकृतिक स्थिति पर कुछ रोक लगाना संभव है।

विकास और पर्यावरण के बीच शासन, प्रशासन, निजी स्तर पर पर्यावरण को ही प्राथमिकता दी जानी चाहिए। केवल सेमिनार, संगोष्ठी में 'ग्लोबल

वार्मिंग' पर विशिष्टजनों के बीच चर्चा, चिंतन से माहौल में बदलाव होना मुश्किल है। इसके लिए जनमानस के बीच जागरूकता अभियान को तेजी से चलाए जाने के साथ ही पर्यावरण की दुश्मन बनी कंपनियों पर भी कड़ी कार्यवाही करना जरूरी है। पर्यावरण को विकास के नाम पर सबसे ज्यादा नुकसान पूंजीपति देशों, पूंजीपतियों, उद्योगों, उद्योगपतियों ने ही पहुँचाया है।

अभी स्थिति यह है कि विकास के नाम पर उपजाऊ एवं उपयोगी भूमि को उद्योग, उद्योगपतियों के हवाले किया जा रहा है। इस बारे में पर्यावरण की चिंता करने वालों द्वारा उठाए गए सवाल छोटे-बड़े आंदोलन के आसपास ही सिमटकर रह गए हैं। सघन वृक्षों से भरे आवासीय क्षेत्र भी उजाड़कर व्यावसायिक परिसरों में बदलते जा रहे हैं।

हरियाली पर व्यापारी कैसे भारी पड़ते हैं इसका ताजा उदाहरण मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में देखा जा सकता है। भोपाल में न्यू मार्केट इलाके को ठीक उसी तरह माना जाता है जैसा कि दिल्ली में कनॉट प्लेस है। न्यू मार्केट क्षेत्र के नजदीक स्थित तांत्या टोपे साउथ नगर में एक व्यापारिक कंपनी को ऐसी जगह दे दी गई जहाँ लगभग 200 पुराने मकानों के साथ ही 2000 से ज्यादा पेड़-पौधों को नष्ट करना भी जरूरी हो गया है। इस सौदे को हासिल करने के बाद कंपनी ने सारे मकान जमींदोज करके आसपास से गुजरने वाले रास्ते बंद किए और अब 50 वर्षों से भी पुराने विशाल वृक्षों को काट डालने के पूरे इंतजाम कर लिए हैं। पर्यावरणवादी संस्थाओं के प्रयास भी इसे नहीं रोक पा रहे हैं।

सवाल यह है कि इलाके के दो हजार से ज्यादा पेड़ काट दिए जाएं व आम जनता के आने-जाने के रास्ते बंद हो जाएं तो यह कैसा विकास है? क्या यह विकास वाकई जनहित में है?

सप्रेस

आज का सच

सच को मिलता नहीं इंसाफ़ अदालत में,
उतरते हैं उसके खिलाफ़ सब बगावत में।
जो कुछ नहीं करता है फिर भी देखिए,
आता है उसका नाम ही शिकायत में।।

कल का गुंडा आज बन गया है शरीफ,
आ गया वह नेता बनकर जब सियासत में।
सरेआम कत्ल करके मुजरिम जो बन गया,
छूट गया तत्काल वो अग्रिम जमानत में।।

हरिश्चन्द्र आज भी परेशान इस कदर,
कोई भी आता नहीं उसकी हिफ़ाजत में।
वो गुंडा, लफंगा, बदमाश सब कुछ है,
फिर भी उनकी नजर में रहता शराफ़त में।।

इसकी टोपी उसके सर पर पहनाता है जो,
खुश रहता है वो उसी तरह हजामत में।
करो कितने ही अच्छे काम यहाँ पर दोस्त,
फिर भी हो जाते हैं लोग उसके खिलाफत में।।

की नहीं उन्होंने ज़रा भी मेहनत फिर भी,
मिले हैं अधिकार उन्हें अपनी विरासत में।
जो शख्स करता है मुहब्बत जिससे भी वशिष्ठ,
फिर भी दे उसे दगा यह है उसकी आदत में।।

● **डॉ. बी.एन. पांडेय (स्वतंत्रता सेनानी)**
हरदेव नगर, दिल्ली

रचनात्मक लेखन

सुरेश पंडित

किसी सिद्धांत, विचार या अभिमत को व्यापक रूप से लोगों तक पहुँचाने के लिये जो लेखन किया जाता है, उसे प्रचारात्मक या उपदेशात्मक लेखन कहते हैं। इससे लोग अवगत तो होते हैं लेकिन इसे अधिक प्रभावोत्पादक लेखन नहीं माना जाता। साहित्य में इसे या तो शामिल किया ही नहीं जाता, यदि किया भी जाता है तो उत्कृष्ट कोटि का नहीं माना जाता। यही कारण है कि संस्कृत में 'विदुर नीति' या 'मनुस्मृति' को वह स्थान प्राप्त नहीं है जो 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' अथवा 'उत्तर रामचरितम्' को प्राप्त है। पहले दोनों ग्रन्थ आचार विचारों का प्रचार करते हैं, जबकि दूसरे मनोरंजन के साथ कुछ संदेश भी देते हैं। ये रचनात्मक लेखन के अनुपम उदाहरण हैं। मुझे लगता है अणुव्रत के लिये प्रचारात्मक लेखन तो विपुल मात्रा में हुआ है लेकिन रचनात्मक लेखन की ओर ध्यान लगभग दिया ही नहीं गया है।

अणुव्रत के पास लेखकों की कमी नहीं है। 'अणुव्रत' पाक्षिक उन्हें एक मंच भी प्रदान कर रहा है। लेकिन उनकी उपस्थिति अन्य पत्र-पत्रिकाओं में प्रायः दिखाई नहीं देती। क्योंकि वे जो कुछ लिखते हैं उसमें प्रचार या उपदेश का पुट अधिक रहता है। जिससे उनका रचनात्मक पक्ष सामने नहीं आ पाता। यही वजह है कि मुख्यधारा की साहित्यिक पत्रिकायें उनके लिखे को विशेष महत्त्व नहीं देती। इनमें प्रवेश पाने के लिये यह जरूरी है कि अणुव्रत जिन मानवीय या नैतिक मूल्यों की समाज में पुनः प्रतिष्ठा के लिये प्रयासरत है उन्हें रचनात्मक लेखन के माध्यम से लोगों तक पहुँचाया जाय। जाहिर है ऐसा लेखन मनोरंजन के साथ-साथ अपना विचार भी उसके माध्यम से रखेगा और उस स्थिति में वह लोगों को अधिक ग्राह्य-स्वीकार्य लगेगा। पत्र-पत्रिकायें ऐसी रचनाओं को आग्रहपूर्वक छापेंगी और सामान्य पाठक उन्हें चाव से पढ़ेगा। कोई लेखक यही तो चाहता है कि उसका लिखा अच्छी पत्र-पत्रिकाओं में छपे और अधिक से अधिक लोग उसे पढ़ें। अफसोस है आज हमारे अणुव्रत के लेखक लिख तो बहुत रहे हैं। वह छप भी खूब रहा है। लेकिन कुछ लोगों के अलावा उसे पढ़ा बहुत कम जा रहा है।

आइये इसे कुछ ठोस उदाहरणों के माध्यम से समझने का प्रयास करें। हिन्दी की कथाप्रधान दो पत्रिकायें 'हंस' औश्र 'कथादेश' हैं। दोनों की ग्राहक संख्या दस से पंद्रह हजार के बीच है। लेकिन पाठकों की संख्या निश्चित ही दुगुनी, तिगुनी बल्कि चौगुनी तक है। इतने बड़े पाठक वर्ग को ये जो कहानियां पढ़ने को देती हैं उनमें दो तरह के मूल्य अक्सर प्रतिबिंबित होते हैं 1. समाज में दलितों के प्रति भेदभाव खत्म हो और उन्हें बराबरी का स्थान मिले। 2. स्त्रियों को समाज में 'समान अवसर, समान अधिकार मिले'। ये दोनों मूल्य जिन समुदायों को ऊंचा उठाना चाहते हैं वे तो इन पत्रिकाओं को चाव से पढ़ते ही हैं वे भी पढ़ते हैं जो इनसे सहमत होने में कठिनाई महसूस करते हैं। इस तरह इन पत्रिकाओं और इनमें छपी रचनाओं की प्रशंसा भी खूब होती है तो निन्दा भी कम नहीं होती। इन्हें समाज सुधारक तो कहा ही जाता है, समाज भ्रष्टक भी घोषित किया जाता है। इन दोनों तरह के विचार रखने वालों से अलग हटकर यदि हम इनकी कहानियों को पढ़े तो हम पाते हैं कि वे मनोरंजक तो हैं ही अपनी बात भी अत्यन्त चतुराई के साथ लोगों तक पहुँचा देती हैं। सवाल यह है कि अणुव्रत के लेखक ऐसा क्यों नहीं कर सकते? जबकि उनके पास तो लोगों को देने के लिये ऐसे मूल्य हैं जिन पर असहमति या विवाद की गुंजाइश हो ही नहीं सकती।

अणुव्रत के पास लेखकों की कमी नहीं है। 'अणुव्रत' पाक्षिक उन्हें एक मंच भी प्रदान कर रहा है। लेकिन उनकी उपस्थिति अन्य पत्र-पत्रिकाओं में प्रायः दिखाई नहीं देती। क्योंकि वे जो कुछ लिखते हैं उसमें प्रचार या उपदेश का पुट अधिक रहता है। जिससे उनका रचनात्मक पक्ष सामने नहीं आ पाता। यही वजह है कि मुख्यधारा की साहित्यिक पत्रिकायें उनके लिखे को विशेष महत्त्व नहीं देती। इनमें प्रवेश पाने के लिये यह जरूरी है कि अणुव्रत जिन मानवीय या नैतिक मूल्यों की समाज में पुनः प्रतिष्ठा के लिये प्रयासरत है उन्हें रचनात्मक लेखन के माध्यम से लोगों तक पहुँचाया जाय।

एक और पत्रिका है 'अहा जिन्दगी'। भास्कर प्रकाशन समूह इसे निकालता है। इसकी प्रसार संख्या लाखों में है। यह जीवन के सकारात्मक

पहलुओं को प्रकाश में लाती है। इसलिये इसे प्रचारात्मक पत्रिका कहा जा सकता है। लेकिन इसके लाखों में भी सीधे-सीधे उपदेश का आग्रह कहीं दिखाई नहीं देता। सामग्री इतने आकर्षक ढंग से परोसी जाती है कि पाठक उसका स्वाद चखे बिना नहीं रह पाता। तरह-तरह के चित्रों से सुसज्जित, तरह-तरह की शैलियों व शब्दावलियों वाली इसकी प्रस्तुतियां इस बात की मिसाल देती हैं कि कैसे रूखे-सूखे विचारों को भी सुपाठ्य एवं सुग्राह्य बनाया जा सकता है। लेखन में विज्ञापन की तकनीक का उपयोग इस पत्रिका को एक अलग, विशिष्ट पहचान देता है। इससे अणुव्रत के लेखक यह सीख सकते हैं कि यदि उन्हें प्रचारात्मक लेखन ही करना है तो उन्हें 'अहा जिन्दगी' जैसी तकनीक अविष्कृत करनी होगी जिससे वे अधिक सार्थक तथा प्रासंगिक बने रह सकें।

अणुव्रत जिन मानवीय मूल्यों को समाज में बनाये रखना चाहता है उनमें दया या करुणा भी एक है। इस मूल्य को जड़ से मिटा देने के लिये कॉरपोरेट जगत् किस प्रकार कृत संकल्प है यह जानने के लिये इस कहानी को रेखांकित किया जा सकता है। कार्तिक अपनी विधवा मां का इकलौता बेटा है। अशिक्षित, बेसहारा मां छोटे-मोटे काम कर बेटे को पढ़ाती है। पढ़ने में होशियार कार्तिक धीरे-धीरे एम.बी.ए. कर लेता है। एक बहुराष्ट्रीय कम्पनी से उसे नौकरी के लिए ऑफर आता है। वह सर्दी से बचने के लिये एक सस्ता-सा कोट खरीद लेता है और इंटरव्यू देने चल पड़ता है। ट्रेन से जाते हुए एक स्टेशन पर उसे एक ऐसा भिखारी दिखाई देता है जो अर्धनग्न अवस्था में सर्दी से कांप रहा होता है। कार्तिक यह सोचकर कि उससे अधिक कोट की आवश्यकता उस भिखारी को है और अपना कोट उतारकर उसे दे देता है। अगले दिन जब वह साक्षात्कार देने पहुँचता है तो पाता है कि सब उम्मीदवारों में सबसे सस्ते व सादे कपड़े उसी के हैं। लेकिन उसका शैक्षिक रिकॉर्ड सबसे बढ़िया है। साक्षात्कार में उसका रिकॉर्ड विशेषज्ञों को प्रभावित करता है। किये गये सवालों के जवाब भी वह बढ़िया तरीके से देता है। अन्त में बोर्ड के चेयरमैन उससे पूछते हैं "क्या बात है मिस्टर कार्तिक! आपको सर्दी नहीं लगती?" जवाब में कार्तिक कोट खरीदने और अपने से अधिक जरूरत वाले व्यक्ति को उसे दे देने की बात बताता है। साक्षात्कार खत्म हो जाता है। उसे यह देखकर हार्दिक आघात लगता है कि चयनित लोगों की सूची में उसका नाम नहीं है। असल में होता यह है कि साक्षात्कार में तो उसका चयन हो जाता है लेकिन कोट वाली बात उसे कॉरपोरेट कल्चर के विरोध में खड़ा कर देती है। चेयरमैन कहते हैं जो व्यक्ति लोगों से फायदा उठाने की बजाय उन्हें अपनी चीजें तक दे डालता है वह कम्पनी के लिये उपयोगी नहीं हो सकता। इस तरह उसकी सारी श्रेष्ठता एक ही बात से निरर्थक हो जाती है। दया जैसा गुण अवगुण में बदल जाता है। लेकिन कार्तिक अपनी राह नहीं बदलता और आखिर में अपनी मंजिल पा ही लेता है।

एक और कहानी भ्रष्टाचार को अपना मुद्दा बनाती है। सतीशचन्द्र जैन जिला वन अधिकारी हैं। बड़े सज्जन लेकिन हद दर्जे के ईमानदार। सरकार से जिस बात के लिये पैसा लेते हैं उसे हर हाल में पूरा करते हैं। उनके साथ के अधिकारी और मातहत कर्मचारी मुंह पर उनकी बड़ाई और पीठ पीछे बुराई करते रहते हैं। अपनी ईमानदारी के कारण हर एक दो साल में उनकी बदली होती रहती है। और वे अपनी गृहस्थी के साथ नई-नई जगहों पर जाते रहते हैं। उनके पहुँचने से पहले उनकी ख्याति पहुँचती रहती है और दफ्तर के लोग यह मनाते रहते हैं कि किसी तरह से वे वहाँ नहीं आयें। पर उनका मानना बेकार चला जाता है क्योंकि सतीशजी का तबादला कभी रद्द नहीं होता। अब वे जहाँ पहुँचे हैं वह एक आदिवासी अंचल का छोटा-सा शहर है जो चारों तरफ से सघन जंगल से घिरा है। इस जंगल में अधिकारी कर्मचारियों की शह से अवैध लकड़ियों की कटाई और वन्य पशुओं का शिकार खूब होता है। विभाग में काम करने वाले कुछ ही सालों में मालामाल हो जाते हैं। लेकिन सतीशजी के आने से सब त्रस्त हैं। अवैध धंधा करने वालों का काम चौपट हो गया है और कर्मचारियों की ऊपर की कमाई बन्द हो गई है। पर कोई कुछ कर नहीं पा रहा है। आखिर एक दिन खबर आती है कि लकड़ी से भरा एक ट्रक जंगल से गुजर रहा है। सतीशजी दलबल सहित वहाँ पहुँचते हैं और ट्रक को पकड़कर ले आते हैं। ट्रक में बैठा ठेकेदार पहले छोड़ देने के लिये हाथ पैर जोड़ता है और बाद में बुरे परिणाम की चेतावनी देता है लेकिन सतीशजी पर कोई असर नहीं होता। आखिर ठेकेदार अपनी राज्य सरकार के मंत्री तक पहुँच को इस्तेमाल में लाता है और फैक्स पर सतीशजी के निलंबित होने के आदेश मिलते हैं। सारे कर्मचारी ठेकेदार के साथ मिलकर जश्न मनाते हैं। सतीशजी जब चार्ज देकर घर पहुँचते हैं तो उनकी पत्नी भी उनकी ईमानदारी का मजाक उड़ाती है। पर सतीश जी इन सब बातों के प्रति निरासक्त रहते हैं और आगे के लिये योजना बनाने में जुट जाते हैं।

उपरोक्त दोनों ही कहानियां ऐसी हैं जिनमें नायक अपने मूल्यों के कारण मुसीबत में फंसते हैं लेकिन अपने रास्ते नहीं बदलते। अन्याय से समझौता नहीं करते। सब लोग उनका साथ छोड़ देते हैं। कोई उनके काम की सराहना नहीं करता। फिर भी अपने सिद्धांतों को छोड़ने के लिये वे तैयार नहीं होते। ऐसी प्रेरणादायक कहानियां अणुव्रत के लेखक क्यों नहीं लिखते? क्यों नहीं वे लोगों में यह भाव भरते कि अंत में जीत अच्छाई की ही होती है शर्त यह है कि मुसीबत में भी व्यक्ति अपनी सही राह को न छोड़े।

383, स्कीम नं. 2, लाजपतनगर,
अलवर – 301001 (राजस्थान)

सामाजिक व्यवस्थाओं में सरलीकरण एवं सादगी ही टूटते समाज को बचा पायेगी

स्वस्थ समाज निर्माण के लिए 'नया मोड़' आचार संहिता को पुनः प्रतिष्ठापित करें

आचार संहिता के संभावित प्रमुख बिन्दु

- वैवाहिक एवं सामाजिक अवसरों पर आयोजित भोज में 21 तथा अल्पाहार में 11 से अधिक व्यंजन नहीं हों।
- वैवाहिक समारोह घर-आंगन अथवा सामाजिक स्थलों पर दिन में ही आयोजित हों।
- दहेज की मांग अथवा ठहराव नहीं हो।
- आडम्बर एवं प्रदर्शन पर प्रतिबंध हो।
- समारोह में उत्तेजक-मादक-नशीले पदार्थों का उपयोग वर्जित हो।
- पृथ्वी को बचाने के क्रम में आतिशबाजी पर प्रतिबंध रहे।
- उत्तेजक एवं भौंडे नाच-गानों का आयोजन नहीं हो।
- धार्मिक आयोजनों में भी सादगी बरती जाए।

"नया मोड़ का अर्थ है जीवन दिशा का परिवर्तन। आडम्बर और कुरुढ़ियों के चक्रव्यूह को भेदकर संयम और सादगी की ओर अग्रसर होना। विषमता और शोषण के पंजे से समाज को मुक्त करना। *आचार्य तुलसी*

समाज की जर्जर व्यवस्थाओं को बदलकर ही स्वस्थ व्यक्ति और समाज का निर्माण संभव है। वैवाहिक अवसरों पर आडम्बर एवं फिजूलखर्ची नहीं हो। आचार्य महाप्रज्ञ"

अर्थ की चमक घटे, मनुष्य का मूल्य बढ़े

आवाज उठाओ, प्रदर्शन-आडम्बर मिटाओ

7 वां दशक अणुव्रत आंदोलन

नैतिकता से दूर होती शिक्षा

कृष्ण कुमार वर्मा

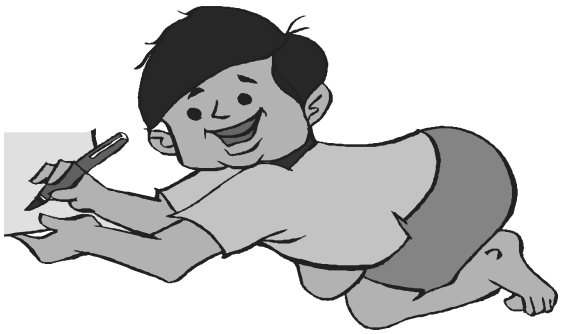

शिक्षा का अर्थ है व्यवहार में परिवर्तन लाना। किन्तु आज की शिक्षा शिक्षण तथा शिक्षार्थी शिक्षा के मूल भावार्थ को भूलते जा रहे हैं। शिक्षण में वे लोग जाने लगे हैं, जिन्हें रोजगार की तालाश है। आज कल पेशेवर शिक्षक हैं घर जाकर अपनी कला को बेचते हैं। शिक्षक समर्पित नहीं रहा। दूसरी तरफ शिक्षार्थी तथा अभिभावक दोनों ही दिन रात इसलिए लगे रहते हैं कि मेरा बेटा/बेटी कक्षा में प्रथम आए। उसकी कथनी तथा करनी में अंतर होता है। पहले लोग स्कूल, शिक्षा बांटने के लिए खोलते थे, किन्तु आज शिक्षा इबादत न होकर एक धन्धा हो गयी है

पहले शिक्षा बांटते थे किन्तु
आज कमाई का जरिया बन गई।।

बात महारभारत काल की है एक बार गुरु द्रोणाचार्य ने अपने शिष्यों को एक पाठ याद करने को दिया। पाठ था सदा सत्य बोलो। दूसरे दिन जब गुरुजी ने पाठ सुनाने को कहा तो सभी ने बारी-बारी से सुना दिया किन्तु जब युधिष्ठिर की बारी आई तो वे मौन रहे इस पर सभी ने उनकी हंसी उड़ाई। गुरु जी के पूछने पर उन्होंने विनम्रता से जवाब दिया कि जिस दिन मैं इसे अपने जीवन में उतार लूंगा मैं समझूंगा कि मुझे यह पाठ याद हो गया।

आज का विद्यार्थी अच्छे अंकों के लिए सभी कुछ भी करने को तैयार रहता है। कारण, आने वाली प्रतियोगिता में भाग लेना। एक अंधी दौड़ की तरह हम सब दौड़े चले जा रहे हैं।

गत वर्ष मार्च की परीक्षा के बाद जब कक्षा दसवीं का परीक्षा परिणाम आया, तो मैं एक परिवार में उनकी बेटी के पास होने की बधाई देने उनके घर चला गया। देखा कि घर में मातम-सा छाया है, कोई सीधी तरह से बात करने को तैयार ही नहीं। बड़ी मुश्किल से लड़की की मां ने बताया कि इसने तो हमारी नाक कटवा दी, मात्र 96 प्रतिशत अंक प्राप्त किए। इसके विपरीत एक और परिवार था जिसमें 40 प्रतिशत अंक आने पर खुशियां मनाई जा रही थीं।

आज की शिक्षा नैतिकता को खोती जा रही है। हमने पढ़ा तो है किन्तु उसे जीवन में नहीं उतारा। एक और घटना महाभारत काल से ही है। जब अर्जुन इन्द्रलोक से दिव्यास्त्र लेकर लौटे तब नकुल ने कहा कि भइया दिव्यास्त्र कैसे होते हैं? हमें भी तो दिखाइए। अर्जुन ने मंत्रोच्चारण से दिव्यास्त्र मंगा लिया सभी देखकर प्रसन्न हुए। सहदेव बोले कि इनको जरा-सा चलाकर तो दिखाइए। अर्जुन ने तुरंत ही उसका संधान किया। तभी आकाशवाणी (आत्मा की आवाज) हुई। कि हे अर्जुन! यह दिव्यास्त्र है। यह कोई क्रीड़ा की वस्तु नहीं है, इसके चलने से प्रलय आ जायेगी। यह सुनकर उन्होंने शक्ति वापस कर दी।

आज का युवक भी अर्जुन की ही भांति पढ़ाई रूपी तपस्या करता है। वह दिव्यास्त्र की जगह आ उपाधियां प्राप्त करता है, वैज्ञानिक बनता है और फिर उनका प्रयोग समाज-कल्याण में कम समाज-विनाश में ज्यादा करता है। जरा सोचो चालीस-पचास लाख रिश्वत देकर बनने वाला डॉक्टर क्या इलाज़ करेगा?

सही मायने में हम और हमारा शिक्षा तंत्र दिशाहीन होता जा रहा है। अभी कुछ अधिक नहीं बिगड़ा है। अभी भी वक्त है

सुधर मनुज रे नहीं तो पछताएगा।
ईश्वर इस दुनियां का दोषी तुझको ही ठहराएगा।।

नैतिकता तो सिर्फ एक शब्द बनकर रह गया है, आज किसी भी तरह का दण्ड नहीं दिया जा सकता, किन्तु कुछ तो करना ही होगा। जिस तरह बिना कपड़ा काटे उसकी कमीज नहीं बन सकती, बिना ईंट को तोड़े मकान नहीं बन सकता, बिना लकड़ी को काटे उपयोगी फर्नीचर नहीं बन सकता, पार्कों में सुशोभित तरह-तरह के पेड़-झाड़ी इत्यादि को काटे-छांटे बिना सुंदर आकार नहीं दिया जा सकता। धरती को जोते बिना उसमें फसल नहीं उगाई जा सकती। बिना चीरा लगाए ऑप्रेशन नहीं किया जा सकता। बिना त्वचा भेदे इंजेक्शन नहीं लगाया जा सकता। कहने का अर्थ है कि वस्तु के मूल में परिवर्तन किए बिना उसे उपयोगी नहीं बनाया जा सकता। इस तरह शिक्षा में भी हल्का-फुल्का तो चाहिए।

एल–97, सेक्टर–12, प्रताप विहार
गाजियाबाद (उ.प्र.) 201009

सघन अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र – टमकोर

पर्यवेक्षक : रमेश कुमार जीनगर

अहिंसा प्रशिक्षण अभियान के अंतर्गत देश में अनेक प्रशिक्षण केन्द्र खुले हैं। उनमें से टमकोर का अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र एक 'सघन प्रशिक्षण केन्द्र' है। आचार्य महाप्रज्ञ की जन्मभूमि होने के कारण तो इस गांव का महत्त्व है ही पर समणी प्रतिभाप्रज्ञाजी भी अपनी जन्म भूमि पर अलख जगाकर पिछले चार वर्षों से इस अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र को अपना मार्गदर्शन प्रदान कर रही हैं। टमकोर को केन्द्र मानकर झुन्झुनू जिले के अलसीसर पंचायत समिति के गांवों में 52 प्रशिक्षक द्वारा प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान, अहिंसा, नशामुक्ति एवं प्रेक्षाध्यान का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। साथ ही 80 रोजगार केन्द्रों पर रोजगार एवं अहिंसा प्रशिक्षण का कार्य शुरू हुआ है। इन केन्द्रों पर 213 विद्यालयों में 22639 विद्यार्थियों को प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान का प्रशिक्षण दिया ही जाता है। पर अहिंसा के प्रयोग भी करवाये जाते हैं। इस क्षेत्र में काफी विद्यालय पूर्ण रूप से नशामुक्त हो गए हैं। सामान्य ग्रामीणों में भी नशामुक्त लोगों की अभिवृद्धि हुई हैं। गांव में परस्पर भाईचारे का भाव विकसित हुआ है।

झुन्झुनू जिले का यह क्षेत्र पूर्ण रूप से रेगिस्तान है। यहाँ पूरे क्षेत्र में पीने के पानी की भी समस्या है। यद्यपि कुछ क्षेत्रों में सरकार द्वारा पीने के लिए नहर का पानी उपलब्ध करवाया जा रहा है, पर यहाँ के लोगों का पूरा जीवन वर्षा पर ही निर्भर है। जिस वर्ष वर्षा अच्छी हो जाती है, उस वर्ष लोगों में खुशहाली रहती है। जिस वर्ष वर्षा का अभाव रहता है उस वर्ष लोगों को काफी कष्ट झेलने पड़ते हैं। इसलिए इस क्षेत्र के बहुत सारे लोग धंधे की खोज में देश के अन्य प्रदेशों में चले गये हैं। कुछ लोग खाड़ी प्रदेश में भी कार्यरत हैं, फिर भी इस इलाके में बेरोजगारी एक जटिल समस्या है। अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्रों द्वारा रोजगार प्रशिक्षण की जो व्यवस्था हो रही है। उससे इस क्षेत्र में कुछ नई आशाओं का संचार हुआ है।

प्रस्तुत है एक झलक :

स्वरोजगार प्रशिक्षण केन्द्र - हमीर खां बास में प्रशिक्षिका का काम करने वाली महिला रूकसाना बानो का कहना है अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र खुलने के बाद ऐसा लगता है कि अल्लाह हमारे घर पर उतर आये हैं। घर का वातावरण बदल गया है। अणुव्रत गीत व महाप्राण ध्वनि का प्रयोग करने से मुझे बहुत फायदा हुआ है। ''खोहरी'' सिलाई प्रशिक्षिका श्रीमती विमला देवी ने कहा कि आचार्य श्री महाप्रज्ञ की कृपा से हमारे घर में बहुत बड़ा फायदा हुआ है। घर में सुख-समृद्धि आई है। परिवार में शांति, खुशहाली, प्रसन्नता आई है।

सिलाई प्रशिक्षिका ''गुगन की ढ़ाणी'' श्रीमती चन्द्रकला देवी ने कहा कि महाप्राण ध्वनि का प्रयोग करने से मेरा क्रोध शांत हुआ है, मानसिक शांति हुई है। राहड़ों का बास सिलाई प्रशिक्षिका श्रीमती रजनी शर्मा की सास ने कहा कि अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र खुलने के बाद घर का काया-कल्प हो गया है। आचार्य श्री महाप्रज्ञ का आशीर्वाद हमारे घर-परिवार के ऊपर बरस रहा है। घर में शांति हो गई। आनन्द ही आनन्द हो गया है। अणुव्रत गीत व महाप्राण ध्वनि का प्रयोग करने से मेरी स्मृति का विकास हुआ है एवं मेरी सहनशक्ति बढ़ी है और आत्मविश्वास मजबूत हुआ है।

''नया बास'' में सिलाई प्रशिक्षिका सुमित्रा देवी मेघवाल ने बताया कि अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र खुलने के बाद उसकी आय से हमारा नया मकान बन गया है और हमारा पूरा परिवार शांतिमय जीवन व्यतीत कर रहा है।

'कंकडेऊ कला' में सिलाई प्रशिक्षिका नर्मदादेवी ने कहा कि यहाँ से प्रशिक्षण प्राप्त कर बहिनें 4000 रु. मासिक आमदनी कर रही हैं, जिसके घर में अब सुख-शांति का वातावरण बना है।

''दुधवाखारा'' में सिलाई प्रशिक्षिका रेणु बाला ने कहा कि महाप्राण ध्वनि व अणुव्रत गीत से हमें बहुत फायदा हुआ है, स्मृति का विकास हुआ, आत्मविश्वास मजबूत हुआ, श्वास लम्बा हुआ तथा शरीर में स्फूर्ति बढ़ी है। यहाँ से प्रशिक्षण लेकर बहिनें अच्छी आमदनी प्राप्त कर रही हैं।

रा.उ.प्रा.वि. हमीरवास के शिक्षक कमल कुमार जांगिड़ ने कहा कि अहिंसा प्रशिक्षण का कार्य शुरू होने के बाद बच्चों की चंचलता कम हुई है। एकाग्रता, मानसिक शांति और अनुशासन का विकास हुआ है।

सघन अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र - टमकोर क्षेत्र के रोजगार केन्द्रों की प्रदर्शनी आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में तीन दिवसीय लाडनूं में 1, 2 व 3 नवंबर 2009 को लगाई गयी। जिसमें संभागी बहिनों ने स्वरोजगार प्रशिक्षण की बात बताई। हमारे घर की आर्थिक स्वावलंबन में हम सहयोगी बनी हैं। इससे हमारे परिवार में शांति का वातावरण बना। अहिंसा प्रशिक्षण के प्रयोग से परिवार का वातावरण अच्छा बन रहा है। स्वरोजगार प्रशिक्षण लेने के बाद बहिनें अपना स्वयं का कार्य तो करती ही हैं साथ ही मासिक आमदनी भी प्राप्त होने लगी है।

टमकोर में आचार्य श्री महाप्रज्ञ औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र में 64 छात्र तथा आचार्य महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल में अंग्रेजी माध्यम से 350 छात्र नियमित पढ़ाई के साथ-साथ अहिंसा और जीवन विज्ञान के प्रयोग भी नियमित करते हैं। इस क्षेत्र के लिए यह एक नया कल्याणकारी प्रयोग है।

सकारात्मक चिंतन

सीताराम गुप्ता

हमारी सोच, हमारे विचारों तथा संकल्पों का केवल हम पर ही नहीं अपितु दूसरों पर भी प्रभाव पड़ता है। अनेक ऐसी घटनाएँ हैं जो हमारे संकल्प के अनुसार पूर्ण होकर हमें आनंदित करती हैं अथवा लाभ पहुँचाती हैं लेकिन कई बार हमारी ख़ुशी अथवा हमारा लाभ किसी न किसी की पीड़ा या हानि का कारण बन जाता है। लेकिन सदा ही ऐसा होता हो ये बात भी नहीं है। यदि हम अपने लाभ के लिए कोई संकल्प लेते हैं अथवा प्रार्थना करते हैं जिसका हमारी इच्छानुसार फल मिलता है तो क्या कोई ऐसी व्यवस्था नहीं है जो इस बात को देखे कि इससे दूसरों का अहित न हो।

वास्तव में ऐसा कभी नहीं हो सकता कि हमारे संकल्पों द्वारा हमारी मनोकामनाओं की पूर्ति अथवा प्रार्थना के परिणामस्वरूप इच्छापूर्ति में दूसरे किसी का नुक़सान हो क्योंकि यदि हम किसी के अनिष्ट के लिए कोई संकल्प लेते हैं या प्रार्थना करते हैं तो वह प्रार्थना हम पर ही लौटकर प्रतिफलित होती है। अशुभ संकल्प अथवा नकारात्मक प्रार्थना से हमारा ही अहित होता है क्योंकि जैसे बीज हम बोते हैं वैसी ही फसल काटते हैं। लेकिन जब हम सात्त्विक इच्छाओं की पूर्ति के लिए प्रार्थना करते हैं अथवा संकल्प लेते हैं तो उनकी पूर्ति में दूसरों का अहित कैसे हो सकता है? जब जानवरों की मौत होती है तो गिद्धों को भोजन प्राप्त होता है लेकिन क्या गिद्धों के भोजन प्राप्ति के संकल्प के कारण पशुओं की मौत होती है? नहीं। मौत चाहे वो किसी भी कारण से हो एक स्वाभाविक घटना है। यहाँ गिद्धों की भूमिका तो अत्यंत उपयोगी और सकारात्मक है क्योंकि मृत पशुओं को खाकर वे पर्यावरण को स्वच्छ रखने में ही मदद करते हैं।

यदि कोई व्यक्ति डॉक्टर बनकर रोगियों की सेवा करने की इच्छा रखता है तो क्या उसके डॉक्टर बनने से ही उसके संकल्प की पूर्ति हेतु स्वस्थ व्यक्ति रोगग्रस्त होकर उसके पास आएँगे? क्या उनके रोगग्रस्त होने के मूल में एक डॉक्टर है? क्या उनका रोग उनकी अपनी ग़लत इच्छाओं अथवा अशुभ संकल्पों या नकारात्मक भावों का परिणाम नहीं है? ये तो हुई एक व्यक्ति की बात। अब यदि सरकार या कोई व्यक्ति कोई मेडिकल कॉलेज खोलता है या नया अस्पताल बनवाता है तो क्या इन उपक्रमों के कारण ही असंख्य लोग बीमार होकर इन अस्पतालों में भर्ती होने के लिए आएँगे? अनेक प्राकृतिक आपदाओं के लिए आपदा प्रबंधन की व्यवस्था की जा रही है तो क्या इसके कारण ही विपत्तियाँ अवतरित होंगी? शायद नहीं।

एक प्रश्न तीव्रता से मन में उठता है कि क्या हमारी अच्छी सोच और संकल्प जिसके मूल में हमारा कुछ व्यक्तिगत स्वार्थ भी निहित हो जैसे जीविकोपार्जन या अच्छे कार्य द्वारा थोड़ी प्रशंसा की चाह किसी भी प्रकार से किसी भी व्यक्ति के लिए दुख का कारण हो सकती है? किसी भी व्यक्ति के दुख और पीड़ा का कारण तो वह स्वयं है। उसकी वर्तमान स्थिति पूर्णतः उसकी सोच का परिणाम है।

जो भी हो आपदा-प्रबंधन आपदाओं को बुलाना नहीं अपितु उनके दुष्प्रभाव को कम करना है। व्यक्तिगत या सामूहिक पीड़ा या आपदा का मूल तो व्यक्तिगत तथा सामूहिक नकारात्मक चेतना का घनीभूत होना है। हमारी सामूहिक सात्त्विक इच्छाओं के कारण ही समाज में मेलजोल तथा भाईचारे की भावना का उदय होता है। इसी से जनमानस की पीड़ा का उपचार होता है। ऐसे में किसी की मदद करने का किसी का जज़्बा कैसे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से किसी की पीड़ा का कारण हो सकता है?

वस्तुतः हम अपनी स्वयं की पीड़ा या प्रसन्नता का ही नहीं अपितु सामूहिक पीड़ा या प्रसन्नता का संसार भी स्वयं अपने मनोभावों द्वारा निर्मित करते हैं। सकारात्मक भावों द्वारा सुख की सृष्टि तथा नकारात्मक भावों द्वारा दुःख की सृष्टि हमारा अपना ही चुनाव है। सकारात्मक चुनाव को स्थायित्व प्रदान कर हम न केवल स्वयं आनंद की प्राप्ति करने में सक्षम हो सकते हैं बल्कि सबके लिए आनंद का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

ए.डी.–106–सी, पीतमपुरा,
दिल्ली–110034

अपनी सही समझ के सिवाय क्रोध की और कोई दूसरी दवा नहीं होती।

● आचार्य तुलसी ●

संप्रसारक :

एम.जी. सरावगी फाउंडेशन

41/1-सी, झावूतल्ला रोड, बालीगंज-कोलकाता-700019

● दूरभाष : 22809695

कविता और भेड़चाल

जसविंदर शर्मा

अखबार की ताजा खबर है कि अमेरिका की सुप्रीम कोर्ट के एक जज ऊंचे दर्जे के कवि हैं, जो गलती से न्यायपालिका के बदनाम पेशे में फंस गए हैं। ये जज साहब अपने सभी फैसले कविता के रूप में सुनाते हैं। जिस दिन वह किसी मामले का फैसला सुनाते हैं उस दिन लगता है कि अदालत में कोई लम्बी कविता पढ़ी जा रही हो।

इन जज महोदय का मानना है कि इस तरह सुनाए गए उनके फैसले से अब तक किसी अभियुक्त के दिल को ठेस नहीं पहुँची है। फैसला चाहे उनके खिलाफ ही क्यों न हो, फरियादी इन जज साहब की कविताओं पर बेसाख्ता बोल उठते हैं, 'वाह खूब', 'शाबाश बहुत अच्छे', 'वन्स मोर' आदि।

जज साहब के इस कविता प्रेम से प्रभावित होकर एक कवि-हृदय वकील ने अपनी याचिका को काव्यमय रूप देकर जज साहब के सामने प्रस्तुत कर दिया, ताकि जज साहब की इस कमजोरी का फायदा उठाया जा सके। जज को खुश करने के लिए वकील कविता तो क्या, पूरा महाकाव्य रच सकते हैं।

अखबार में एक अन्य खबर छपी है.. .. बंदरों के बीच कविता पाठ। अब आम आदमी तो कविता से दूर भागने लगा है क्योंकि वह पैसा कमाने के चक्कर में बेहाल हो जाता है। शेक्सपीयर के देश ब्रिटेन में एक अनूठा प्रयोग किया गया। सुरक्षित जंगलों में बैठकर इलायची, मिश्री, चिली चिकन व सोमरस के साथ बारी-बारी कुछ मूर्धन्य कवि बंदरों के सम्मुख प्रस्तुत हुए। बंदर बड़े-बड़े पिंजरों में कैद थे वर्ना उन कवियों का नाम इतिहास से गायब हो जाता। बंदरों को खिलाया-पिलाया गया और फिर बारी-बारी कवि बंदरों के पास बैठकर कविताएं सुनाने लगे।

इस तरह बंदारों को यातना देने वाली साठ-सत्तर कविताएं इत्मीनान से पढ़ी गयी। वैसे तो बंदर हमारे पूर्वज हैं और अपने पितरों के सामने दिल की भावनाएं व्यक्त करने में कोई दिक्कत तो नहीं होनी चाहिए थी, मगर क्या करें? तब के बंदर हो सकता है कि संस्कृत या लेटिन समझ लेते थे मगर ईसा बाद के बंदर तो अदरक का स्वाद भी भूल चुके हैं।

बंदरों पर कविता-पाठ का प्रभाव देखा गया। इस अनूठे प्रयोग से यह भी साबित हो गया कि शोधकर्ता बहुत सनकी होते हैं। वे तो इस बात पर भी पी.एच.डी. करते पाए गए कि मानव शोध क्यों करता है। बंदरों पर कविता के प्रभाव पर शोधकर्ताओं ने गजब की रिपोर्ट पेश कर दी। शोधकर्ता सहमत थे कि नब्बे प्रतिशत बंदर संवेदनशील और कवि-हृदय होते हैं। सिर्फ दस प्रतिशत बंदर कविता के रसिक नहीं होते।

यह देखा गया कि जो बंदर कविता को पसंद नहीं करते, वे राजनैतिक दलों के नेता थे और वे अपनी उच्च-कमान से हर बात पर असंतुष्ट रहते थे। वैसे शोध का विषय तो यह भी है कि हमारे ऊपरी सदन यानि राज्यसभा में शायरी का इतना अच्छा माहौल क्यों है? हो सकता है कि वहाँ काम का बोझ न हो। लोकसभा में कुर्सी के लिए खींचतान होने के कारण अभी तक कविता के प्रति नेता लोगों का रुझान विकसित नहीं हो पाया। हमारी राज्यसभा में बहुत गंभीर किस्म की शायरी की जाती है, मगर लोकसभा में कोई भूले-भटके एकाध छंद बोल देता है तो उसे विपक्ष हूट कर देता है।

अब तक हिन्दी कविता के आलोचक बहुत बिसूरते रहते थे तथा हर लेख में दुःख प्रकट करते रहते थे कि कविता मर रही है, आम आदमी से दूर होती जा रही है, कविता के पाठक कम होते जा रहे हैं व कविता के अस्तित्व को खतरा है। इन नामुराद आलोचकों से कोई कहे कि कविता कोई बकरी का बच्चा है जो दौड़े और पकड़ लिया उसे। कितने पापड़ बेलने पड़ते हैं तब जाकर कविता की एक किताब तैयार होती है। मीर कहते हैं, 'मुझको शायर न कहो 'मीर' कि साहब मैंने, दर्द-ओ-गम कितने किए जमा तो दीवाना किया।'

कविता के जालिम आलोचकों! तुम भी कुछ परिश्रम करके दिखाओ। बस कुछ शब्दों की जादूगिरी दिखाकर महान आलोचक बन जाना कोई मुश्किल काम नहीं है। जरा कवियों के मुकाबले में आओ तो जानें। अपनी घिसी-पिटी आलोचना अगर कविता के रूप में लिखकर दिखा सको तो उस्ताद मान लें तुम्हें। कविता पर गिटर-बिटर करना बहुत आसान है मगर अच्छी कविता लिखने में तगड़े खड़पैंच व अच्छे-अच्छे पीएचडी वालों तक को सर्दियों में ठंडे पसीने आ जाते हैं।

हमारी साहित्य सभा के उप-प्रधान मुंशी टेकचंद इस मामले में बहुत ही खुशकिस्मत हैं। हर रोज कुछ न कुछ लिख लाते हैं और फिर श्रोताओं की तलाश में पूरा दिन खोटा करते हैं। हर कोई उनके पास बैठने से डरता है, क्या पता कब तक भेजा चाटते रहें। मगर उन्होंने भी धूप में बाल सफेद नहीं किए। चाय-समोसा, पान-बीड़ी व सोमरस पिलाने का लालच देकर पांच-सात चेले-चमचे अपने साथ हर वक्त लिए घूमते हैं और कविता सुनाने का शौक पूरा कर ही लेते हैं।

कविता को लेकर इधर साहित्यिक और अकादमिक क्षेत्र में एक और जबर्दस्त भ्रम था। लोग-बाग सोचते हैं कि कविता लिखना बहुत आसान काम है। गीत-कविता करना निठल्ले लोगों का फालतू का शगल है। बैठो, जख्म कुरेदो, जाम पीयो और बस हो गई कविता। इतिहास गवाह है कि जिन कविताओं को

लिखना आसान होता है उन्हें पढ़ना बहुत कठिन होता है। कविता लिखना बहुत ही दुष्कर कार्य है मगर लोगों की मूर्खता देखो, वे समझते हैं कि यह महान काम बाएं हाथ का खेल है।

ऐसी ही एक साहसपूर्ण कवायद लंदन की एक कवयित्री ने कर दिखाई है। एक कम्पनी ने पांच लाख पाउंड इस अनूठी परियोजना के लिए प्रायोजित किए हैं। परियोजना का नाम है भेड़ और कविता। सत्तर-अस्सी जनवादी किस्म की भेडों के आजू-बाजू, दाएं-बाएं, ऊपर-नीचे कुछ प्रभावशाली, संवेदनशील व काव्यमय शब्द पेंट कर दिए गए। इन प्रेरणादायक भेडों को एक बड़े-से खुले बाड़े में स्वतंत्र घूमने-फिरने के लिए छोड़ दिया गया। कवयित्री महोदया कागज-कलम संभाल कर बैठ गयी।

भेडें भागती-टहलती जब किसी एक कतार में हुई तो कवयित्री ने उनके सिर-धड़ पर पेंट किए गए शब्दों को नोट कर लिया और लो जी देखते ही देखते एक कालजयी उत्तर-आधुनिक कविता बन गई। अगर यह परियोजना सफल रहा तो आलोचकों के गिले-शिकवे तो दूर होंगे ही शायद उसके बाद आलोचकों की जरूरत ही न रहे।

ऐसी कालजयी, शाश्वत व अलौकिक कविता लिखने में कितनी मेहनत और संयम की जरूरत पड़ती है और लोग-बाग सोचते हैं कि कविता करना चुटकियों का खेल है। भेडों के ऊपर पेंट किए गए शब्दों से प्रेरित होकर लिखी गयी ऐसी नायाब कविताओं के चंद टुकड़े पेश हैं

शादी तुम्हारी
नाचते रहे हम
नहीं है गम?

•

अधर प्यासे
महासागर तुम्हें
कह दूं कैसे?

5/2–डी, रेल विहार, मंसादेवी, पंचकुला–134109 (हरियाणा)

सूर्योदय के बावजूद

क्या उम्मीद रखें
अमावस के दलालों से
जो इच्छा करते हैं
जागने से पूर्व सोने की,
उठने से पूर्व बैठने की,
आरम्भ से पूर्व समाप्ति की,
जो चाहते हैं
ऐशो आराम
बिना मेहनत किए,
मंजिल
बिना चले;
किसी को
चाहे पानी भी न मिले
लेकिन
इन्हें चाहिए
शराब और
न जाने क्या-क्या?
वासना-विलास में
आकण्ठ डूबे रहना
इनका लक्ष्य है,
भेड़-बकरी, मच्छी-मुर्गे
इनका भक्ष्य है!

ये लोग होते हैं
विलासिता और जड़ता की
अंधेरी कोठरियां,
जहाँ
सूर्योदय के बावजूद
प्रकाश की एक किरण भी
नहीं पहुँचती;
प्रकाश के लिए
ये लोग करते-करवाते
काले कोयलों का गोरख-धंधा
और जलाते-जलवाते
शोषण की अंगीठियां,
जो प्रकाश तो नहीं देती
मगर
ताप और विषैला धुआं
उगलती है;
उस घुटन में
ऐसे लोगों का जीवन
उदय से पूर्व
अस्त हो जाता है,
आरम्भ से पूर्व
समाप्त हो जाता है।

● **डॉ. दिलीप धींग**
उमराव सदन, 53, डोरे नगर, उदयपुर – 313002 (राजस्थान)

गणतंत्र की गरिमा

सुषमा जैन

गणतंत्र दिवस के शुभ अवसर पर राष्ट्रीय राजधानी से लेकर सभी प्रादेशिक मुख्यालयों पर जनप्रतिनिधियों द्वारा राष्ट्र-स्वाभिमान के प्रतीक राष्ट्रीय ध्वज को फहराकर प्रभु से एक ही कामना की गई होगी कि हमेशा उन्हें ही ध्वज फहराने का गौरव हासिल होता रहे। अपने लम्बे चौड़े भाषणों में सामाजिक, आर्थिक और तकनीकी प्रगति की चकाचौंध कर देने वाली तस्वीर दिखाकर स्तब्ध कर देने वाले गुनाहों पर पर्दा डालने में वे कितने सफल हुए, यह तथ्य जनता बखूबी समझती है। जिस आजाद, संप्रभु और लोकतांत्रिक गणराज्य में 61 वर्ष बीत जाने के बाद भी आम आदमी को उसका अधिकार और सम्मान दिलाना तो दूर, उसे कर्ज, बेरोजगारी और महंगाई का जहर पिलाकर जीवन से ही बेदखल किया जा रहा हो, जिस गणतंत्र में 5 लाख कश्मीरी हिन्दू अपने ही देश में शरणार्थी बनकर दूर-दूर भटक रहे हों, जिस लोकतांत्रिक संवैधानिक व्यवस्था में बच्चों सहित 8 से 20 करोड़ लोग रात को भूखे और बिना छत के सोते हो, 40 प्रतिशत से अधिक लोग 15 से 20 रु. प्रतिदिन पर गुजारा करने को विवश हों, जहाँ जातिवाद, भाषवाद, आतंकवाद, नक्सलवाद, अल्पसंख्यकवाद, बहुसंख्यकवाद, परिवारवाद राष्ट्र की जड़ों में घुन की तरह देश की अखंडता और संप्रभुता को लगातार चुनौती दे रहे हों, और जहाँ क्षेत्रीय संकीर्णता में जकड़ी हिंसक और अराजक राजनीतिक शक्तियों के आगे घुटने टेककर उनका मौन समर्थन किया जा रहा हो, वहाँ संविधान निर्माताओं द्वारा सबल और स्वतंत्र बनाने का सपना कितना साकार हुआ, दूर-दूर तक भी इसके पक्ष में कोई प्रमाण नहीं मिलते।

गणतंत्र दिवस पर श्रीनगर के ऐतिहासिक लाल चौक पर राष्ट्रीय ध्वज न फहराकर क्या अलगाववादियों और आतंकी संगठनों के हौसले बुलंद नहीं किये गये? आखिर क्यों हमारे देश के 14 प्रांत नक्सलवाद के खौफनाक साये में हैं? क्यों पाकिस्तान और चीन लगातार हमारी सीमाओं का अतिक्रमण करने का दुस्साहस दिखा रहे हैं? क्यों करोड़ों बांग्लादेशी हमारे नेताओं के सिरमौर बने हुए हैं? क्यों हमारे महत्त्वपूर्ण सामरिक ठिकानों पर चीन की साइबर घुसपैठ जारी है? और क्यों हमारे भारतीय नागरिक विदेशों में जिल्लत भरी जिन्दगी जीने को विवश हैं? ऐसा सिर्फ इसलिए है कि देश की बागडोर संभालने वाले नेताओं ने राष्ट्र हित के अनुरूप कार्य करना बंद कर दिया है, उन्हें यदि कुछ दिखाई दे रहा है तो वह है कुर्सी और अपना वोट बैंक। यही कारण है कि 61 वर्ष पूर्व जिस भारत में खुशहाली, समानता और बंधुत्व की कल्पना की गई थी, आज वहाँ चप्पे-चप्पे पर साम्प्रदायिकता, प्रांतीयता और राजनीतिक विखंडन ही नजर आता है। सत्ताधीश निष्क्रिय तथा विपक्ष लाचार (मौन) है।

महाराष्ट्र में लगातार तीसरी और केन्द्र में दूसरी बार कांग्रेस सरकार है। यदि बार-बार मुंबई को हिला देने की धमकी देने वाले एवं उत्तर भारतीयों पर आतंक की तलवार लटकाकर उन पर जुल्म ढाने वाले बेरहम मनसे और शिवसेना की गुंडागर्दी को सख्ती से कुचल दिया गया होता तो आज वहाँ ऐसी अराजकता की नौबत न आती और न ही वहाँ गैर-मराठी रेहड़ी चलाने वाले से लेकर व्यवसायी और फिल्मकार तक उनके निशाने पर होते। कांग्रेस नेतृत्व वाली महाराष्ट्र सरकार ने तो टैक्सी ड्राइवरों पर मनसे का ही एजेंडा थोपने की कौशिश कर दी थी। आखिर अब जब बाल ठाकरे ने राहुल गांधी और सोनिया गांधी पर निशाना साधा, तब महाराष्ट्र सरकार कैसे हरकत में आई कि शिव सैनिक राहुल गांधी की परछाई को भी नहीं छू सके, यदि इसी प्रकार की सक्रियता तब दिखाई गई होती, जब उत्तर भारतीयों को पीट-पीट कर भगाया जा रहा था, तो राष्ट्र-विग्रह विखंडन का क्रम जारी न रह पाता। कांग्रेस के ढुलमुल रवैये के कारण जिस प्रकार मनसे व शिवसेना अपनी आकांक्षाओं को पूर्ण करने के लिए राष्ट्रीयता को खुलेआम चुनौती देने में सफल हो रहे हैं, उसके मद्देनजर यदि ये एक दिन महाराष्ट्र राज्य को स्वतंत्र राष्ट्र बनाने की मांग कर बैठे तो कोई आश्चर्य नहीं होगा। क्योंकि आज प्रत्येक वह व्यक्ति इनका दुश्मन है जो मुंबई को सम्पूर्ण राष्ट्रवासियों को बता रहा है। और वोट बैंक की राजनीति इस अमर्यादित आचरण पर प्रहार करने में कभी सफल नहीं हो पायेगी।

भारत की 28 राज्यों, 7 केन्द्र शासित प्रदेशों, 1818 बोलियों, 8 जातीय समूहों, 21 प्रमुख त्योहारों तथा असंख्य मेलों वाली विविधता में एकता की मूल सांस्कृतिक जीवनधारा वोट बैंक की राजनीति पर भेंट चढ़ रही है। समृद्ध सांस्कृतिक निष्ठा की सर्वव्याप्तता तार-तार होकर धराशायी हो रही है। राजनीतिक दल परस्पर मतभेदों को लोकसभा और विधानसभाओं में एक-दूसरे का सिर मोड़ सुलझा रहे हैं। एक प्रधानमंत्री रह चुका व्यक्ति अपने ही राज्य के मुख्यमंत्री को गालियां बककर लोकतंत्र को चौराहे पर अपमानित कर

देता है। जो राजनीतिक दल कभी लोकतंत्र का हवाला दे कर एक-दूसरे को पानी पी-पीकर कोसते थे, आज वे न केवल परस्पर गलबहियां डाले घूम रहे हैं बल्कि उनकी सरकार में मंत्री भी बने बैठे हैं।

नेता, नौकरशाह तथा व्यापारियों के गठजोड़ से निर्दोष मुठभेड़ में मारे जा रहे हैं तथा नवधनाड्य पैदा हो रहे हैं जिनकी निडरता से गैर-कानूनी धंधों तथा अपराधों का ग्राफ तेजी से बढ़ता जा रहा है। विकास और समृद्धि की दौड़ में अंधी सरकार को भूख से बिलखते, ठंड में ठिठुरते बच्चे तथा कमरतोड़ महंगाई से तिल-तिल मरती जनता दिखाई नहीं दे रही, बल्कि कुछ खास सैकड़ों लोगों के अरबपति बनने पर तालियां पीटकर आर्थिक समृद्धि का डंका बजा रही है। जो लोग सोचते हैं कि सरकार महंगाई पर काबू पा लेगी वे बिल्कुल गलत सोचते हैं। क्योंकि आज कीमतें मांग और पूर्ति के सिद्धांत से नहीं बल्कि राजनीति द्वारा तय होती है। सत्ता के गलियारों में पैठ रखने वाले राजनीतिक आकाओं का वरदहस्त प्राप्त अयोग्य व्यक्ति बड़ी आसानी से पद्म सम्मान प्राप्त कर जाते हैं, जबकि निस्वार्थ भाव से जीवन भर तन-मन-धन से संलग्न भिषीतुल्य लोगों की उपेक्षा कर उन्हें हाशिए पर धकेला जा रहा है। जहाँ तक गरीबी का प्रश्न है वह तो प्रतिवर्ष करोड़ों को गरीबी रेखा के नीचे सरकायेगी ही, गरीबों को तो और अधिक गरीबी की दलदल में फंसाकर उनके हमदर्द बनने के नाटक का सिलसिला जारी रहेगा ताकि उन्हें थोड़ी-सी मदद देकर उनके वोट हासिल किये जाते रहे।

अभी दिल्ली में हुए मुख्यमंत्री सम्मेलन में महंगाई और नक्सलवाद का हौवा तो खूब दिखाया गया, मगर केन्द्र और राज्यों के बीच आरोप-प्रत्यारोपों के चलते कोई ठोस नीति नहीं बनाई जा सकी। जब तक इनके मूल कारणों को खोज समाधान नहीं ढूंढा जायेगा तो स्थिति तो बद्तर होती ही जायेगी। नरेगा जैसी महत्त्वाकांक्षी योजना के बुनियादी सिद्धांतों को ताक पर रखकर उसके पैसे से ढाई लाख गांवों में पंचायत-घरों के निर्माण की तैयारी क्या भ्रष्टाचारी दलालों के दरवाजे नहीं खोल रही है? सबसे मुख्य चिंतित करने वाली बात यही है कि जिस देश के नौनिहाल खेल खेलने, मेला देखने तथा झूला झूलने की उम्र में आत्महत्या कर रहे हो, जहाँ, शिक्षा, चिकित्सा सभी कुछ किसी खास वर्ग की सम्पत्ति बनता जा रहा हो, जहाँ के शिक्षित युवा अपनी योग्यतानुरूप व्यवसाय न मिल पाने के कारण आतंकवाद और नक्सलवाद की ओर अग्रसर होने को मजबूर हो, जहाँ आये दिन नक्सलवादी गतिविधियों पर रेल-बस यातायात भेंट चढ़ रहा हो, जहाँ चारों ओर भुखमरी, गरीबी, चोरी डकैती, बेरोजगारी का साया हो, जहाँ के शोषित होते नागरिकों को विदेशी गरीब दिखने और सादगी से रहने की हास्यास्पद नसीहत दी जा रही हो और जो देश चुपचाप इस नसीहत को सुनकर अपने नागरिकों के सम्मान से खिलवाड़ करता रहे, उसे गणतांत्रिक देश कहना कितना सार्थक होगा। गद्दारों द्वारा गणतंत्र की गरिमा को गायब होते देर नहीं लगेगी।

वरिष्ठ साहित्यकार एवं पत्रकार
न्यू कृष्णानगर, जैन बाग, वीरनगर,
सहारनपुर – 247001 (उ.प्र.)

स्वस्थ समाज निर्माण के लिए
संकल्प करें
❐
मैं रिश्वत नहीं दूंगा।
मैं व्यवहार और व्यवसाय में प्रामाणिक रहूँगा।

आवाज़ उठाओ, भ्रष्टाचार मिटाओ

अणुव्रत आन्दोलन

पूर्वोत्तर भारत की यात्रा :2:

डॉ. महेन्द्र कर्णावट

नया परिवेश, नई जगह। रातभर नींद नहीं आई। प्रातःवेला में शीघ्रता से तैयार हो सर्वोदय सम्मेलन में समय पर पहुँचने का सभी साथियों से आग्रह किया। 21 फरवरी को प्रातः आठ बजे पहुँचे निर्मल भाई सामसुखा के घर अल्पाहार के लिए। निर्मलभाई का समूचा परिवार आध्यात्मिकता की पीली चादर ओढ़े है। उनकी धर्मपत्नी ललिता सामसुखा स्थानीय महिला समाज की शीर्ष नेत्री है। महिला मंडल एवं ज्ञानशाला के संचालन में इनका महत्त्वपूर्ण योगदान रहता है। अत्यंत विनम्र, सहजता एवं सेवाभावना से पूरित ललिता सामसुखा ने हमारे लिए विविध राजस्थानी व्यंजन बनाये जिन्हें देख लगा यह अल्पाहार नहीं पूर्णाहार है। सम्पत सामसुखा के अनुज निर्मल सामसुखा अत्यंत सरल स्वभावी हैं। गौहाटी प्रवास में इन्होंने हमें न सिर्फ पूरा समय दिया वरन् हमारे सुख-दुःख का भी पूरा ध्यान रखा।

अल्पाहार का स्वाद ले हम तेजी से सर्वोदय सम्मेलन स्थल की तरफ बढ़े। महात्मा गांधी के हिन्द स्वराज शताब्दी वर्ष पर अ.भा. सर्वोदय समाज का 43वां सम्मेलन अणुव्रत पुरस्कार 2005 से सम्मानित लोककर्मी हेमभाई की साधना स्थली शांति साधना आश्रम गुवाहाटी में 21 से 23 फरवरी 2010 को आयोजित हुआ। संत विनोबा के आशीर्वाद से 12 अगस्त 1982 को शांति साधना आश्रम की स्थापना हुई जिनके संस्थापक सदस्य थे हेमभाई, बाबूलाल भाई एवं आनंदभाई। इस संस्थान के माध्यम से हेमभाई ने पूर्वोतर राज्य में लोकसेवा का अनूठा कार्य किया है। बेरोजगारी की चुनौती झेलते हुए आश्रम में खाद्य निर्माण, वस्त्रशिल्प, आयुर्वेदिक औषधि निर्माण, मशरूम उत्पादन, बांस-बेंत का काम, केंचुआ खेती, सुलभ शौचालय, प्राथमिक विद्यालय इत्यादि प्रवृत्तियों का संचालन हो रहा है तो हिंसाग्रस्त राज्य असम में हिंसा के समक्ष अहिंसा को समाधान के रूप में प्रस्तुत किया है हेमभाई ने। अहिंसा की गूँज समूचे राज्य में फैले इस दृष्टि से हेमभाई के नेतृत्व में 20 से अधिक शांति शिविरों का आयोजन हुआ है एवं 1860 किलोमीटर की पदयात्राएँ कर शांति, भाईचारे का संदेश दिया गया है।

सर्वोदय समाज सम्मेलन का 21 फरवरी को उद्घाटन समारोह सम्पन्न हुआ जिसे असम राज्य के मुख्यमंत्री तरुण गोगोई ने संबोधित किया। सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. गिरिराज किशोर, डॉ. नंदकिशोर आचार्य, नटवरभाई ठक्कर, जानकीवल्लभ पटनायक (राज्यपाल : असम) चन्द्रशेखर धर्माधिकारी, राधा बहन भट्ट की प्रमुख उपस्थिति रही। इस अवसर पर आचार्य महाप्रज्ञ के संदेश का वाचन एवं वितरण हुआ। समणी डॉ. सत्यप्रज्ञा का 'अहिंसात्मक समाज एवं नारी' विषय पर प्रभावी वक्तव्य हुआ। गौहाटी के सक्रिय कार्यकर्ता विमल नाहटा भी सम्मेलन में उपस्थित थे। नाहटा के अर्थ सौजन्य से समागत कार्यकर्ताओं के भोजन की व्यवस्था रही। सर्वोदय सम्मेलन स्थल पर पहुँच हमने हेमभाई से मुलाकात की। स्वतंत्रता सेनानी पांडेजी ने बाबूभाई को साथ ले मंच पर उपस्थित सभी अतिथियों को अणुव्रत साहित्य भेंट किया। बाबूभाई ने मंचासीन व्यक्तियों से बात करते हुए सभी को अणुव्रत से परिचित कराया। सम्मेलन में सैकड़ों व्यक्ति पांडेजी के परिचित निकले जिनसे मुलाकात करते समय पांडेजी का जोश और उत्साह देखते ही बनता था। बातचीत करते हुए पांडेजी हमारा परिचय भी कराते और कहते यदि सर्वोदय और अणुव्रत के लोग मिल कर काम करें तो समाज में नया जलजला उठ सकता है।

सर्वोदय सम्मेलन के उद्घाटन समारोह के उपरांत हम पुनः गौहाटी की

सर्वोदय सम्मेलन गुवाहाटी में मंचासीन समणी डॉ. सत्यप्रज्ञा एवं गांधी स्मारक निधि दिल्ली के मंत्री रामचन्द्र राही

सर्वोदय सम्मेलन में प्रस्तुत असमिया नृत्य का दृश्य

तरफ बढ़े। सभा भवन में भोजन करने के उपरांत सभाध्यक्ष अभयराज डागा के साथ सम्पर्क करने निकले। गौहाटी में हमारी पहली भेंट हुई संघ समर्पित व्यक्तित्व रूपचंद सुराणा से। सुराणाजी ने पूरी बात सुनने के बाद अणुव्रत के प्रचार-प्रसार की दृष्टि से अणुव्रत विसर्जन योजना के अन्तर्गत पाँच वर्ष के लिए इक्कीस हजार रु. अर्थ सहयोग प्रदान करने की सहमति जताई। दो-तीन व्यक्तियों से सम्पर्क करने उनके घर पहुँचे पर मिलना संभव नहीं हो पाया। संध्यावेला में सभा भवन में कार्यकर्ताओं की गोष्ठी हुई। लगभग बीस कार्यकर्ताओं की उपस्थिति में सम्पत सामसुखा ने अणुव्रत समिति के गठन की प्रक्रिया से अवगत कराया। निर्मलभाई एवं मैंने अणुव्रत दर्शन को व्याख्यायित करते हुए इससे जुड़ने की अपील की। कार्यकर्ताओं के मन में अणुव्रत को लेकर जो प्रश्न उठे उन्हें हमने समाधान देने का प्रयास किया। विमल नाहटा ने अणुव्रत महासमिति, अ.भा.अणुव्रत न्यास, अणुव्रत विश्व भारती एवं अणुव्रत शिक्षक संसद से संबंधित जिज्ञासाएँ रखीं जिनका मैंने समाधान किया। कार्यकर्ता संगोष्ठी में चार-पाँच महिलाएँ भी उपस्थित थीं। मंजू भंसाली अणुव्रत के कार्यों के प्रति अत्यंत उत्साहित कार्यकर्ता हैं। विचार विमर्श उपरांत अणुव्रत समिति गुवाहाटी के गठन का सर्वसम्मत निर्णय हुआ एवं प्रबुद्ध कार्यकर्ता निर्मलकुमार चोरड़िया को अध्यक्षीय दायित्व सौंपा गया। अणुव्रत आंदोलन एवं केन्द्रीय अणुव्रत की संस्थाओं के संदर्भ में कार्यकर्ताओं की जिज्ञासाओं को सुन मुझे लगा कि भारत के पूर्वोत्तर राज्यों में अणुव्रत के कार्य को आगे बढ़ाया जा सकता है पर आवश्यकता इस बात की है कि कार्यकर्ताओं से निरंतर सम्पर्क रहे एवं उन्हें सही दिशा निर्देश मिले। कार्य को आगे बढ़ाने के माध्यम कौन बनें इन्हीं संभावनाओं को टटोलते हुए हम रात्रिकालीन बैठक में भाग लेने सभागार में पहुँचे।

ठीक समय पर समणी डॉ. सत्यप्रज्ञा के सान्निध्य में अणुव्रत व्याख्यान माला का क्रम प्रारंभ हुआ। असमिया संस्कृति एवं परम्पराओं के अनुसार हमारा स्वागत किया गया। अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष निर्मल रांका ने दैनिक जीवन में अणुव्रतों की महत्ता को प्रतिपादित किया। टूटते परिवार एवं बढ़ती घरेलू हिंसा के संदर्भ में मेरा एवं समणीजी का प्रमुख वक्तव्य हुआ। समय का पूरा ध्यान रखते हुए ठीक नौ बजे व्याख्यानमाला का क्रम सम्पन्न हुआ। भोजन के उपरांत हम सभी ने गुवाहाटी में व्यतीत हुए प्रथम दिन की समीक्षा की। निर्मल भाई का चिंतन रहा कि लम्बे समय से इस क्षेत्र की संगठनात्मक यात्रा नहीं होने से अणुव्रत के प्रति स्थानीय समाज की उदासीनता है और इसी कारण अणुव्रत के प्रचेता हेमभाई के व्यक्तित्व का भी हम उपयोग नहीं कर पाये हैं। बाबू भाई बोले गुवाहाटी की स्थिति उत्तर भारत से विचित्र है। यहाँ दलबंदी की नींव अत्यंत गहरी है। यहाँ की तेरापंथ सभा के चुनाव गुवाहाटी में चर्चा के बिन्दु रहते हैं। खेमेबंदी के चलते यहाँ रचनात्मक कार्य गति नहीं पकड़ पाये हैं। मेरा मंतव्य रहा यहाँ निकट परिचय नहीं है। यहाँ की भौगोलिक -सामाजिक परिस्थितियों से भी परिचित नहीं हैं। फिर भी प्रयास कर रहे हैं। दलबंदी के मध्य से भी कोई मार्ग निकलेगा। कोई भी मन से सहयोगी नहीं बन रहा है सर्वत्र उदासीनता दिखाई दे रही है। इस उदासीनता का राज क्या है इसे जानना जरूरी है। मेरी इस बात पर डॉ. पाण्डेय बोले पूर्वोत्तर भारत की भौगोलिक स्थिति उत्तर में $21^0$57' से लेकर $29^0$30' अक्षांश तक और पूर्व में $89^0$46' से लेकर $97^0$30' प्राधिमांश तक विस्तृत है। पहले यह एक ही राज्य था पर राजनीति ने इसे सात हिस्सों में बाँट दिया और अब अरुणाचल, असम, मणिपुर, मिजोरम, मेघालय, नागालैण्ड और त्रिपुरा ये सात राज्य हैं। भूटान, चीन, बर्मा एवं बांग्लादेश की सीमाएँ इन राज्यों से लगती हैं। प्रचुर वन संपदा एवं खनिज संसाधन हैं। ये सभी छोटे-छोटे राज्य है। असम में जैन समाज अर्थ की दृष्टि से सबल है। अर्थ सबलता ही यहाँ के जैन समाज को खेमों में बाँटे हुए है।

अणुव्रत समिति गुवाहाटी के गठन के संदर्भ में बाबूभाई बोले निर्मलजी चोरड़िया उत्साही कार्यकर्ता हैं। इनके अध्यक्ष मनोनीत होने से अणुव्रत का काम आगे बढ़ेगा ही। कल हमें दो दल बनाकर अलग-अलग जन सम्पर्क करना होगा। निर्मलभाई पहली बार अणुव्रत की

लम्बी यात्रा पर आये हैं। रह-रहकर इन्हें दक्षिण के व्यंजनों की याद आ जाती है। बोले महेन्द्रभाई इडली खाये बहुत दिन हो गये हैं। कल तो इडली खिलाने का क्रम रहेगा या नहीं। निर्मल की बात सुन हम सभी हँस पड़ते हैं और घड़ी देख कहते हैं चलो अब सोने की तैयारी करें। रात के बारह बज रहे हैं, कुछ ही समय में तारीख भी करवट ले लेगी।

22 फरवरी। प्रातःकालीन अल्पाहार कमल गोल्छा के घर पर लेते हैं। कमलजी समधि हैं सम्पत सामसुखा के। एक व्यंजन पर हमारी निगाह ठहर जाती है। जानकारी लेने पर पता चलता है कि यह बादाम का संदेश है। नाश्ते की जगह भरपेट भोजन कर तथा कमल भाई से ग्यारह हजार रु. का सहयोग ले हम अणुव्रत महासमिति कार्यसमिति के सदस्य ज्ञानचंद मरोठी के घर जा धमकते हैं। ज्ञानजी पिछले दो-चार माह से आराम कर रहे हैं। हृदयरोग की शल्य चिकित्सा हुई है। मेरे अनन्य राजेन्द्रभाई सेठिया के जीजाजी हैं। ज्ञानजी मरोठी से मिल हमें गहरी आत्मीयता एवं पारिवारिकता का अनुभव हुआ। चाय के साथ दैनिक कार्ययोजना का निर्धारण हुआ और उसी के अनुसार दो दलों में विभक्त हो हम जन सम्पर्क को निकल पड़े। राजूभाई आंचलिया, निर्मल सामसुखा, सुबोध कोठारी, निर्मल कुमार चोरड़िया दिनभर हमारे साथ गुवाहाटी की सड़कों को नापते रहे। राजूभाई चुस्त-दुरुस्त व्यक्ति हैं तो सुबोधभाई धीर-गंभीर सरल प्रकृति के हैं। निर्मलजी चोरड़िया परिश्रमी एवं साफ बोलने वाले व्यक्ति हैं। अणुव्रत के कार्य के प्रति अति उत्साह मुझे कहीं दिखाई नहीं दिया। तरह-तरह की बातों से हमें रू-ब-रू होना पड़ा आप आये, स्वागत है पर चंदा देने के भाव नहीं हैं। आपके कार्यों में हमारा पूरा सहयोग रहेगा, अभी तो एक-दो दिन हैं ना, मैं स्वयं आपको फोन पर सूचित करुँगा।

आप आओ चाहे साहब आयें इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, मैं चंदे में विश्वास नहीं करता। जून 2010 तक मेरे अर्थ सहयोग करने का संकल्प है। लोगों की इन बातों को सुन मुझे शेख सादी का यह वाक्य याद आ जाता है इंसान अगर लालच को ठुकरा दे तो बादशाह से भी ऊँचा दर्जा हासिल कर सकता है, क्योंकि संतोष ही इंसान का माथा ऊँचा रखता है। गुवाहाटी में निर्मल पगारिया, सुप्रीम एजेन्सीज, चुन्नीलाल बैंगाणी, के.जे. सेठिया एंड कं., ऋद्धकरण कोडामल सुराणा, अमोलकचंद भंसाली, रूपचंद पन्नालाल, संतोष बोथरा, पानमल कमलकुमार गोलछा, चंदनमल सेठिया, मांगीलाल भंसाली, आर. बी.सुराणा एंड सं. ने आर्थिक सहयोग प्रदान कर अणुव्रत के कार्य को आगे बढ़ाने में रुचि दिखाई। विष्णु पुराण में ठीक ही कहा गया है- विद्वान झगड़े में न पड़े। व्यर्थ के वैर से अलग रहे। थोड़ी हानि सह ले। वैर से धन की प्राप्ति हो, तो भी उसे छोड़ दे। आशा और निराशाओं के मध्य झूलते हुए दोनों दलों के साथी अपराह्न 3 बजे सभा भवन पहुँचे और पुनः तरोताजा हो ठीक चार बजे कार से तेजपुर के लिए निकले।

गुवाहाटी से मंगलदेई, खारुपेटिया, डेकियाझूलि होते हुए हम तेजगति से तेजपुर की तरफ बढ़े। मार्गवर्ती गाँवों के किनारे बड़ी संख्या में मांसाहार और मदिरा की दूकानें इस बात की सूचना दे रही थीं यदि कहीं रुको और चाय-नाश्ता लो तो संभल कर लेना। लगभग चार घंटे की लम्बी कार यात्रा के बाद तेजपुर नगर की सीमा में पहुँचे। तेजपुर पहुँचते ही मुझे याद आया वर्ष 1962। उस वर्ष मैं आठवीं कक्षा में अध्ययनरत था और भारत-चीन का युद्ध हुआ। चीनी सेना तेजी से आगे बढ़ती हुई तेजपुर के नजदीक पहुँच गई थीं। तेजपुर के पतन की संभावनाओं को देखते हुए तेजपुर को खाली करा दिया गया, जेल के सभी कैदियों को रिहा कर दिया गया और करैन्सी को आग के हवाले कर दिया गया था। तेजपुर की वीर धरती को प्रणाम कर मैं इतिहास में खो गया। आज समूचा तेजपुर सेना और सेना के भवनों से आच्छादित है। हम ठीक समय पर तेजपुर पहुँचे और वहाँ प्रवासित साध्वी त्रिशलाकुमारीजी के दर्शन किये। साध्वीश्रीजी को देखते ही मैं उन्हें पहचान गया। उन्होंने लगभग 20 वर्ष पूर्व राजनगर चातुर्मास किया था तब वे अग्रणी नहीं थी। साध्वी फूलकुमारीजी के दल में सहयोगी साध्वी थी। एक दूसरे को देखते ही राजनगर का चातुर्मास आँखों के सामने घूम गया। संवत्सरी पर्व के आखिरी दिन का व्याख्यान चल रहा था। शांतभाव से जनमेदिनी महावीर चरित्र जीवन को सुन रही थी कि यकायक साध्वी फूलकुमारीजी ने स्वयं को रोका और भिक्षु बोधि स्थल की छत की तरफ

देखने लगीं। कुछ क्षणों के बाद एक कार्यकर्ता ने आकर मुझे कहा- ऊपर छत की तरफ देखो। ऊपर दृष्टि करते ही जो दृश्य देखा वह कल्पनातीत था। लगभग छह से आठ फीट लम्बा सर्प छत की दीवार के सहारे लटका हुआ था। मैं सहमा लेकिन तत्काल माईक पर जा कर बोला- आप सभी मौनभाव से अपने स्थान पर बैठे रहे। लगता है आज पुनः अंधेरी ओरी के यक्षराज साध्वीश्री का प्रवचन सुनने भिक्षु बोधि स्थल पहुँचे हैं। कार्यकर्ताओं ने बाहर आने-जाने वाले मार्ग को घेर लिया। धर्मेश मादरेचा, शंकरलाल कावड़िया, मीठालाल मादरेचा, सत्येन्द्र बड़ोला इत्यादि कार्यकर्ताओं ने प्रयास किया कि सर्प छत को छोड़ कर चला जाये पर यह संभव नहीं हो पाया। आखिर में बिस्तर की एक खोली पर रस्सी बाँध कर उसे ऊपर से नीचे लटकाया गया और हलचल की गई। इस बार प्रयास सफल रहा, नागदेवता खोली में जा दुबके। खोली को नीचे उतार सावधानीपूर्वक उसे दूर जंगल में ले जा कर खोल दिया गया। इस तरह सभा में जो डर, दशहत समा गई थी उसे दूर किया गया।

रात्रि आठ बजे तेजपुर में सभा प्रारंभ हुई। लगभग एक सौ से अधिक भाई-बहन उपस्थित थे। अणुव्रत सेवी प्रतापसिंह बैद के दो बुजुर्ग भाई भी तेजपुर में ही प्रवासित हैं उनसे पहली बार सम्पर्क हुआ। सम्पत सामसुखा, निर्मल एम.रांका, बाबूलाल गोल्छा के प्रेरणादायी वक्तव्य हुए। साध्वी त्रिशलाकुमारीजी ने अणुव्रत दर्शन की वर्तमान में उपयोगिता को प्रतिपादित किया। कार्यकर्ताओं ने अणुव्रत के प्राथमिक ग्यारह नियमों के संदर्भ में जिज्ञासाएँ रखी जिनका मैंने समाधान दिया। समाधान के उपरांत सर्वसम्मति बनी कि अणुव्रतों को स्वीकार करें और तत्काल बीस भाई-बहनों ने अणुव्रत संकल्पों को स्वीकार किया। किशनलाल बोथरा को नवगठित अणुव्रत समिति का अध्यक्षीय दायित्व सौंपा गया। तेरापंथ सभा तेजपुर के पदाधिकारी युवा हैं और हाल ही में इन्होंने तेजपुर में तेरापंथ सभा भवन बनाने का निर्णय लिया है। सभाध्यक्ष उगमचंद बैद उत्साही युवा व्यक्तित्व के धनी हैं जो अपनी वाक चातुर्य से सभी को बाँध लेते हैं। अमृत सांसद दिलीप दूगड़ से पहली बार साक्षात्कार होता है। कर्मठता एवं सकारात्मक सोच के धनी है। अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान के दौरान मेरी दिलीप भाई से दो-तीन बार दूरभाष पर वार्ता हुई थी। वे स्थानीय समाज के आधारभूत व्यक्ति हैं। अणुव्रतों के प्रचार-प्रसार में तेरापंथी सभा के माध्यम से सतत संलग्न हैं। ग्यारह बजे सभा सम्पन्न हुई। सभी ने महावीर धारीवाल के घर पारिवारिक माहौल में सुस्वाद भोजन लिया। तेजपुर समाज की अनुकरणीय परम्परा है कि आगत अतिथियों के सम्मान में एक घर में भोज होता है और सभी उसमें अपनी उपस्थिति देते है। साधार्मिक वात्सल्य का उत्कृष्ट उदाहरण हमें तेजपुर में देखने को मिला। रात्रि विश्राम सुशीला-जगतसिंह दूगड़ के घर किया। 23 फरवरी को प्रातः वेला में 6 बजे ही निकलना था अतः सुशीलाजी ने चार बजे उठ

हमारे नाश्ते की तैयारी की। सुशीलाजी के ममत्वभरे आग्रह-आतिथ्य को देख हमें अपने घरों की याद आने लगी। प्रातःकालीन अल्पाहार में उपमा, पराठे, सब्जी के साथ बादाम की कढ़ी, एक और नया व्यंजन। निर्मल भाई ने बादाम की कढ़ी बनाने का तरीका पूछा तो मुझे मन ही मन हँसी आई कि जिस व्यक्ति ने कभी बनियान नहीं धोया वह रसोई में जाकर बादाम की कढ़ी कैसे बनाएगा? सभाध्यक्ष बैद, अमृत सांसद दिलीप दूगड़ भी बहुत सवेरे हमें विदा करने पहुँच गये। अणुव्रत पाक्षिक के एक सौ त्रैवार्षिक सदस्य बनाने के वायदे के साथ हमने तेजपुर से विदा ली। वह धरती जहाँ से 1962 में भारत का इतिहास बना उसी वीरभूमि के वीर निवासियों को प्रणाम कर हम 23 फरवरी को नारायणपुर की तरफ बढ़े जहाँ नारायणपुर टी-गार्डन अवस्थित है। नारायणपुर टी-गार्डन तीन हजार एकड़ भूमि में फैला हुआ है और यहाँ से निकली नारायणपुर चाय पूरे भारत में जाती है। टी-गार्डन के मैनेजर हैं बगड़ी के वर्तमान ठाकुर के पुत्र यशवंतसिंह राठौड़। इनसे मिलने की अदम्य इच्छा निर्मल भाई एवं हमें नारायणपुर टी-गार्डन ले आई। निर्मलभाई के राठौड़जी से गहरे तालुकात हैं। राठौड़ जी ने हमारा गर्मजोशी के साथ स्वागत किया। आलू के पराठे, हलवा, सब्जी, दूध-चाय का आनंद ले और टी-गार्डन में फोटोग्राफी करने के बाद हम खारुपेटिया की तरफ बढ़े।

खारुपेटिया, असम राज्य का प्रमुख औद्योगिक शहर है जहाँ जूट का व्यवसाय है। मंगतमलजी संचेती यहाँ के पुराने श्रावक थे जो मेरे पिताश्री के मित्र थे। खारुपेटिया में ही बाबूभाई के पुत्र आनंद के ससुराल वाले रहते हैं। विनोद सुराणा के घर पहुँच हमने अल्पाहार लिया और वहीं पर सभाध्यक्ष एवं अन्य कार्यकर्ताओं को बुला भेजा। पूर्व परिचित निर्मल कुमार

सुराणा को यकायक खारुपेटिया में देख मैं आश्चर्यचकित रह गया। सोचा भी नहीं था कि निर्मलभाई से अनजाने में उन्हीं के घर जाकर यकायक मुलाकात करुँगा। इनसे मेरा परिचय सिरियारी में हुआ था जब वे परिवार सहित तपस्वी संगीत मुनि की सेवा में आये थे। निर्मल भाई सांसारिक पक्ष में संगीत मुनि के भतीजे हैं। वार्ता का दौर चला। भूख न होते हुए भी घर के दूध का एक-एक गिलास सभी ने पीया। खारुपेटिया सभा के अध्यक्ष ने भी अणुव्रत पाक्षिक के पचास त्रैवार्षिक सदस्य बनाने का विश्वास दिलाया।

मध्याह्न दो बजे पुनः गुवाहाटी पहुँचे। संध्यावेला में बीकानेर असम रोड़ लाईन्स के प्रमुख वियजसिंह डागा से सम्पर्क किया। डागाजी ने पचास व्यक्तियों को अपनी ओर से अणुव्रत भिजवाने की स्वीकृति दी। विजयसिंह डागा मेरे अनन्य सहयोगी-साथी भंवरलाल डागा 'गंगाशहर' के अनुज हैं।

संध्या वेला में हम माँ कामाख्या देवी के दर्शन करने नीलांचल पर्वत स्थित उन्हीं के दरबार में पहुँचे। प्राचीन शिल्पकला से निर्मित भव्य मंदिर शक्तिपीठ के रूप में प्रतिष्ठित है। आज भी यहाँ पर निरीह पशुओं की बलि दी जाती है। भगवान विष्णु के पुत्र नरक ने अपनी इष्टदेवी भगवती कामाख्यादेवी के मंदिर का निर्माण किया था। इसी नरक के पुत्र भगदत्त ने कुरुक्षेत्र महासमर में दुर्योधन के पक्ष में युद्ध किया था और अर्जुन ने उसका वध किया था। पांडेजी हमारे लिए प्रसाद एवं मंदिर से संबंधित परिचय पुस्तिका लाए और बोले भक्तिभाव से देवी माँ से जो माँगोगे वह मिलेगा। यहाँ कि जनश्रुति है कि एक बार जिसने ब्रह्मपुत्र को पार किया है उसे पुनः दो बार तो आना ही होगा। मंदिर की परिक्रमा के साथ प्राकृतिक सौन्दर्य को निहार कर हम पुनः तेरापंथ सभा भवन लौटे।

रात्रि को अमृत सांसद कन्हैयालाल डूंगरवाल हमसे मिलने सभा भवन पहुँचे। डूंगरवालजी ने अणुव्रत के पचास सदस्यों की राशि अपनी ओर से प्रदान की और 24 फरवरी को समायोजित हो रहे होली उत्सव का निमंत्रण भी दिया। परंतु शिलोंग की यात्रा सुनिश्चित होने से होली उत्सव की रंगीनियों से हम वंचित रहे।

निर्मल भाई के मन की व्यथा को मैं समझ रहा था। इडली खाये पाँच दिन हो चले थे। अतः दक्षिण व्यंजन वाले होटल की खोज खबर ले उसी की तरफ बढ़ चले। ***क्रमशः***

पाठकों के स्वर

● अणुव्रत पाक्षिक 1-15 फरवरी 2010 अंक पढ़ा। अंक में डॉ. महेन्द्र कर्णावट की सशक्त लेखनी से लिखा गया संपादकीय लेख ''सामाजिक व्यवस्थायें सादगीयुक्त हों'' एवं भूरचंद जैन की बेबाक लेखनी से लिखे गये लेख ''विवाह है या आडम्बर'' में व्यक्त विचारों के लिए लेखकद्वय बधाई के पात्र हैं। चाहे कितने भी सशक्त सार्थक विचार प्रकट करें समाज की खाल मोटी है, उस पर कोई प्रभाव नहीं होगा बल्कि वैवाहिक आडम्बरों में दिन-ब-दिन बढ़ोतरी ही हो रही है। भूरचंद जैन ने तो सीधा निशाना जैन समाज पर साधा है और धनिकों के चोचलों की बखिया उधेड़ कर रख तो दी हैं लेकिन वैवाहिक आडम्बरों एवं शान-शौकत की चकाचौंध की संक्रामक बीमारी तो प्रायः सभी समाजों में फैलती जा रही है। इस रुग्णता से कोई समाज अछूता नहीं रहा। खासकर नव-धनाढ्यों ने तो दो नंबर के धन को सफेद करने का माध्यम विवाह सहित सभी सामाजिक समारोहों को बना लिया है। शादी की रजत व स्वर्ण वर्षगांठों में तो जिनमें मुख्य विवाह समारोह का पूरा नाटक होता है आडम्बरों को परवान चढ़ा दिया है। भगवान जाने मध्यम वर्ग के लिए दिनों-दिन बढ़ती यह त्रासदी कहां व कब रुकेगी अभी तो रुकने के कोई आसार भी नहीं हैं। सामाजिक सरोकारों में भौंडे प्रदर्शनों के कारण आनन्दभाव ही तिरोहित होते जा रहे हैं। केवल औपचारिकता निर्वाह हो रही है। महिला संगीत के आयोजनों में फिल्मी स्टाइल में हो रही प्रस्तुतियों को देखकर उम्रयाफ्ता लोगों को शर्मसार होना पड़ता है, अपसंस्कृति का खुला नग्न नृत्य हो रहा है। लेकिन अणुव्रत अपनी सोच व समझ को नैतिकता के उन्नयन के लिए अपनी मुहिम जारी रखें।

द्वारकेश भारद्वाज, *(जयपुर-राजस्थान)*

● 'अणुव्रत' पाक्षिक निरंतर मिल रहा है। आपके संपादकीय सामयिक एवं सटीक होते हैं। अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी एवं अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ के सभी आलेख मार्मिक एवं ज्ञानवर्धक होते हैं। अन्य रचनाएं तथा अणुव्रत सम्बन्धी कार्यक्रमों का सचित्र विवरण भी उत्साहवर्धक होता है। पत्रिका के कुशल सम्पादन हेतु हार्दिक बधाई एवं साधुवाद।

महेन्द्र रायजादा, *(जयपुर-राजस्थान)*

● अणुव्रत आंदोलन द्वारा भ्रष्टाचार मुक्ति अभियान चलाया जा रहा है। इस बीच मध्यप्रदेश के समाचार पत्रों में आई.ए.एस अधिकारियों के निवास पर मारे गए छापों में करोड़ों की सम्पत्ति प्राप्त हुई है। छत्तीसगढ़ के एक आई.ए.एस. अधिकारी से भी करोड़ों की सम्पत्ति प्राप्त हुई है। एक साधारण डिप्टी कलेक्टर के घर छापे में दो करोड़ से अधिक की सम्पत्ति मिली है। ऐसा लगता है कि भ्रष्टाचार के गन्दे नाले में राज के नौकरशाह आखण्ड डूबे हैं। इन अधिकारियों को निलम्बित कर दिया गया है और एफ.आई.आर. दर्ज हो गयी है। सत्ता की गर्दन शर्म से झुकी हुई है। आश्चर्य और आनन्द का विषय है कि 'अणुव्रत' ने अपने दायित्व को ठीक समय समझा और इस विषय पर ''भ्रष्टाचार-शिष्टाचार'' शीर्षक से एक विशेष अंक निकाला। यह अणुव्रत आंदोलन की सजगता को दर्शाता है। आपको बधाई, आपका अभिनन्दन। मध्यप्रदेश प्रशासन ने संबंधित अधिकारियों को पद और सत्ता से हटा दिया है किन्तु फिर भी कई प्रश्न हैं जो मानस में उठ खड़े हुए हैं।

जैसे यह करोड़ों की सम्पत्ति एक दिन में तो एकत्र नहीं हुई। इसे पर्याप्त समय लगा होगा। क्या शासन के मंत्री/उच्च अधिकारी/सी. आई.डी. इस बीच निद्रा-मग्न थे। मैं सोचता हूं ऐसा नहीं है। हमारे राजनेता भी नौकरशाहों से मिले होते हैं। उनका भी अंशदान रहता है इस भ्रष्ट आचरण के समर्थन व सहयोग में। वे चुपचाप इस भ्रष्ट आचरण को देखते रहते हैं। अतः उन पर भी शासन की दृष्टि जानी चाहिए।

शासन सत्ता की कार्यवाही में कोई भी अफसर 'अकेला' भ्रष्टाचार 'सानन्द' नहीं कर सकता, फाइल नीचे से ऊपर तक रुपए की ताकत से ही दौड़ती है। भ्रष्ट अधिकारियों के अधीनस्थ कार्य करने वाले भी इनसे मिले होते हैं या डरते हुए सहयोग करते हैं। मतलब जब सर्वोच्च अधिकारी भ्रष्ट होता है तो पूरा विभाग ही उसमें सम्मिलित होता है।

ऐसा नहीं है कि हर अधिकारी और कर्मचारी भ्रष्ट होता है। ईमानदार लोग भी शासन में हैं। अब कल्पना कीजिए इन भ्रष्ट अधिकारियों के हाथ के नीचे काम करने वाले अधिकारियों-कर्मचारियों की कैसी दुर्गति होगी। वे तो प्रोन्नति पा ही नहीं सकते क्योंकि उनके कार्यों की चरित्रावली तो ये भ्रष्ट अधिकारी ही लिखेंगे ना।

एक मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है। अतः भ्रष्टाचार के मामले में मंत्री से लेकर संत्री तक दिव्य दृष्टि से विचार करना चाहिए। एक दो अधिकारियों पर कार्यवाही होने से प्रशासन स्वच्छ नहीं हो सकता। जब घाव सड़ जावे तब कुशल डॉक्टर के हाथों ऑप्रेशन ही होना चाहिए। छोटे-मोटे दण्ड तो चुटकुलेबाजी ही सिद्ध होंगे। आपके भ्रष्टाचार विरोधी अभियान में हम आपके साथ हैं। मंगलकामनाओं सहित।

सत्यनारायण भटनागर, *(रतलाम-मध्यप्रदेश)*

● आपके 'संपादकीय' रचनाओं को मैं बड़े ध्यान से पढ़ता हूं। अपने को बदलने का काफी प्रयत्न भी किया है और सफल भी हुआ हूं। आपके संपादकीय को पढ़कर मैंने अपने शब्दों में समाज का चित्रण करने का प्रयास किया है।

इस बार आप सामाजिक संस्थाओं को आह्वान करते हुए संस्थाओं को प्रेरित करें, ताकि एक शक्ति जागे संस्थाओं के रूप में। और समाज सुधार के कार्यक्रम गति पकड़ सकें। समाज में व्याप्त अनावश्यक रूढ़ियों को मिटाने के लिए सामूहिक प्रयास की आवश्यकता है, जो इन दिनों सुप्त अवस्था में है। आपके विचार उन्हें जगाने में सहयोगी बनेंगे। महान गुरु आचार्य महाप्रज्ञ की सन्निधि में, समय में हमने अपने को अच्छे बदलाव के लिए प्रस्तुत नहीं किया, यह हमारा दुर्भाग्य होगा।

महावीरचन्द दरला 'जैन', *चेन्नई*

विश्व शांति का मूलमंत्र

विधानाचार्य ब्रज त्रिलोक

विश्व पटल पर जब दृष्टिपात करता हूँ तो पाता हूँ, आज सारा विश्व हिंसा की आग में जल रहा है। स्वार्थ का पेट्रोल हिंसा के दावानल को और अधिक भड़का रहा है। नफरत की दीवारें अवरोध बन कर अहिंसा के शीतल नीर की उपेक्षा कर रही है। कुल मिलाकर विश्व का मानव सुरक्षा के हजारों उपायों के बावजूद असुरक्षित एवं भयाक्रांत हैं। सुविधाओं के आडम्बर के बावजूद मानव दुविधाओं के चक्रव्यूह में फंसा है और आने वाले कल के प्रति भयाक्रांत है। मानव की चाह में तो फूल है पर राह में शूल है। हालात के इन भीषणतम अंधेरों में रोशनी की एक किरण हो सकती है भगवान महावीर की अहिंसा, जिसके आधार पर विश्व शांति का मूल मंत्र जियो और जीने दो का अमृत तत्त्व हाथ लगता है। यह हमारा अधिकार है कि अपने जीवन को सुखमय बनाये पर दूसरे को हम दुःख न पहुँचाये। हम ऐसा जीवन जियें कि हमारा सुख दूसरे का दुःख न बने। क्योंकि जब कभी अपना सुख दूसरे का दुःख बनने लगता है उसी क्षण जीवन में अशांति के नर्क का रास्ता खुलने लगता है। एक बार मां त्रिशला ने अपने बालों में लगे फूल को दिखाते हुए पुत्र महावीर से पूछा बेटा मैं कैसी लग रही हूँ तो प्राणीमात्र के कल्याण मित्र भगवान महावीर ने मुस्कुराते हुए कहा किसी दूसरे का घर उजाड़कर आप भला कैसे सुंदर लग सकती हैं। पर क्या करे आज मानव आने वाले कल को सुरक्षित बनाने के लिए परिग्रह की अंधी दौड़ दौड़ रहा है। वह बेहताशा भाग रहा है पर पहुँच कहीं नहीं रहा परिग्रह सुख सुविधाओं के साधन ही यदि सुख शांति के आधार होते तो अमेरिका को सबसे सुखी एवं तनावमुक्त देश होना चाहिये पर ऐसा नहीं है क्योंकि उसके जन जीवन में सर्वाधिक भय व्याप्त है। वस्तुतः सुख शांति का आधार अभय है और अभय आता है अहिंसा से। हिंसा का जनक परिग्रह है। चाहे वो पद प्रतिष्ठा धन-दौलत का हो या फिर विनाशकारी हथियारों का जखीरा हो। अतः विश्व शांति के लिये आवश्यक है भगवान महावीर के अपरिग्रह सिद्धांत को आत्मसात किया जाये। ध्यान रहे परिग्रह एवं हिंसा, अपरिग्रह एवं अहिंसा एक सिक्के के दो पहलू हैं। संसार में एक विचारधारा है मेरा मेरा है, तेरा तेरा है। दूसरी विचारधारा है मेरा तो मेरा है ही, तेरा भी मेरा है (यही विचार हिंसा एवं अशांति का मूल कारण है)। तीसरी विचारधारा है तेरा तो तेरा है ही संतोष न हो तो मेरा भी तेरा है। यही विचार सुख शांति का आधार है। और चौथी विचार धारा है न मेरा है न तेरा है सुबह शाम का डेरा है सब चिड़िया रेन बसेरा है। यही विचार भारतीय संस्कृति की आत्मा है। विश्व शांति एवं भाई चारे के विकास के लिये अहिंसा, अपरिग्रह के साथ-साथ बहुत आवश्यक है। परिवार, समाज, राष्ट्र एवं विश्व स्तर पर प्रमोद भाव अर्थात गुण ग्रहण के दृष्टिकोण का विकास किया जाये। दृष्टि यदि गुण ग्रहण की है तो शत्रु भी तो मित्र बन जाता है। उसके विपरीत दृष्टि में यदि दोष दर्शन की राक्षसी वृत्ति है तो मित्र भी शत्रु बन जाता है। जिस प्रकार से हम कीचड़ में से कमल, कांटो में से गुलाब चुन लेते हैं। हम कीचड़ अथवा कांटो की शिकायत नहीं करते। ऐसे ही पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय जीवन में शत्रुता से बचने के लिये आपसी संबंधों की बेल पर मैत्री एवं भाईचारे के फूल खिलाने के लिए आवश्यक है कि मानव मात्र के अंदर जो गुण रूपी देवता विराजमान है, उसका आदर करें। नकारात्मक पहलुओं से पहले सकारात्मक पहलुओं को देखें। ऐसा कोई मकान नहीं होता जिसके अंदर एक न एक दरवाजा न हो, ऐसे ही कोई व्यक्ति नहीं होता, जिसमें कोई न कोई गुण न हों, कोई भाई अच्छा चित्र बनाता तो कोई बहन कर्णों को तृप्त करने वाला मधुर गीत गाती है। कोई अन्नपूर्णा मां रोटी अच्छी बनाती है तो कोई शिल्पी पाषाण में परमात्मा खोजता है। पूर्व यदि श्रेय अध्यात्म का जनक है तो पश्चिम प्रेय विज्ञान का जनक है। अतः मैत्री एवं भाईचारे के विकास के लिये गुणानुरागी बने क्योंकि प्रशंसा की खाद के बिना मैत्री के फूल नहीं खिलते। यदि आप किसी व्यक्ति के दुर्गुणों से आहत है तो सबसे पहले उसके उज्ज्वल पक्षों को देखकर उसकी हार्दिक प्रशंसा करें और उचित अवसर देखकर उसे उसकी गलती कुछ इस तरीके से बतायें कि तुम्हारी करनी गोरे चेहरे पर काला तिल नहीं काले चेहरे पर सफेद दाग सी लगती है। मिठाई खाने के बाद जैसे नमकीन और अधिक रुचिकर हो जाता है। ऐसे ही सद्गुणों की प्रशंसा सुनने के बाद अरुचिकर बातें सुनना सहज और सरल हो जाता है। अतः परिवार समाज राष्ट्र एवं विश्व बंधुत्व के लिये निंदा का नमकीन नहीं प्रशंसा के मिष्ठान परोसे। जो दुर्गुणों को संभाले वही सच्चा प्रेम है, जो गिरते को संभाले वही सच्चा मित्र है। पर इसके लिये हृदय की विशालता एवं सकारात्मक सोच की आवश्यकता है। क्योंकि जिनका हृदय विशाल एवं सोच सकारात्मक होती है वह तुच्छ को भी महान बना देते

हैं। इतिहास गवाह है इसी सोच के कारण लकड़ी बेचने वाला बालक अमेरिका का राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन बना। अतः दूसरों के दुर्गुणों को देखने में अभ्यस्त मन को अपने अंदर के गुण-दोषों को देखना चाहिये। विश्व के गुण-दोषों का अवलोकन कर अपनी दृष्टि निर्मल बनानी चाहिये। यह निर्मल दृष्टि प्रभु श्री राम के पास थी, तभी उन्होंने रावण जैसे अधम से भी लक्ष्मण को शिक्षा लेने भेजा था। अतः हमें भी विरोधी के गुणों का आदर करना चाहिये। दूसरों को हीन समझ कर जो उनकी निंदा करता है उसके जीवन में क्षमा, दया, सहिष्णुता, प्रेम, विनयशीलता आदि उदार भावनाएं नष्ट हो जाती हैं और जीवन में सुख शांति आकाश के फूल बन जाते हैं। विश्वशांति के लिये आवश्यक विश्व परिवार का प्रत्येक सदस्य स्वार्थ के विकृत रस का वमन करे। स्वार्थी चित्त ही अधिक संग्रह कर संघर्ष को जन्म देता है। स्वार्थी चित्त भूल जाता है कि परिवार का प्रत्येक सदस्य एक ही वृक्ष के सहारे पनपने वाली शाखाओं की तरह है यदि परिवार के सदस्य ही एक दूसरे को आदर दिये बिना संबंधों के वृक्ष को निंदा के खारे जल से सींचने लगेंगे तो वह वृक्ष ज्यादा दिन हरा-भरा नहीं रह पायेगा। जिस प्रकार से कृष्ण पक्ष का आकाश काला एवं भयाभय लगता है और शुक्ल पक्ष में पूर्णमासी का चांद हमें आह्लादित करता है। ऐसे ही प्राणी मात्र को प्रशंसा की चांदनी ही अच्छी लगती है। निंदा की कालिमा नहीं। अतः विश्व शांति के लिये प्रशंसा का चंदन लगाइये आप पायेंगे आपकी उंगलियां भी महक रही हैं।

विश्व शांति के लिये बहुत आवश्यक है। युग पुरुष महावीर के उदात्त चिंतन परस्परोपग्रहों जीवानाम को जीवन जीने की शैली बनाया जाये अर्थात विश्व परिवार का प्रत्येक सदस्य आपस में एक-दूसरे के प्रति अनुग्रह भाव रखकर उपकार करे और सबसे बड़ा उपकार विश्व शांति एवं भाई चारे के विकास के लिये यही होगा कि उन्नत एवं शक्ति-संपन्न देशों के राष्ट्राध्यक्ष प्रधानमंत्री आदि रक्षा के नाम पर युद्ध की तैयारी में जो खर्च करते हैं। उसका 25 प्रतिशत भी यदि पीड़ित मानवता की रक्षा एवं ज्ञान के लिये खर्च करें तो निश्चित मानिये यह धरती स्वर्ग बन जायेगी। पूरब-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण चारों ओर शांति छा जायेगी। इसकी शुरुआत बड़े राष्ट्रों को ही करनी पड़ेगी। क्योंकि बुराई हो या अच्छाई हमेशा ऊपर से नीचे आती है। आप प्रेम बांटेंगे प्रेम पायेंगे नफरत बांटेंगे नफरत पायेंगे, आप दूध भेजेंगे अमृत पायेंगे जहर भेजेंगे खुद मर जायेंगे। फिर क्यों न जियो और जीने दो और परहित सरस धरम नहीं भाई के गीत गायें और जीव जीवन जगत में सुख शांति के फूल खिलायें। अंत में यही कहूँगा

जब कभी अपना मन पवित्र होता है, हर चेहरे पर अपना चित्र होता है।
चले जाओ दुनिया के किसी कोने में हर कोई अपना मित्र होता है।

जैन गुरुकुल, पिसनहारि की मढ़िया
जबलपुर–3 (मध्यप्रदेश)

झाँकी है हिन्दुस्तान की

- देश में कुपोषण के कारण लगभग 20 लाख बच्चे हर साल मौत के मुँह में समा जाते हैं। इनमें ज्यादातर बच्चे एक वर्ष से कम उम्र के होते हैं। दुर्भाग्य यह है कि हर साल कुपोषण के कारण मौत का शिकार हो रहे इन बच्चों में ज्यादातर उत्तर प्रदेश और बिहार राज्य के हैं। उत्तर प्रदेश में 50,000 पंचायतों में ग्राम सेवकों की जरूरत है, लेकिन वर्तमान में सिर्फ 6000 ग्राम सेवक हैं। ऐसे में ग्रामीण रोजगार गारन्टी योजना जैसी केन्द्रीय योजनाओं का संबंधित पक्षों तक उचित लाभ पहुंचने में रुकावट आती है।

- देश में अब तक की सबसे विशाल कसरत जनगणना-2011 का श्रीगणेश हो गया है। इस अभियान में लगभग एक सौ बीस करोड़ आबादी की पहचान और गिनती करके उसका रिकॉर्ड बनाकर पहचान-पत्र जारी होंगे।

  120 करोड़ लोगों का बनेगा रिकॉर्ड।
  15 वीं राष्ट्रीय जनगणना होगी।
  1872 में हुई थी पहली जनगणना।
  25 लाख से अधिक कर्मचारी कार्य कर रहे हैं।
  पूरी प्रक्रिया पर 2209 करोड़ रुपए होंगे खर्च।
  11 हजार 631 मीट्रिक टन कागज लगेगा।
  64 करोड़ सूची-पत्र का 16 भाषाओं में होगा प्रकाशन।
  81 लाख नियम पुस्तिकाएं 18 भाषाओं में।
  दो चरणों में होगी, पहली बार एनपीआर।

  देश के नागरिकों का व्यापक पहचान डाटाबेस भी तैयार किया जाएगा। जनगणना में आबादी का स्वरूप, शिक्षा, आवास, शहरीकरण, मातृ-शिशु जन्मदर, धर्म, भाषा व आव्रजन के आंकड़े भी तैयार होंगे।

रहस्य अध्यात्म चिकित्सा का

मुनि किशनलाल

प्रेक्षाध्यान और प्रेक्षा चिकित्सा के प्रणेता आचार्यश्री महाप्रज्ञजी हैं। उनके श्रेष्ठतम मार्गदर्शन में मैंने कुछ सीखा, अभ्यास किया और जो प्राप्त हुआ वह उनका ही अनुग्रह है, मैं तो मात्र प्रस्तोता हूँ। उनके अनुग्रह बिना कुछ भी नहीं हो सकता है। आचार्यश्री के अनुग्रह से उनके प्रसाद से ही सफलता के शिखर तक पहुंचा जा सकता है। उनके अनुग्रह की आकांक्षा अन्तःकरण में है। यह पहला कदम जो उनको जन्मदिन पर समर्पित है।

प्रेक्षा चिकित्सा का व्यवस्थापन मनुष्य की सम्पूर्ण स्वस्थता के लिए किया गया है। हमारा लक्ष्य सिर्फ अपने आपको एक बार या बार-बार आन्तरिक अनुभव के लिए तैयार करना ही नहीं है बल्कि प्रतिक्षण जागरूकता से अपने अन्दर रहते हुए इस बाहरी दुनिया में संबद्ध जीवन जीने के लिए अपने आपको हर स्तर पर अधिकारी बनाना है। सम्पूर्ण स्वास्थ्य से हमारा तात्पर्य है, अपने आपको शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, सामाजिक, व्यवहारिक और भावनात्मक स्वास्थ्य का अपना सच्चा स्वरूप उपलब्ध होना। जिससे अपने अस्तित्व में लौट आयें।

अपने अस्तित्व में लौटे हुए साधक को निम्नलिखित बातें स्वीकार करनी चाहिए

मैं शरीर नहीं हूँ।
मैं मन नहीं हूँ।
मैं भाव नहीं हूँ।
मैं आदमी नहीं हूँ।
मैं औरत नहीं हूँ।
मैं रुज् (रोगी) नहीं हूँ।
मैं रोगों से आक्रांत नहीं हूँ।
मैं न पद हूँ, न प्रतिष्ठा हूँ।
मैं न रोग हूँ, न शोक हूँ।
न मैं दुःख हूँ, न सुख हूँ।

मैं सद्चिदानन्द स्वरूप हूँ।

सद्चिदानन्द रूपोऽहम्, सद्चिदानन्द रूपोऽहम्, सद्चिदानन्द रूपोऽहम्। मैं सत्-चिद्-आनन्द रूपवाला सद्चिदानन्द हूँ।

जो स्वयं अरुज् (निरोगी) है वही रोगी को निरोग बना सकता है। जो व्यक्ति उपरोक्त बातों से सहमत हैं, स्वीकार करता है और जिसके भीतर यह जानने की उत्सुकता जागी है कि ''मैं कौन हूँ?'' वही व्यक्ति प्रेक्षा चिकित्सा का पात्र हो सकता है।

अपने स्वरूप का अनुभव करने के लिए जो अभ्यास करेंगे, उससे आपको अपने जिस बाह्य स्वरूप का अनुभव होगा, वह उसका मलीन रूप होगा, उसका बीमार रूप होगा, अस्वस्थ रूप होगा। आपको उस मलीन, बीमार और अस्वस्थ रूप को शुद्ध बनाने की अपनी जिम्मेदारी रहेगी और इस जिम्मेदारी में पूर्णतः विजयी बनने के लिए, अपने आपको स्वस्थ करने के लिए आप ही को अपने अन्दर जलती हुई ज्वालारूपी इच्छा पैदा करनी होगी। यह संकल्प शक्ति व्यक्ति को स्वस्थ बनाती है।

जो व्यक्ति अपने अन्तर्मन से तैयार है, जिसने यह ठान लिया है कि ''मैं इस चिकित्सा के प्रत्येक चरण का अनुसरण करूंगा/करूंगी क्योंकि मुझे स्वस्थ होना ही है'' सिर्फ वही इस चिकित्सा में शत-प्रतिशत निरोगी बन पाएगा/पाएगी, यह हमारा विश्वास है।

सच्चिदानन्द स्वरूप का चिन्तन ही व्यक्ति को समस्याओं से मुक्ति दिलाता है। वर्तमान की समस्या केवल भावना, मन और बुद्धि की ही नहीं है। समस्याएं भीतर से भी जुड़ी हुई है। यह हमारा भौतिक जगत् है इसलिए आत्मा से निकलने वाली निर्मल रश्मियों से जैसे मन और भावधारा निर्मल होती है वैसे ही तेजस् केन्द्र से निकलने वाली रश्मियों से, शरीर के रोगों से मुक्ति पाने के लिए सहायता मिलती है। चेतना के बाह्य जगत् से सम्पर्क की जो खिड़कियाँ हैं, वे इन्द्रियां हैं। उनका हमारे बाह्य जगत से सम्पर्क होता है। सम्पर्क से बाहर पौद्गलिक पदार्थ में सुख खोजने लगते हैं, फिर समझते है कि मैं शब्द हूँ, रूप हूँ, घ्राण हूँ, स्वाद हूँ और स्पर्श हूँ। इन्द्रियों के पीछे मन उसका संकलन कर मजा लेता है। इन्द्रियाँ और मन से चेतना बाहर जाने पर वह आत्मा बहिरात्मा कहलाती है। बहिरात्मा को अन्तर्रात्मा बनाने के लिए प्रेक्षाध्यान में सर्वेन्द्रिय संयम मुद्रा का प्रयोग किया जाता है।

सर्वेन्द्रिय संयम मुद्रा

प्रयोग विधिः कानों को दोनों अंगूठों से बन्द करें। तर्जनी और अनामिका से आँखों को बन्द करते हैं। दाहिना नाक भी बन्द करें, मुंह शेष अंगुलियों से बन्द करें। नाक की हड्डी को दबाने से भीतर प्रकाश एवं तनाव रहित चित्त प्रकट होता है, यही है अन्तरात्मा जो राग-द्वेष रहित सत् स्वरूप में अभिव्यक्त हुई है। अन्तरात्मा में पुनः पुनः अवस्थिति से परमात्मा प्रकट होते हैं।

एक तर्क उठता है, क्या ऐसे परमात्मा मिल जाएगा? यदि हम तीन मिनट सद्-चिद्-आनन्द स्परूप में डूबे रह सकें और यदि इस समय का अन्तराल बढ़ाते जाएं तो परमात्मा प्राप्ति के लिए साधना की आवश्यकता नहीं रहेगी। तब आप स्वयं ही परमात्मा स्वरूप अनुभव करने लगेंगे।

प्रेक्षा चिकित्सा क्यों?

चित्त शुद्धि के लिए।

चित्त की शुद्धि क्या है?

वर्तमान क्षण में जीने के लिए जागरुकता से बढ़ता हुआ कदम।

प्रेक्षा क्या है?

राग और द्वेष से रहित वर्तमान का अनुभव।

प्रेक्षा क्यों?

'स्व अस्तित्व' के अनुभव के लिए।

'सद्-चिद्-आनन्द' की अनुभूति के लिए।

'मैं आत्मा हूँ और सच्चिदानन्द मेरा स्वरूप है' और अपने इस स्वरूप में सदैव रहने के लिए।

सदैव सच्चिदानन्द में कैसे जीएं?

सच्चिदानन्द के लिए व्यक्ति को शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक रूप से जागरुक होकर प्रेक्षा पद्धति का सतत अभ्यास करना होता है। जो स्वस्थ नहीं हो, उन्हें स्वस्थ बनने के लिए प्रेक्षा चिकित्सा और भाव चिकित्सा को स्वीकार करना होता है।

प्रेक्षा चिकित्सा और भाव : चिकित्सा क्यों और कैसे?

प्रेक्षा चिकित्सा : चित्त शुद्धि के लिए इसके चरण हैं

आसन सुखासन, पद्मासन, वज्रासन या सिद्धासन।

मुद्रा प्राण मुद्रा या प्रेक्षा मुद्रा।

मंत्र अर्हं,

चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा।

सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु।।

ध्यान सूत्र संपिक्खए अप्पगं मप्पएणं।

संकल्प मैं चित्त शुद्धि के लिए प्रेक्षाध्यान का प्रयोग कर रहा/रही हूं।

प्रेक्षा से संबंधित प्रयोगों को प्रेक्षा चिकित्सा पद्धति में उपयोग में लेते हैं। जैसे श्वास प्रेक्षा, शरीर प्रेक्षा, चैतन्य केन्द्र प्रेक्षा, कायोत्सर्ग और अनुप्रेक्षा आदि।

भाव चिकित्सा

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने ''तुम स्वस्थ रह सकते हो'' पुस्तक में 'भाव चिकित्सा (अध्यात्म चिकित्सा) के मूल तत्त्व नौ है' का मार्ग दर्शन किया है। ये नौ तत्त्व हैं

(1) श्वास और प्राण ऊर्जा का सम्यक् प्रयोग
(2) एकाग्रता
(3) शरीर प्रेक्षा
(4) अनुप्रेक्षा
(5) मंत्र ध्वनि (प्रकंपन ऊर्जा)
(6) कायोत्सर्ग
(7) आहार विवेक/अनाहार (उपवास)
(8) रंग चिकित्सा
(9) भाव चिकित्सा (अध्यात्म चिकित्सा)

भाव के द्वारा मन और इन्द्रियों का संचालन होता है। भाव बाह्य जगत् से दूर है। चेतना आत्मा और अन्तर जगत् के निकट है इसलिए अध्यात्म चिकित्सा का अर्थ है भाव चिकित्सा। भाव दोनों प्रकार के होते हैं शुद्ध, अशुद्ध। अशुद्ध भावों से लेश्या अशुभ, मलीन बनती है। मस्तिष्क में विकृति पैदा होती है मन चंचल होता है, निषेधात्मक चिंतन उभरने लगते हैं। मन और तन (शरीर) की रोग निरोधक क्षमता कमजोर हो जाती है। रक्त में श्वेत रक्त कणिकाओं की संख्या में कमी हो जाती है। व्यक्ति रुग्ण होने लगता है। शुद्ध भाव से लेश्या शुभ होती है। रंग निर्मल, चमकीले होते हैं। मस्तिष्क कार्य प्रणाली संतुलित होती है। मन एकाग्र बनता है। विचार सकारात्मक होते हैं। रोग-प्रतिरोधक क्षमता का विकास होता है। व्यक्ति स्वास्थ्य की ओर गतिशील होता है। आरोग्य का हेतु बनता है।

भाव चिकित्सा के साधक तत्त्व

मैत्री, क्षमा, करूणा, ऋजुता (सरलता) सन्तोष, अभय, सौहार्द, सहनशीलता, आनन्द, प्रमोद भावना, परगुणदर्शन आदि।

भाव चिकित्सा के बाधक तत्त्व

क्रोध, अहंकार, कपट, लोभ, भय, घृणा, वासना, ईर्ष्या, निन्दा, चुगली, द्वेष, झूठ, पाखण्ड, अन्याय, चोरी आदि।

भावों का रूपान्तरण कैसे होगा?

उदर शुद्धि ध्यान एवं भावना द्वारा।

आहार शुद्धि आहार विवेक द्वारा।

वाक् शुद्धि मौन द्वारा।

मन शुद्धि विचारों कि शुद्धि।

शरीर शुद्धि उषापान (सुबह उठते ही तांबे के बर्तन में रखा हुआ पानी पीने को उषापान कहा जाता है। इसी प्रकार दो चम्मच निंबूरस एक गिलास गर्म पानी के साथ पीने को अमृतपान कहा जाता है। मंडुकासन, अर्ध-शंखप्रक्षालन, शंखप्रक्षालन, आसन, प्राणायाम, मुद्रा, कायोत्सर्ग।

भाव शुद्धि मंत्र, जप, अनुप्रेक्षा और भावधारा विशुद्धि द्वारा

प्रेक्षा चिकित्सा और भाव चिकित्सा के अतिरिक्त प्रेक्षा आधारित चिकित्सा कौनसी है और उनका अभ्यास किस तरह होता है?

रूपान्तरण की प्रामाणिकता का एक पक्ष है, शरीर में यथोचित रक्त संचार, नाड़ी संतुलन और विशेषकर श्वेत रक्त कणिकाओं की संख्या में अभिवृद्धि।

प्रेक्षाध्यान से जुड़ी अहिंसक चिकित्साएं हैं

प्रेक्षा ओरा चिकित्साः रंगीन भाव धारा, जो शरीर के चारों और फैली हुई है। आभामण्डल को देखना, दोषों को दूर करना। आभामण्डल को निर्मल बनाना।

मंत्र चिकित्साः विविध ध्वनि आधारित मंत्रों का निर्माण एवं प्रयोग।

यंत्र चिकित्साः एक्युपंक्चर, एक्युप्रेशर, चुम्बकीय चिकित्सा, आकृति निर्माण त्रिकोण, षट्कोण आदि।

तंत्र चिकित्साः मंत्र आधारित रेखाचित्र, विशेष रंगों का प्रयोग, विशिष्ट चिह्न और संकेत। मंत्र और यंत्र का संयुक्त प्रयोग तंत्र है।

संचित ऊर्जा द्वारा चिकित्साः जैविक/अजैविक माध्यम से

इस प्रकार की पद्धितियां हमारे भारतीय संस्कृति का ही अंग हैं जिस पर आस्था होना आवश्यक है।

दादी माँ की महानता

अखिलेश कुमार

आज आकाश का मन बहुत दुखी हो रहा है। उसका मन सामने लगी बड़ी सी तस्वीर पर अटक गया। यह उसकी दादी माँ की तस्वीर थी। शांत, प्रसन्न चेहरे पर सौन्दर्य झलक रहा था। तस्वीर के ऊपर गेंदे के फूलों की मुरझाई हुई माला टंगी थी। आकाश ने खड़े होकर उस माला को उतार लिया, क्योंकि आज उसकी दादी मां का देहांत हुए एक वर्ष बीत चुका था। उसे अब उन्हें नई माला पहनानी थी। वह फोटो को बहुत देर तक एकटक निहारता रहा।

दादी शब्द दिमाग से टकराते ही अनेक अनुत्तरित सवाल उसके दिमाग में सागर की तरह हिलौरे लेने लगे। उन सवालों में से ही कुछ अहम् सवाल हैं आज लोगों का दादा-दादी पर से भरोसा क्यों उठता जा रहा है? क्या ढलती उम्र के साथ उनके अधिकार और भावनाओं को भी ढलना होता है? क्या उन पर भरोसा न करने वाले कभी दादा-दादी नहीं बनते या उनका बचपन दादा-दादी की गोद में नहीं बीता? ये लावारिस से सवाल उसके मन को कचोट रहे थे।

दादी माँ कहती थी उसकी मां को शादी के पांच साल बाद तक भी कोई बच्चा नहीं हुआ। संतान प्राप्ति हेतु दादी ने जादू-टोना, जंतर-मंतर किसी को भी तो नहीं छोड़ा।

एक बार किसी ने बताया कि किसी देवी की पूजा करने से हर मन्नत पूरी हो जाती है, तो दादी माँ ने आकाश की माँ के न चाहते हुए भी देवी मां की पूजा-आराधना कराई। उस पूजा-आराधना में तीन दिन का कड़ा उपवास करना पड़ता था। संयोग की बात थी कि उसकी मां गर्भवती हो गयी।

दादी माँ की खुशी का ठिकाना न रहा। वह खुली आंखों से सपने देखने लगी। रंग-बिरंगी कल्पनाएं करके वह पुलकित-सी हो जाती। उसको भी कोई दादी माँ कहकर आवाज लगाएगा, यह सोचकर उसका रोम-रोम झूम उठता।

जब आकाश का जन्म हुआ दादी माँ फूली नही समायी। उसके पैर धरती पर टिक नहीं पा रहे थे। महीनों तक वह बधाईयां बांटती रही। कई सप्ताह तक गीत गाने वालों का तांता लगा रहता।

दादी माँ की छत्रछाया में आकाश बड़ा होने लगा। वह कभी उसे लोरियां सुनाती तो कभी कहानियां। आकाश में अच्छे संस्कारों का बीज वपन करने में वह पूर्ण सजग थी।

आकाश अवरूद्ध गति से विकास करता जा रहा था। उसे दुनिया भर का अमन-चैन दादी माँ की गोदी में प्राप्त था। मनचाही वस्तु पाने के लिए दादी माँ को कहने मात्र की ही देरी होती। हर डॉट-डपट से बचने का सुरक्षा कवच था दादी माँ की गोद। इस भरपूर स्नेह में आकाश ने माता-पिता के प्यार की कभी जरूरत ही न समझी। उसके आकर्षण का केन्द्र बिन्दु एक मात्र दादी माँ ही थी।

इसी कारण आकाश की मां को कभी-कभी दादी माँ से ईर्ष्या हो जाती। मां से अधिक दादी का आकर्षण उसे अपना सरासर अपमान प्रतीत होता। साथ ही दादी माँ के बेहद लाड़-प्यार से बच्चे के बिगड़नें की आशंका ने भी उसके दिल में घर कर लिया था। वह समय-समय पर आकाश के पिता के कान भरने लगी और उसके पिता ओमप्रकाश को भी दादी माँ की गोद में आकाश का विकास अवरूद्ध होता प्रतीत हुआ। धीरे-धीरे वे उसे दादी माँ से दूर रखने का हर संभव प्रयास करने लगे।

आकाश को दादी माँ के पास देखते ही उनकी दृष्टि से सारा प्यार गायब हो जाता। उनकी एक घुड़की से आकाश की सांस अन्दर की अन्दर व बाहर की बाहर अटक कर रह जाती।

नजरें बचाकर दादी माँ उसे इतना प्यार करती कि कुछ ही क्षणों में वह सामान्य हो जाता। एक दिन उसके पिता दादी माँ से कह रहे थे आकाश को अच्छी पढ़ाई करने के लिये गांव छोड़कर शहर ले जाना होगा।

अपने से आकाश को दूर करने के इस बहाने को दादी माँ भली-भांति समझती थी। वे शहर चले गए। दादी माँ दादा की देखभाल के लिए गांव में ही रही।

उसके बाद उनकी जिन्दगी में अनेक उतार-चढ़ाव आए। वह कभी दादी माँ के पास और कभी पिता जी के पास डोलता रहा। उसकी मां ने आग लगाकर आत्महत्या कर ली। पिता जी ने दूसरी शादी की पर मात्र 5 महिने में ही उसकी नई मां ने तलाक दे दिया। इस दौरान आकाश कई बार दादी माँ के पास रहा।

फिर उसके पिता ने एक दूसरे शहर में नौकरी की और आकाश का दाखिल भी वहीं करवा दिया। घर का सारा काम दैय्या पर था।

दशहरे और दीपावली का समय। आकाश को दादी को लेने के लिए शहर जाना था। वह रवाना हो गया।

आखिर कब तक तुम मुझे छुपाकर रखोगे? कब तक मैं तुम्हारी पत्नी होकर भी नोकरानी बनी रहूंगी? इसी घर का एक बच्चा हुकूमत से रहता है और दूसरा नोकरानी का पल्लू पकड़े सहमा-सहमा। यह सब मैं कब तक देखती

रहूंगी?

तुम क्यों नहीं अपने परिवार को बता देते कि मैं तुम्हारे घर की नोकरानी नहीं आपकी शादीशुदा पत्नी हूं। यह बच्चा तुम्हारा अपना है।

अनीता! मैंने तुम्हें पहले ही कहा था, जब तक आकाश की शादी न हो जाए तुम्हें इसी रूप में रहना होगा। बस, थोड़े दिन और धैर्य रख लो अनीता! थोड़े दिन और.....

पर अभी तो उसे दो साल और पढ़ना है। फिर न जाने कब उसकी शादी होगी? मेरे धैर्य का बांध टूट रहा है ओमप्रकाश! तुम उसे दादी के पास क्यों नहीं भेज देते? अनीता अधीर होकर कहते-कहते सुबक पड़ी।

अनीता कृपया तुम मुझे समझने की कोशिश करो। आकाश को दादी के पास न रखने के लिए ही तो मैने तुमसे शादी की। और फिर इस घर में जो कुछ है तुम्हारा और वीनू का ही है। मुझे मेरा वायदा याद है। तुम घबराओ मत। थोड़ा-सा धैर्य और बटोर लो। ओमप्रकाश ने एक मुस्कान के साथ अनीता को विश्वास दिलाया।

आकाश सांस रोक कर सब कुछ सुनता रहा। उसे लगा संसार चक्र की भांति घूम रहा है। वह टिकिट घर पर ही भूल गया था। उसे लेने ही आया था। पर. .... अब वह घर में नहीं जा सकता और दूसरी टिकिट खरीद लेगा, सोचकर वह उन्हीं पांवों से पुनः लौट गया।

यह नोकरानी मेरी मां है! यह वीनू मेरा भाई है। यह अनीता मेरे पिता की शादीशुदा पत्नी है? क्या यह सब सच है? यदि हाँ तो पिताजी इसे छुपाना क्यों चाहते हैं? शायद इसलिए कि यह पत्नी भी टिक पाएगी या नहीं ...। वे मुझे दादी के पास नहीं रख सकते, पर क्यों? दादी ने उनका ऐसा क्या बिगाड़ दिया है? आकाश के दिमाग में विचारों का तूफान उठ रहा था। ट्रेन के साथ केवल पेड़-पौधे ही नहीं आकाश का सारा संसार भाग रहा था। वह भी कहीं भाग जाना चाहता है ...

दो दिन बाद आकाश दादी माँ को लेकर लौट आया। पर अब वह सदा की भांति सामान्य न था। वह कुछ निर्णय कर लेना चाहता था। उसके पिता काम पर निकल चुके थे।

आकाश ने कमरे में छुपकर रिवाल्वर में कारतूस भर लिया, पर उसकी आत्मा कह रही थी सोच लो आकाश! एक बार फिर सोच लो! दादी माँ को कैसे मुंह दिखाओगे। उसने जिन संस्कारों का बीजारोपण किया है, उन्हें तुम तहस-नहस कर रहे हो। आकाश ने अपने दिमाग को झटका। मैं कायर हूं। मुझे ऐसा नहीं सोचना चाहिए। मैं जो कर रहा हूं ठीक ही कर रहा हूं। दादी माँ क्या जाने, आगे क्या होना है। उसके जबड़े भींच गए। इस नोकरानी ने हमारे घर का सत्यानाश कर दिया है। मैं उन दोनों को जिन्दा नहीं छोड़ूंगा।

अनीता दादी माँ और आकाश का दूध नाश्ता टेबल पर लगा रही थी।

आकाश ने अपने हाथों से रिवाल्वर उसकी तरफ किया ही था ... पर, यह क्या? सामने दादी माँ खड़ी है। टेबल को झटक कर शीघ्रता के साथ दादी माँ ने अनीता को अपने पीछे कर लिया। कांच के ग्लास टुकड़े-टुकड़े होकर दूध के साथ बिखर गए।

आकाश! यह तू क्या कर रहा है। तुम्हें तो ऐसा सोचना भी नहीं चाहिए। अपने आप को संभाल बेटे! क्या इस घर की यही मान-मर्यादा है? दादी माँ ने हाथ फैलाकर अनीता को और सुरक्षित करते हुए कहा।

हट जाओ दादी माँ! इसके आगे से हट जाओ! तुम इसे नहीं जानती। यह जहरीली नागिन है। मैं इसे जिन्दा नहीं छोड़ूंगा। तुम बीच में मत आओ। कृपया! हट जाओ आगे से, आकाश पागलों की भांति चीख रहा था .....।

मैं सब कुछ जानती हूं आकाश! सब कुछ! तुम मेरे पोते होकर अपनी मां और भाई के हत्यारे कहलाओगे। क्या मेरी शिक्षाओं का यही परिणाम होना है। मेरी गोद में खेलने का यही फल निकलना है। दादी माँ धरती के समान सहिष्णु प्रतीत हो रही थी। आकाश की आंखें फटी की फटी रह गई। वह बड़बड़ाया-दादी माँ सब कुछ जानती हैं। अनीता मेरे पिता की शादीशुदा पत्नी है। यह भी कि यह बच्चा मेरे पिता जी की देन है पर दादी ने यह सब कैसे जाना? और जानकर भी इतनी गंभीर कैसे रह गई? उसके हाथ शिथिल हो रहे थे। वह रिवाल्वर फेंक कर दादी से लिपट गया। मुझे माफ कर दो दादी माँ! मुझे माफ कर दो, उसकी आंखों से आंसू बह रहे थे।

आकाश! मेरे बेटे! इन सब परिस्थितियों को धैर्यपूर्वक झेलकर ही कुल की मर्यादा की सुरक्षा हो सकती है। हथियार उठाना तो कायरों का काम है। वीरों की संस्कृति हृदय परिवर्तन की होती है। चलो, उठो और अनीता से माफी मांगो।

नहीं मांजी! नहीं। ऐसा मत कहिए। माफी तो मुझे मांगनी चाहिए। मांजी, आप महान हैं। मांजी! मैं महापापिनी हूं। आपने सब को बचा लिया है। वरना ... वरना आज अनर्थ हो जाता। वह फूट-फूट कर रोने लगी।

दादी माँ ने उसे संभाला तो वह कहने लगी-यह दूध आपने बिखेर दिया वरना आज महापाप हो जाता। मैं अपने स्वार्थ में अंधी हो गयी थी। मैंने इसमें जहर मिला दिया था। वह रोते-रोते बेसुध सी हो रही थी। मांजी! आप महान हैं!

दादी माँ की महानता से आकाश का सीना फूलने लगा। ओमप्रकाश को भी अपने अपराध का बोध हो रहा था। इतने में 2 वर्ष का मुन्ना दादा-दादा कहकर आकाश के पैरों में लिपट गया। आकाश ने उसे उठाकर प्यार से गोद में बिठा लिया। उसे लगा समय की रफ्तार पहाड़ी नदी के वेग से भी ज्यादा तेज होती है। दादी माँ का स्वर्गवास हुए तीस साल हो रहे हैं। कल का आकाश आज स्वयं दादा बन गया है, दादी माँ के दिल को वह अब जितनी गहराई से पढ़ सकता है शायद पहले नहीं। उसने दादी माँ के फोटो को उतारकर छाती से लगा लिया।

प्रस्तुति : पूनम कुमारी, 72, कैलाश पार्क–अर्थला, गाजियाबाद (उ.प्र.)

बढ़ें संयम पथ पर

Golchha Organisation
INDUSTRY • COMMERCE • WELFARE

लोकमान्य गोल्छा
अध्यक्ष
गोल्छा ऑर्गेनाइजेशन
एवं
समस्त गोल्छा परिवार

गोल्छा हाउस, काठमांडो (नेपाल)
फोन नं. : 4250001/4249939 (D)
फैक्स : 00977-1-4249723

वर्तमान में सबसे बड़ी समस्या है धर्म : आचार्य महाप्रज्ञ

श्रीडूंगरगढ़, 23 मार्च। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ ने जनमेदिनी को संबोधित करते हुए कहा वर्तमान जगत् की सबसे बड़ी समस्या है धर्म। दुनिया में भुखमरी से लेकर विधान सभा, लोकसभा तक समस्या ही समस्या है। आज धर्म भी बड़ी समस्या बनता जा रहा है। नैतिकता को नजर अन्दाज करने के कारण धार्मिक कहलाने वाला व्यक्ति अधार्मिक, अप्रमाणिक कार्य ज्यादा करता है। आज धर्म के मूल स्वरूप को ही बदल कर रख दिया है जिससे धर्म के प्रति युवाओं में अनास्था पैदा हो रही है। आज सबसे ज्यादा जरूरत है धार्मिक लोगों में नैतिकता के भाव पुष्ट हों और उसके बाद सत्ता की बागडोर थामने वाले लोगों में नैतिकता आये तब भ्रष्टाचार उन्मूलन की बात सार्थक सिद्ध होगी।

आचार्य महाप्रज्ञ ने अणुव्रत को धार्मिक जगत् की सबसे बड़ी क्रांति बताते हुए कहा पद की लालसा, धन की लालसा यह मानव की कमजोरियां हैं, दुर्बलताएं हैं। अगर इन कमजोरियों को दूर कर सकता और मानव का कोई परिष्कार कर सकता है तो वह अणुव्रत है। नैतिकता के साथ धन का अर्जन होता तो आज कोई भी भूखा नहीं रहता। इस अवसर पर आचार्यश्री ने सरकार की तरफ से नैतिकता की कोई ब्रांच न खोले जाने की चर्चा की और अणुव्रत समाज को एकजुट होकर भ्रष्टाचार उन्मूलन का कार्य करने की प्रेरणा दी।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा पूजा, उपासना से ज्यादा नैतिकता, सच्चाई को महत्त्व दें। सच्चाई का धर्म सबसे बड़ा धर्म होता है। कार्यक्रम में अणुव्रत समिति सूरत से जुड़े पटेल समाज के कार्यकर्ता रमेश एन. पटेल, सुमन भाई पटेल, बाबू भाई पटेल एवं विनोद बांठिया ने वहां चलने वाली समाज उत्थान गतिविधियों की जानकारी दी। संचालन मुनि दिनेशकुमार ने किया।

250 वां अभिनिष्क्रमण दिवस

श्रीडूँगरगढ़, 24 मार्च। आचार्य महाप्रज्ञ ने आचार्य भिक्षु के 250 वें अभिनिष्क्रमण दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित सार्द्ध द्विशताब्दी समारोह को संबोधित करते हुए कहा सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक आदि प्रत्येक संगठन को तेजस्वी बनाने के लिए साधना जरूरी है। आज हमारे लिए आत्मनिरीक्षण का दिन है। जो साधना आचार्य भिक्षु ने 249 वर्ष पूर्व की थी। ज्ञान, दर्शन चरित्र, तप और वीर्य की जो आराधना की

हर संगठन में जरूरी है साधना

थी वह आज भी संघ में कायम है या नहीं इस पर आत्मचिंतन जरूरी है। क्योंकि केवल अतीत पर भविष्य को उज्जवल नहीं बनाया जा सकता। वर्तमान में भी साधना होगी तभी स्वर्णिम अतीत को सुरक्षित रख सकेंगे और भविष्य को सुन्दर बना सकेंगे।

उन्होंने शिष्य समुदाय को विशेष तौर पर ध्यान देने की प्रेरणा देते हुए कहा आचार्य भिक्षु ने जो ज्ञान की आराधना की जो दर्शन की आराधना की, जो चरित्र की आराधना की क्या वह आज भी वैसी चल रही है। भिक्षु स्वामी ने तप और वीर्य की आराधना की, उसकी जगह वर्तमान में ऐसा तो नहीं हो रहा है कि आलस्य, सुविधावाद और प्रमाद में समय जा रहा है। संयम की साधना जिस संघ में चलती है वह वर्तमान में प्राणवान रहता है।

आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कबीर की तरह आचार्य भिक्षु की साधना सगुण वाणी की साधना थी। सगुण भाषा बोलने वाला क्रांतिकारी पुरुष होता है। हम आज के दिन संकल्प लें कि हमारा संयम अनुत्तर रहेगा। चाहे कैसा भी कष्ट आ जाये पर संयम अविचल रहेगा। आज के पावन दिन को मनाने की सार्थकता केवल गुणगान, स्तुति से नहीं होगी बल्कि उनके दर्शन और जीवनपथ पर चलने का संकल्प लेने से होगी। आचार्य कालुगणी ने जो विकास के ज्ञान की आराधना के बीज वपन किये उनको आचार्य तुलसी ने पल्लवित किया और जिस प्रकार उन्होंने अभिनिष्क्रमण के अर्थ को समझा वह संघ को वर्तमान युग में तेजस्वी बनाने वाला सिद्ध हुआ।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा आज रामनवमीं का दिन है। हमारे यहां जैन रामायण पर जितना व्याख्यान किया जाता है और जो सरसता एवं रोचकता होती है वह महत्त्वपूर्ण है। आज के दिन ही आचार्य भिक्षु ने पूर्व नियोजित ढंग से अभिनिष्क्रमण किया। इसमें भी कुछ रहस्य है जिसको समझने की जरूरत है। आचार्य भिक्षु ने आचार विचार के आधार पर अभिनिष्क्रमण किया और एक नई क्रांति की।

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने कहा अभिनिष्क्रमण नहीं कर सकता है जो निर्भयी, साहसी और लक्ष्य के प्रति समर्पित होता है। आचार्य भिक्षु ने महावीर की वाणी के आधार पर सत्य की खोज करने के लिए अभिनिष्क्रमण किया। सत्य की खोज वही कर सकता है जो सुख सुविधाओं को त्यागता है। आचार्य भिक्षु द्वारा 249 वर्ष पूर्व प्रदत्त दर्शन वर्तमान में भी बहुत प्रासंगिक है।

कार्यक्रम में मुनि दिनेशकुमार, साध्वी विमलप्रज्ञा, साध्वी अणिमाश्री, साध्वी समताश्री, साध्वी शशीप्रभा, साध्वी कुसुमप्रभा, साध्वी मैत्रीप्रभा, समणी सत्यप्रज्ञा ने आचार्य भिक्षु के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला।

कन्हैयालाल छाजेड़ ने आचार्य भिक्षु से जुड़े इस पावन दिन पर सामाजिक स्तर पर नई क्रांति लाने का अनुरोध किया। महिला मंडल ने गीत की प्रस्तुति दी। संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

पहला सुख निरोगी काया

श्रीडूँगरगढ़, 19 मार्च। आचार्य महाप्रज्ञ ने जैन धर्म की गीता 'संबोधि' पर बोलते हुए कहा पहला सुख निरोगी काया प्रचलित है परन्तु आदमी खाने में सुख खोज रहा है। वह क्षणिक सुख के पीछे कुछ ऐसा खा लेता है जो लम्बे समय तक दुख देने वाला साबित होता है। वास्तव में वह सुख होता है जिसका भोग करने के बाद दुख पैदा न हो।

आचार्यप्रवर ने कहा मोह की बीमारी से ग्रस्त आंखें वास्तविक सुख को देख नहीं पाती हैं। जैसा होता है वैसा नहीं देखती। मोह के आवेश के कारण आंखे दुख को सुख और सुख को दुख मान लेती हैं। उपवास करने वाले दुख को स्वीकार नहीं कर रहे हैं। बल्कि वे भीतर का सुख प्रकट कर रहे हैं अगर भीतर का सुख प्रमुख न हो तो आदमी उपवास नहीं कर सकता।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा हमारे अन्दर ज्ञान का प्रकाश और सदाचार की सौरभ होनी चाहिए। सम्यक् ज्ञान और सम्यक् आचार हो तो जीवन अच्छा बन जाता है। ज्ञान मिथ्या है तो आचार भी मिथ्या हो जाता है। उन्होंने गीता के 18 अध्याय में प्रयुक्त ज्ञान के प्रकारों में राजस् ज्ञान पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यथार्थ का ज्ञान कराने वाला सात्विक ज्ञान है और जो राग द्वेष युक्त ज्ञान कराता है वह राजस् ज्ञान की श्रेणी में आता है।

वास्तविक सुख की खोज करें : आचार्य महाप्रज्ञ

श्रीडूँगरगढ़, 17 मार्च। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ ने संबोधि ग्रंथ के प्रथम अध्याय के संदर्भ में जनमेदिनी को संबोधित करते हुए कहा कोई भी समझदार आदमी सुख को छोड़ता नहीं है। हम जिसे सुख मानते हैं वह वास्तव में सुख नहीं होता है। पदार्थों से मिलने वाले सुख के परिणाम पर दृष्टिपात करते हैं तो वह हमें दुःख पैदा करने वाला लगता है। जब इसका ज्ञान हो जाता है तो व्यक्ति पदार्थों के सुख को छोड़कर वास्तिवक सुख की खोज करता है और कष्ट के मार्ग को अपनाता है।

उन्होंने आगे कहा आदमी जब पदार्थों के सुखों में आसक्त हो जाता है तो समस्या पैदा हो जाती है। वह उसको प्राप्त करने के लिए अपने कर्त्तव्य को भूल जाता है। विद्यार्थी का कर्त्तव्य अध्ययन करना है, परन्तु वह टीवी को देखने और सुनने में आसक्त हो जाता है और घंटों-घंटों उसमें ही लगा रहता है। इस प्रकार वह अपने कर्त्तव्य से च्यूत हो जाता है। जब आसक्ति होती है तो कर्त्तव्य का बोध नहीं रहता। इस आसक्ति से बचने के लिए कष्ट को सहन करना जरूरी होता है। जिस तरह से एक सैनिक को देश की रक्षा करने के लिए कष्टों को सहन करना होता है वैसे ही आत्मा की सुरक्षा करने के लिए भी कष्टों को सहन करना जरूरी है और इन्द्रियों से परे जाने की जरूरत है। जो व्यक्ति हमेशा भोग विलास में रहता हो उसकी कभी धर्म रूचि नहीं हो सकती। धर्म में रूचि उसकी होगी जो कष्ट को सहन करना जानता है। त्याग करना जानता है।

उन्होंने कहा कि महाराणा प्रताप सुख में आसक्त होते तो वे जंगल की खाक नहीं छानते और न ही घास की रोटियां खाते। उनको पदार्थों के सुख से भी बड़ा आजादी का सुख लगा। इसलिए उन्होंने कष्ट को सहन किया। युवाचार्य महाश्रमण ने गीता और उत्तराध्ययन पर तलुनात्मक प्रवचन किया।

दुख का स्रोत है कामना

आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा दुख का स्रोत कामना है। जब कुछ प्राप्त करने की कामना कर ली जाती है और वह प्राप्त नहीं होती है तो दुख पैदा हो जाता है। कामना जितनी प्रबल होगी उतना ही दुख ज्यादा होगा। आज विश्व में जितनी भी बीमारियां हैं वे कामना की अति के कारण ज्यादा खतरनाक बनती जा रही हैं। कामना के कारण तनाव बढ़ता है और तनाव से हार्ट, हाई बल्डप्रेशर, सुगर आदि बीमारियां हो जाती है। जिसको सबसे ज्यादा धनी और शक्तिशाली राष्ट्र माना जाता है उसी राष्ट्र में डिप्रेशन से ग्रस्त लोग ज्यादा रहते हैं।

आचार्यश्री ने संबोधि ग्रंथ पर प्रवचन में भगवान महावीर से मुनि मेघकुमार द्वारा दुख के स्रोत के विषय में पूछे गये प्रश्न के उत्तर में महावीर के सूत्र को प्रस्तुत करते हुए कहा कि शारीरिक और मानसिक दो प्रकार की बीमारियां होती है। चाह, कामना के कारण मानसिक बीमारियां बढ़ती है और जब मन स्वस्थ नहीं रहता है तो शरीर पर भी असर होता है।

उन्होंने विजय पाने के लिए वीतरागता की साधना को जरूरी बताते हुए कहा सब राष्ट्र का संचालन अपने-अपने अधिकृत व्यक्ति करते हैं, कोई भी संपूर्ण विश्व पर शासन नहीं करता परन्तु राग-द्वेष ऐसे हैं जो पूरे विश्व पर एकक्षत्र शासन करते हैं और इनको कोई चुनौती देने वाला कोई नहीं है। एक वीतरागता में ही ऐसी शक्ति है जो इनको चुनौती दे सकता है। जितनी वीतरागता बढ़ेगी उतनी ही कामना कम होगी और दुख नष्ट होता जायेगा।

युवाचार्य महाश्रमण ने ज्ञानशाला प्रोत्साहन कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा बच्चों के सामने एक और स्कूली अध्ययन है तो दूसरी और आध्यात्म एवं संस्कार निर्माण के उपक्रम में भाग लेना भी है। ज्ञानशाला के माध्यम से बालपीढ़ी में सद्संस्कार भर कर भविष्य को सुन्दर बनाने का महत्वपूर्ण कार्य होता है। जब बचपन में संस्कार निर्माण हो जाता है तो जीवन सुन्दर बन जाता है, अन्यथा उसमें उबड़ खाबड़ रह जाती है। युवाचार्यश्री ने ज्ञानशाला के संचालन में लगे सभी कार्यकर्ताओं की सराहना करते हुए बच्चों को संस्कारित करना जरूरी बताया।

ज्ञानशाला के संचालन में सहयोगी महाप्रज्ञ जन कल्याण केन्द्र के पदाधिकारियों एवं अन्य सहयोगियों का साहित्य द्वारा सम्मान किया गया।

भ्रष्टाचार मानवता के लिए अभिशाप

अहमदाबाद, 27 मार्च। साध्वी कंचनप्रभा ने गुजरात राज्य अणुव्रत समिति द्वारा भ्रष्टाचार विरोधी बेनर के लोकार्पण समारोह को संबोधित करते हुए कहा भ्रष्टाचार न केवल देश के लिए बल्कि मानवता के लिए अभिशाप है। भ्रष्टाचार बढ़ने का आंतरिक कारण है अति लोभ एवं बाहरी कारण हैं परिस्थिति, स्पर्धा, आर्थिक बोझ एवं दिखावे की मनोवृत्ति। गुजरात राज्य अणुव्रत समिति द्वारा प्रकाशित इस बेनर में बहुत सुंदर संदेश है भ्रष्टाचार तभी मिट सकता है, जब व्यक्ति, समाज और राष्ट्र में संयम का विकास हो। आदमी आकांक्षा को एकदम से छोड़ नहीं सकता, किन्तु उसे कम कर सकता है। पदार्थ का संग्रह कम और गलत तरीकों से धन अर्जन करने की मनोवृत्ति भी समाप्त हो तो भ्रष्टाचार पर लगाम दी जा सकती है। साध्वी मंजूरेखा ने अणुव्रत पर महत्वपूर्ण विचार रखे। साध्वी उदितप्रभा, साध्वी निर्भयप्रभा एवं साध्वी चेलनाश्री विशेष रूप से उपस्थित थी।

गुजरात राज्य अणुव्रत समिति के अध्यक्ष जवेरीलाल संकलेचा ने कहा अणुव्रत महासमिति के निर्देशानुसार गुजरात में भ्रष्टाचार के विरोध में जनचेतना जागृत करने के उद्देश्य से अहमदाबाद के रेलवे स्टेशन, एस.टी. स्टैण्ड, मार्केट, चौराहे पर बेनर लगा रहे हैं, तो बाहर भुज, गांधीधाम, डीसा, पालनपुर, सूरत, उधना इत्यादि जगहों पर भी भेज रहे हैं। स्थानीय सभाध्यक्ष सज्जनराज संघवी, मंत्री नरेन्द्र सुराणा, कांकरिया सभाध्यक्ष उम्मेद कोचर, मंत्री अशोक चौपड़ा, उपाध्यक्ष नरपत लूणिया, अशोक लूणिया, महिला मंडल की अध्यक्षा सावित्री लूणिया विशेष रूप से उपस्थित रहे। आभार ज्ञापन अशोक दूगड़ ने किया।

रतनगढ़ में प्रभात फेरी

रतनगढ़, 29 मार्च। गोलछा ज्ञान मंदिर में भगवान महावीर जन्मोत्सव का कार्यक्रम उत्साहपूर्वक मनाया गया। इससे पूर्व प्रातः 8 बजे समाज के प्रबुद्ध व्यक्तियों, महिलाओं एवं कन्या मंडल के तत्वावधान में जय घोषों के साथ प्रभात फेरी नगर के प्रमुख मार्गों से निकाली गयी। प्रभात फेरी के बाद समारोह का आयोजन हुआ। इस अवसर पर अणुव्रत समिति रतनगढ़ द्वारा पूर्व में आयोजित की गयी अखिल भारतीय स्तर पर निबंध प्रतियोगिता के विजेताओं को प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि राजकुमार रिंणवा थे। ब्रह्मकुमारी केन्द्र की प्रभारी बहन ब्रह्मकुमारी सुप्रभा, मो. अनवर कुरेशी, ओमप्रकाश इंदौरिया इत्यादि विद्वानों ने युग पुरुष महावीर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला। साध्वी संयमश्री, साध्वी मौलिकप्रभा ने भी अपने विचार रखे। संचालन साध्वी सहजप्रभा ने किया।

भ्रष्टाचार विरोधी एवं पर्यावरण जागरूकता रैली

उदयपुर, 7 मार्च। अणुव्रत समिति उदयपुर एवं नारायण सेवा संस्थान उदयपुर के संयुक्त तत्वावधान में विशाल व्यसनमुक्ति, पर्यावरण जागरूकता एवं भ्रष्टाचार विरोधी राष्ट्रीय रैली नारायण सेवा संस्थान सेक्टर-4 से प्रारंभ होकर मुख्य मार्गों से नागरिकों द्वारा नशा, भ्रष्टाचार एवं पर्यावरण के प्रति जागरुकता के नारे लगाते हुए चल रहे थे। समिति के प्रचारमंत्री राजेन्द्र सेन ने कार्यक्रम की जानकारी दी।

रैली में आगे केन्द्रीय कारागृह का बैण्ड मधुर धुन बजाता हुआ चल रहा था। उसके पीछे तुलसी निकेतन के बच्चे, अणुव्रत समिति के सदस्य, सनराइज एवं मास नर्सिंग कॉलेज के छात्र तथा नारायण सेवा संस्थान के कर्मचारी, हीरो होण्डा के कर्मचारी, समाज के गणमान्य नागरिक और देश के 28 राज्यों से आये नागरिकों जिसमें मध्यप्रदेश, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, झारखण्ड, उडीसा, प. बंगाल, बिहार इत्यादि राज्यों से आये नागरिकों ने भाग लिया।

रैली के पश्चात आयोजित संगोष्ठी में अणुव्रत समिति के अध्यक्ष गणेश डागलिया ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि व्यक्ति को व्यसनमुक्ति जीवन जीना है, रिश्वत नहीं देना है, पर्यावरण की शुद्धता बनाए रखना है तभी यह आयोजन सफल हो सकता है।

अणुव्रत महासमिति दिल्ली के पूर्व अध्यक्ष डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने कहा मनुष्य को स्वस्थ रहना है, तो नशे से दूर रहना होगा। पर्यावरण को संरक्षित करना होगा और अधिक से अधिक पेड़ लगाने होंगे। हमें देश को स्वच्छ प्रशासन देना है तो इसके लिए हमें भ्रष्टाचार के विरुद्ध आवाज उठानी होगी। मास नर्सिंग कॉलेज के संस्थापक मनमोहन राज सिंघवी, सनराइज नर्सिंग कॉलेज के निदेशक हरीश राजानी, हीरो होण्डा के निदेशक शब्बीर मुस्तफा, समिति के उपाध्यक्ष सवाई लाल पोखरना, डॉ. रंगलाल धाकड़, यू.के. के भगवानदास, नारायण सेवा संस्थान के प्रशांत अग्रवाल, कमला अग्रवाल, डॉ. यशवंत कोठारी, डॉ. निर्मल कुणावत ने भी अपने-अपने विचार व्यक्त किए।

रैली को सफल बनाने में रामप्रसाद गुप्ता, जमनालाल दशोरा, एच.एल. कुणावत, अरविंद चित्तौड़ा, पुरुषोत्तम जोशी, सुरेश सियाल, डॉ. जयराज आचार्य, डॉ. शंकरलाल इंटोडिया, राकेश चित्तौड़ा, भंवर भारती, जयकिशन चौबे, सैयद खुर्शीद, जफर जिलानी, नजमा मेवाफरोश, ममता दशोरा सहित अनेक पदाधिकारियों का सहयोग रहा।

भ्रष्टाचार विरोधी संगोष्ठी

भीलवाड़ा, 21 मार्च। अणुव्रत समिति पुर-भीलवाड़ा एवं सभा के तत्वावधान में भ्रष्टाचार विरोधी संगोष्ठी का आयोजन हुआ। समिति के मंत्री नारायण बन्धु बैरवा ने भ्रष्टाचार संबंधित कार्यक्रम की जानकारी दी। भगवतीलाल बोरदिया ने स्वागत किया। बैरवा बंधुओ ने अणुव्रत गीत का संगान किया। संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए समाजसेवी सोहनलाल पलोड़ ने बताया भारत की आजादी के साथ ही भ्रष्टाचार की नींव लग गई थी। किन्तु देश के विकास के साथ ही भ्रष्टाचार पनपता गया। वर्तमान में राष्ट्र का भविष्य खतरे में है। हमें व्यक्तिशः आकांक्षाओं, स्वार्थवृत्ति व लोभ वृत्ति पर अंकुश लगाना होगा। 'यह संकल्प करें'।

कांग्रेस नेता कालूराम पारीक ने कहा हमें स्वयं को बदलना होगा। केवल विचारों तक नहीं अपितु भ्रष्टाचार को मिटाने के लिए हम सबको अणुव्रत आंदोलन से जुड़ना होगा। गणेश चोरड़िया ने कहा सुधरे व्यक्ति समाज व्यक्ति से राष्ट्र स्वयं सुधरेगा, यह विचार मुखरित हो। युग निर्माण के लादूलाल टेलर ने आचार्य महाप्रज्ञ एवं आचार्य श्रीराम शर्मा को युग प्रवर्तक बताया। हम स्वयं रिश्वत देना-लेना बंद करें। हम स्वयं बदलेंगे तभी भ्रष्टाचार मिटेगा और मनुष्य में आंतरिक बदलाव आयेगा। ज्ञान कोठारी ने कहा अहिंसा समवाय की तरह ही भ्रष्टाचार उन्मूलन के लिए राजनेता, अधिकारी व जनता का एक समवाय गठित हो। आजाद एवं शिवकुमार बैरवा ने भी अपने विचार रखे।

● रा.उ.मा.वि. में आयोजित शिक्षक गोष्ठी में विद्यालय के प्रधानाचार्य बी.एल. डीडवानिया ने कहा भारतीय नागरिक भ्रष्टाचार रूपी विषैले नाग की गिरफ्त में हैं। अणुव्रतों के द्वारा युग की धारा को बदला जा सकता है। आवश्यकता है मनोभावों को बदलने की। प्रधानाचार्या मनोहर शर्मा ने कहा भ्रष्टाचार रूपी नाग को हटाने के लिए आज जरूरत है भावनात्मक परिवर्तन की।

इस अवसर पर व्यवस्थापक जीवन सिंह बोलिया, सत्यदेव शर्मा ने कहा व्यवहारनिष्ठ और भ्रष्टाचार मुक्त समाज की स्थापना के लिए करुणा, मैत्री, सहिष्णुता एवं सदाचार की भावना जरूरी है। सत्रान्त वाकपीठ में पर्यवेक्षक भगवानलाल बंशीवाल ने विचार रखे। बैरवा बंधुओं ने बदले युग की धारा का गान किया एवं अणुव्रत से संबंधित सामग्री का वितरण किया। आभार व्यक्त देवीलाल बैरवा ने किया।

अहिंसा रैली

कोलकाता, 28 मार्च। साध्वी कनकश्री के सान्निध्य में युग पुरुष महावीर जयंती का भव्य आयोजन कोलकाता सभा के तत्वावधान में महासभा भवन में हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता महासभा के अध्यक्ष चैनरूप चिंडालिया ने की। प्रधान अतिथि राजेन्द्र बच्छावत थे। पश्चिम बंगाल विधानसभा में प्रतिपक्ष के नेता पार्थ चटर्जी विशेष रूप से उपस्थित थे। प्रातः 8 बजे दक्षिण हावड़ा, उत्तर हावड़ा, गिरीश पार्क, मित्र परिषद् भवन से प्रारंभ होकर चार अहिंसा रैलियां हावड़ा ब्रिज, कलाकार स्ट्रीट, विवेकानंद रोड़, सेंट्रल एवेन्यू होती हुई महात्मा गांधी रोड के संगम स्थल पर पहुंची। उक्त अहिंसा रैली में कोलकाता, हावड़ा, उत्तरपाड़ा, बाली-बेलूर, लिलुआ, हिन्द मोटर, रिसड़ा आदि क्षेत्रों के बच्चे, महिलाएं एवं पुरुषों ने भाग लिया और महावीर के जन-कल्याणकारी संदेशों की पट्टियां हाथों में लेकर प्रस्तुति दी। अहिंसा रैली तीन दिशाओं से शुरू हुई, जिसमें लगभग 2000 से अधिक श्रद्धालुओं की उपस्थिति रही।

साध्वीश्री ने समाज में व्याप्त कुरीतियों महिला शोषण, संप्रदायवाद, प्रांतवाद, जातिवाद, भ्रष्टाचार पर प्रहार किया तथा महावीर के "जियो और जीने दो" का संदेश देकर भाईचारे, प्रेम, संयम से रहने तथा अपनी मंगल कामनाएं प्रेषित की। धन्यवाद ज्ञापन नरेन्द्र मुणोत ने व संयोजन भवरलाल सिंघी ने किया।

हिंसामुक्त समाज के लिए शांति जरूरी

कोयम्बदूर, 21 मार्च। अणुव्रत महासमिति के संरक्षक डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने तिरुपुर में तेरापंथी सभागार के उद्घाटन अवसर पर कहा सुविधावाद के वर्तमान युग में तप और त्याग की बातें बेमानी हो चली हैं। ऐसे में अणुव्रत आंदोलन की महती आवश्यकता है, क्योंकि अणुव्रत का निर्माण त्याग की तपोभूमि पर हुआ है। आज व्यक्ति हिंसा के वातावरण में जी रहा है और हिंसामुक्त समाज के लिए हमें शांति का वातावरण पैदा करना होगा। आज शिक्षा के नाम पर बचपन को खत्म किया जा रहा है, बुजुर्ग उपेक्षित हैं, फास्ट फूड के रूप में कुछ भी खाकर लोग बीमारियों को जन्म दे रहे हैं। ऐसे में देश को आचार्य तुलसी जैसे समाज सुधारकों की जरूरत है।

मुख्य वक्ता समणी निर्देशिका परिमलप्रज्ञा ने हिंसामुक्त समाज-निर्माण पर जोर दिया। भंवरलाल श्यामसुखा, प्रकाश दूगड़ ने विचार रखे। प्रारंभ में डॉ. कर्णावट ने सभागार का उद्घाटन किया। मंगलाचरण प्रीति भंडारी ने किया। स्वागत सभा तिरुपुर के अध्यक्ष कमलेश भदानी ने किया। अतिथियों का सम्मान सभा द्वारा किया गया। संचालन अलका भंडारी ने एवं धन्यवाद ज्ञापित राजकुमार भंडारी ने किया।

भ्रष्टाचार विरोधी दिवस

आसीन्द, 17 मार्च। अणुव्रत समिति आसीन्द के तत्वावधान में भ्रष्टाचार विरोध दिवस का विशेष आयोजन आदर्श विद्या मंदिर में आयोजित किया गया। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष कल्याणमल गोखरू ने सभी आगंतुकों का स्वागत करते हुए भ्रष्टाचार विरोध दिवस पर प्रकाश डाला और विभिन्न समाज सेवी संगठनों के पदाधिकारियों से सुझाव आमंत्रित किये।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि रमेश टेलर (गायत्री परिवार) ने उपस्थित संभागियों को स्वस्थ समाज की संरचना में सहयोग हेतु संकल्प करवाते हुए कहा अणुव्रत महासमिति द्वारा चलाये जा रहे भ्रष्टाचार मुक्ति अभियान को पूरे देश में जोर-शोर से चलाया जाना चाहिए, ताकि भ्रष्टाचार के फन को कुचला जा सके। विशिष्ट अतिथि सुभाष जैन ने सुझाव दिया कि प्रत्येक कार्यालय में बोर्ड पर उक्त पम्फ्लेट्स चिपकाये जायें। मीना प्रतिहार, दामसिंह कच्छवाह, मीना जैन, रामकिशोर गोयल, प्रताप सिंह, डॉ. गिरधारी विश्वास, ललिता शर्मा, गोपाल सिंह रुणावत, अल्का रांका ने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर अणुव्रत समिति के मंत्री मदनलाल गोखरू ने उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों में भ्रष्टाचार विरोधी पम्फ्लेट्स वितरण किये।

भ्रष्टाचार मिटाने का अमोघ अस्त्र है संयम

सरदारशहर, 5 मार्च। साध्वी सोनांजी, मानकंवर, रामकुमारी, रतनश्री, लब्धिप्रभा के सान्निध्य में अणुव्रत समिति सरदारशहर द्वारा आयोजित भ्रष्टाचार निवारण व नशामुक्ति अभियान के अंतर्गत समागत भ्रष्टाचार विरोधी रैली को संबोधित करते हुए साध्वी मानकुमारी ने कहा आजादी के बाद जनता के गिरते नैतिक स्तर को ऊंचा उठाने के लिए छोटे-छोटे व्रतों के रूप में अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात किया और ''संयमः खलु जीवनम्' का सूत्र दिया। जब तक व्यक्ति का दृष्टिकोण संयम परक नहीं होगा तब तक तृष्णाओं का ज्वार शांत नहीं होगा। असीमित अर्थसंग्रह की भावना ही भ्रष्टाचार का मूल कारण है, अतः भ्रष्टाचार मिटाने का अमोघ अस्त्र है संयम।

साध्वी रतनश्री ने बच्चों को इंगित करते हुए कहा पढ़-लिखकर भले ही आप डॉक्टर इंजीनियर आदि कुछ भी बन जायें, परन्तु जब तक आप अच्छे इन्सान नहीं बनते हैं, मानवीय गुणों से संपन्न नहीं बनते हैं, तब तक आप समाज का बहुत भला नहीं कर सकते।

साध्वी विनयप्रभा ने बच्चों की तुलना बिना तराशे हीरे से की, जिन्हें अभिभावक एवं शिक्षक अच्छे संस्कार देकर कीमती हीरे में तब्दील कर सकते हैं। साध्वी हिमश्री ने बच्चों की तुलना कोरे कागज से की, जिस पर जैसा चाहे वैसा रंग भरा जा सकता है। साध्वी लब्धिप्रभा ने कहा जीवन को बदलने तथा मानव को मानव की तरह जीने की कला सिखाता है अणुव्रत। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष सम्पतराम सुराणा ने कहा व्यापक रूप में फैले भ्रष्टाचार को हम संयम के माध्यम से ही हटा सकते हैं। अतः आवश्यक है कि व्यक्ति नियमों की सम्यक अनुपालना करें, स्वार्थ का त्याग करें, अणुव्रत के संदेश को हृदयंगम करें। इस अवसर पर साध्वी लब्धिश्री, शीला संचेती ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संयोजन सपना लूणिया ने किया।

भ्रष्टाचार निवारण में आत्ममंथन जरूरी

छापर, 13 मार्च। मुनि रिद्धकरण के सान्निध्य में अणुव्रत समिति छापर के तत्वावधान में भिक्षु साधना केन्द्र में भ्रष्टाचार विरोधी कार्यशाला का आयोजन हुआ। कार्यशाला में भ्रष्टाचार पनपने के कारण व इसके निवारण पर विस्तृत चर्चा हुई। अध्यक्षता कंचनदेवी नाहटा ने की। मुख्य अतिथि राजीव गांधी पंचायतीराज संगठन की प्रदेश उपाध्यक्षा सविता राठी थी। मुख्य अतिथि व पालिका अधिशाषी अधिकारी मघराज डूडी, छापर थानाधिकारी पुष्पेन्द्र झाझड़िया विशिष्ट अथिति थे।

मुख्य अतिथि सविता राठी ने भ्रष्टाचार निवारण के लिए आत्म मंथन को जरूरी बताते हुए कहा भ्रष्टाचार से निपटने के लिए समाज में जागरूकता लानी होगी। जबकि सेवा केन्द्र व्यवस्थापक मुनिश्री ने कहा कि व्यक्ति अगर अपने आचरण में सुधार करे तथा इसे जीवन में उतारें तो भ्रष्टाचार मुक्त समाज की कल्पना की जा सकती है। उन्होंने अणुव्रत आंदोलन की अवधारणा को अपनाते हुए संयमित जीवन जीने की प्रेरणा दी।

मुख्य वक्ता चैनरूप दायमा ने कहा भ्रष्टाचार मिटाने के लिए आज देश के प्रत्येक व्यक्ति को अपने दायित्व का निर्वहन करते हुए समाज में जनजागृति लानी होगी। थानाधिकारी झाझड़िया ने पूर्ण संकल्पबद्धता से भ्रष्टाचार के प्रति एकजुट होने का आह्वान किया। इस अवसर पर हुक्माराम बरवड़, पूसराज शर्मा, मंजू दुधोड़िया, वर्षा दुधोड़िया, चमन दुधोड़िया, मौलाना मुमताज अली कादरी, साधक भंवरलाल मूंदड़ा, मुनि हिमकुमार, मुनि अक्षयकुमार, मुनि रिद्धकरण व मुनि देवराज ने अपने विचार रखे।

कार्यक्रम की शुरुआत महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण से हुआ। कार्यक्रम में धन्नाराम प्रजापत, रामेश्वर बेनीवाल, पन्नालाल आर्य, महावीर खटीक, बंशीलाल डूडी, मदनलाल गोयल, मास्टर फकीर मोहम्मद, हुलास सारड़ा, दिनेश पीपलवा व विनोद नाहटा सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष रणजीत दूगड़ ने अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया। संचालन प्रदीप सुराणा ने किया।

भ्रष्टाचार उन्मूलन कार्यक्रम

राजलदेसर, 21 मार्च। साध्वी ज्योतिप्रभा के सान्निध्य में अणुव्रत समिति राजलदेसर द्वारा भ्रष्टाचार उन्मूलन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। साध्वी ज्योतिप्रभा ने कहा आज मानवीय संवेदना व करुणा के अभाव में आम आदमी अनैतिक, अपवित्र व अशुद्ध आचरण कर रहा है। जिससे हमारे राष्ट्र व समाज की छवि धूमिल होती जा रही है, इसको रोकना समय की महत्ती आवश्यकता है। इसके लिए स्वबोध जागृत हो जाये तथा स्वयं की इच्छाओं पर नियंत्रण कर लिया जाए तो समस्या का समाधान संभव है। कार्यक्रम में अणुव्रत समिति के मंत्री चंपालाल पाण्डे, डॉ. गोविन्दनारायण शर्मा, गुलाबचंद चिंडालिया, समिति के अध्यक्ष गोविन्द राम पुरोहित, प्रधानाध्यापिका सुलोचना साहरण, अशोक बैद, ओमप्रकाश सोनी, उमाशंकर दाधीच, सभा के मंत्री नौरतनमल बैद, साध्वी जगतप्रभा, मननयशा व संयमलता ने अपने विचार रखे।

इससे पूर्व प्रातःकाल विशाल अणुव्रत चेतना रैली निकाली गयी। इसमें राजल पब्लिक स्कूल के विद्यार्थी, शिक्षक-शिक्षिकाओं एवम समाज के गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया। रैली की सफलता में अनोपचंद विनायकिया, कमलसिंह दूगड़, कमल सिंह नाहटा, चुन्नीलाल घोषल एवं अणुव्रत समिति के कार्यकर्ताओं का सराहनीय श्रम रहा। मंच संचालन साध्वी मार्दवश्री ने किया।

दिल्ली प्रदेश अणुव्रत समिति द्वारा जन-जागरण अभियान

पश्चिम विहार, 28 मार्च। दिल्ली प्रदेश अणुव्रत समिति द्वारा अणुव्रत के संदेशों के स्टीकरों का लोकार्पण व अणुव्रत आचार संहिता बोर्ड को आर.डब्ल्यू.ए. को सौंपने का कार्यक्रम शासन गौरव मुनि ताराचंद एवं मुनि सुमतिकुमार के सान्निध्य में सरस्वती बाल मंदिर विद्यालय पश्चिम विहार के प्रांगण में आयोजित किया गया। संदेश के स्टीकरों का लोकार्पण कार्यक्रम के अध्यक्ष मांगीलाल सेठिया, अ.भा. अणुव्रत न्यास के प्रबंध न्यासी धनराज बोथरा द्वारा किया गया। अणुव्रत आचार संहिता बोर्ड को अशोका अपार्टमेंट के पदाधिकारियों को डालमचंद बैद, श्यामलाल जैन व प्रकाश भंसाली द्वारा सौंपा गया। अपार्टमेंट के पदाधिकारियों ने अणुव्रत आचार संहिता ग्रहण कर मुनिश्री को अणुव्रत संकल्प पत्र भरकर सौंपे एवं अणुव्रत आंदोलन से जुड़कर प्रसन्नता का अनुभव किया। 5 फीट x 3 फीट के उक्त बोर्ड को पदाधिकारियों ने अपार्टमेंट के मुख्य द्वारा पर लगाया।

मुनि ताराचंद ने सभा को संबोधित करते हुए कहा महावीर द्वारा प्रदत्त अणुव्रत नियमों को अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक आचार्य तुलसी ने इसे अणुव्रत आचार संहिता के रूप में प्रस्तुत किया। यह सर्वधर्म सम्मत है। आप किसी भी धर्म के हैं इस मानवीय धर्म को अपना सकते हैं। यह जन-जन का कल्याण करने वाला आंदोलन है।

मुनि सुमतिकुमार ने कहा दिल्ली प्रदेश अणुव्रत समिति घर-घर अणुव्रत आंदोलन को पहुंचाने का प्रयास कर रही है। इसी तरह और आगे भी प्रयास करती रहें।

मांगीलाल सेठिया ने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा अणुव्रत के नियमों को हम अपने आचरण में लायें। कॉलोनियों में बोर्ड लगाते वक्त वहां के निवासियों के साथ बैठक या एक कार्यक्रम रखकर अणुव्रत की जानकारी अणुव्रत समिति वहां दे तो यह कार्यक्रम और ज्यादा प्रभावी बन सकता है। इस अवसर पर उन्होंने बताया कि आचार्य महाप्रज्ञ ने फरमाया है कि अणुव्रत को योजनाबद्ध तरीके से और आगे बढ़ाना है। इस अवसर पर धनराज बोथरा, नारी रत्न निर्मला जैन (जगराओ), डालमचंद बैद, नगर निगम पार्षद डॉ. राजीव नैय्यर ने अपने विचार रखे।

दिल्ली प्रदेश अणुव्रत समिति के मंत्री प्रकाश भंसाली ने ''जन-जागरण अभियान'' पर विस्तृत जानकारी दी एवं समाज के सभी वर्गों से इस अभियान में अपना बहुमूल्य योगदान देने का आह्वान किया। अणुव्रत संदेश के स्टीकरों को ज्यादा से ज्यादा सार्वजनिक स्थानों पर लगाकर इस अभियान को सफल बनाने का अनुरोध किया। उन्होंने उपस्थित संभागियों से अनुरोध किया कि सभी अपनी-अपनी कॉलोनियों में अणुव्रत आचार संहिता के बोर्ड लगवाने में दिल्ली प्रदेश अणुव्रत समिति का सहयोग करें। कार्यक्रम में उपस्थित सभी मुनिवृंदों एवं समागत पदाधिकारियों दिल्ली प्रदेश अणुव्रत समिति द्वारा संचालित इस कार्यक्रम की मुक्त कंठ से सराहना की। कार्यक्रम स्थल पर अणुव्रत महासमिति द्वारा प्रकाशित अणुव्रत साहित्य की प्रदर्शनी भी लगाई गयी, जिसका सभी आगंतुकों एवं समाज के गणमान्य व्यक्तियों ने अवलोकन किया। कार्यक्रम का संचालन प्रदीप संचेती ने किया।

भ्रष्टाचार रोकथाम रैली

सायरा, 19 मार्च। अणुव्रत समिति सायरा द्वारा सायरा ग्राम में अणुव्रत महासमिति के निर्देशानुसार भ्रष्टाचार रोकथाम हेतु विशाल रैली का आयोजन हुआ। रैली में रा.सी.उ. माध्यमिक विद्यालय, बालिका माध्यमिक विद्यालय, रा.उ.प्रा. बालिका विद्यालय, रा.उ.प्रा. विद्यालय के लगभग 400 विद्यार्थियों, शिक्षक-शिक्षिकाओं ने भाग लिया।

रैली अणुव्रत परीक्षा प्रभारी राजेन्द्र गोरवाड़ा के नेतृत्व में सभा भवन से शुरु होकर महावीर मार्ग, पोरवालों की शेरी, सुथारों का मौहल्ला, मेहताओं की शेरी, कोठारी शेरी, गैंगहट, बस स्टेंड होती हुई सभा भवन तक निकाली गयी। रैली में बैनरों पर नारे लिखे हुए थे

- मैं रिश्वत नहीं दूंगा/लूंगा।
- मैं व्यवहार और व्यवसाय में प्रामाणिक रहूंगा।

तख्ती एवं पट्टिकाओं पर निम्न नारे लिखे हुए थे

- संयम ही जीवन है।
- निज पर शासन फिर अनुशासन।
- भ्रष्टाचार मिटाओ देश बचाओ।
- हम 'खिलाते' हैं अतः वो 'खाते' हैं।
- रिश्वत देना पाप है।
- रोको-रोको यह महंगाई।

इन नारों से आकाश गूंज उठा। रैली की समाप्ति पर अणुव्रत समिति सायरा के अध्यक्ष मीठालाल भोगर, मंत्री जसराज जैन ने सूरत से फोन द्वारा आयोजकों का हौसला बढ़ाया।

पर्यावरण एवं कन्या सुरक्षा अभियान

बैंगलोर। गांधीनगर सभा भवन में साध्वी कीर्तिलता के सान्निध्य में स्थानीय महिला मंडल के तत्वावधान में कन्या सुरक्षा एवं पर्यावरण संरक्षण हेतु प्रशिक्षण दिया गया। साध्वी कीर्तिलता ने कहा प्राचीन काल से ही कन्याओं को देवी के रूप में पूजा जा रहा है, लेकिन वर्तमान में कन्याओं की गर्भावस्था में ही हत्या कर दी जाती है। यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है। इससे समाज को बचना होगा तभी कन्याओं की सुरक्षा की जा सकती है।

इस अवसर पर महिलाओं द्वारा प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया। पर्यावरण सुरक्षा हेतु 4000 जूट बैगों का वितरण किया गया। एवं ''करनी है जीवन की रक्षा - कन्याओं की करो सुरक्षा'', ''मां ने दिया है जीवन तुमको तुम बेटी को जीवन दो'' इत्यादि नारों से महिलाओं को अवगत कराया गया। महिला मंडल की अध्यक्षा कांता लोढ़ा ने स्वागत किया। मंत्री पुष्पा गन्ना ने विचार रखे। संचालन उषा सेठिया ने एवं आभार ज्ञापन मीनाक्षी दक ने किया।

अणुव्रत से नैतिक विकास संभव

लाडनूं। विकास सभी चाहते हैं। कोई व्यक्ति या समाज ऐसा नहीं है जो विकास की इच्छा न करता हो। विकास भौतिक भी होता है और नैतिक भी। कोरा भौतिक विकास अनेक समस्याओं का कारण बनता है, किन्तु नैतिक विकास व्यक्ति और समाज की सभी समस्याओं को दूर करता है। अणुव्रत एक ऐसा नैतिक दर्शन है जिससे व्यक्ति और समाज का नैतिक विकास संभव है। ये विचार अणुव्रत समिति लाडनूं के मंत्री डॉ. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने समिति द्वारा आयोजित अणुव्रत गोष्ठी में व्यक्त किये। उन्होंने आगे कहा कि भारत भूमि को आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन के रूप में एक ऐसी शक्ति दी है, जिससे सभी राष्ट्रीय समस्याओं का समाधान संभव है। आज अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ के नेतृत्व में अणुव्रत मंच से नैतिक विकास के प्रयत्न किये जा रहे हैं।

समिति के संरक्षक विजयसिंह बरमेचा ने कहा अणुव्रत आचार एवं व्यवहार में प्रामाणिकता की बात करता है। यदि आज का व्यक्ति आचार एवं व्यवहार में प्रामाणिक हो तो राष्ट्र के समक्ष कोई समस्या नहीं होगी। समिति के अध्यक्ष ओमप्रकाश सोनी ने कहा अणुव्रत सर्वप्रथम अपने को बदलने की बात करता है। अणुव्रत का उद्घोष है ''हम बदलेंगे, युग बदलेगा' अतः हमें अपने में परिवर्तन लाना चाहिए। डॉ. राकेशमणि त्रिपाठी ने कहा कि अणुव्रत वर्ण, जाति, संप्रदाय से ऊपर उठकर मानव को सही रूप में मानव बनने का संदेश देता है। इसके अतिरिक्त सीताराम टेलर, कंचनलता शर्मा, जगमोहन माथुर, नंदलाल वर्मा ने अणुव्रत दर्शन पर प्रकाश डाला। अणुव्रत मूल्यों को जन-जन तक पहुंचाने के संकल्प के साथ अणुव्रत गोष्ठी संपन्न हुई।

प्रेक्षाध्यान केन्द्र द्वारा जरूरतमंदों की सहायता

मुंबई। कांदिवली अशोक नगर दामोदरवाडी में प्रेक्षाध्यान योग साधना केन्द्र के तत्वावधान में 700 भाई-बहनों की उपस्थिति में प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन हुआ। इसमें गरीब एवं जरूरतमंदों को चटाई एवं चावल वितरण किया गया। मुख्य अतिथि कांदिवली (पूर्व) के विधायक ठाकुर रमेश सिंह थे। आयोजन में सोहनलाल चोरड़िया, सुंदरबाई, पानमल सेठिया एवं अशोक नगर चेरिटी ग्रुप की बहिनें उपस्थित थी।

प्रेक्षा प्रशिक्षक पारसमल दूगड़ ने संभागियों को प्रशिक्षण देते हुए सीधा बैठने की कला, दीर्घ श्वास प्रेक्षा का प्रयोग, नमस्कार मुद्राएं तथा स्मरण शक्ति बढ़ाने के लिए ज्ञान मुद्रा, हृदय रोग से बचने के लिए अपान वायु मुद्रा, डायबिटीज के लिए अपान एवं प्राण मुद्रा इत्यादि का प्रशिक्षण दिया।

प्रेक्षाध्यान योग साधना केन्द्र द्वारा आयोजित इस कार्यशाला में कांदिवली के विधायक रमेश सिंह के हाथों लगभग 600 जरूरतमंदों को चटाई, चावल एवं नाश्ता सामग्री का वितरण कराया गया।

आयोजन के विशेष सहयोगी सोहनलाल चोरड़िया, सुंदरबाई पानमल सेठिया, अशोक नगर चेरिटी ग्रुप की बहनों को कुंकुम तिलक, श्रीफल, माल्यार्पण व शॉल द्वारा स्वागत किया गया। उपस्थित पत्रकार बंधुओं का भी सम्मान किया गया। कार्यक्रम में ओमप्रकाश तिवारी, प्रसिद्धनाथ शुक्ला, हीरालाल कोठारी, संतोष तिवारी, मनोज तिवारी आदि पत्रकारों ने विशेष उपस्थिति दर्ज कराई। तेयुप अध्यक्ष नवरत्न सेठिया उपस्थित थे। संचालन प्रेक्षा प्रशिक्षक पारसमल दूगड़ ने किया।

विनम्रता है जीवन निर्माण का सूत्र

नई दिल्ली, 30 मार्च। शासन गौरव मुनि ताराचंद एवं मुनि सुमतिकुमार की सन्निधि में उत्तम नगर दिल्ली के एस.एस. जैन स्थानक में संस्कार निर्माण शिविर का आयोजन हुआ। मुनि ताराचंद ने अपने उद्बोधन में कहा बंधन मुक्ति के लिए भी बंधन आवश्यक है। गुरु का अनुशासन, मर्यादा का पालन बंधन नहीं विकास का पथ है। धर्म के तत्त्वों को आत्मसात करने से ही आत्मा परमात्मा बनती है। ज्ञानशाला में बच्चों को अनुशासन व विनम्रता का पाठ पढ़ाया जाता है। विनम्रता जीवन निर्माण का सूत्र है।

मुनि सुमतिकुमार ने कहा बालक का जीवन सरल होता है। जहां सरलता है वहां धर्म का निवास है। बालक ज्यों-ज्यों बड़ा होता है घर के वातावरण से व संगति के कारण सरलता कम हो जाती है। शिविर के माध्यम से सद्संस्कारों का विकास होता है। मुनि देवार्यकुमार ने कहा संस्कारों का बीजारोपण बाल्यावस्था में ही हो जाए तो ये संस्कार जीवन भर बने रहते हैं।

आसकरण आंचलिया ने कहा उत्तम नगर की ज्ञानशाला को प्रारंभ हुए दो वर्ष हुए हैं और इन दो वर्षों में उल्लेखनीय विकास किया है। विद्यार्थियों की संख्या में अभिवृद्धि हो इसका विशेष प्रयास रहे। दिल्ली ज्ञानशाला के संयोजक रतनलाल जैन ने कहा कि ज्ञानार्जन की दृष्टि से शिविर बहुउपयोगी होते हैं। एस.एस. जैन सभा के अध्यक्ष रवि जैन ने स्वागत करते हुए मुनिद्वय के प्रति आभार व्यक्त किया। संयोजन मनीषा जैन ने किया।

स्वास्थ्य जांच शिविर

उदयपुर। अणुव्रत समिति उदयपुर, सेवा समिति एवं भारत विकास परिषद् उदयपुर के संयुक्त तत्वावधान में आमजन हेतु मधुमेह एवं उच्च रक्तचाप रोकथाम हेतु निःशुल्क मधुमेह एवं उच्च रक्तचाप जांच शिविर का आयोजन रोश डाइगनोस्टिक इंडिया प्रा.लि. के पवन नागौरी के सौजन्य से घंटाघर में लगाया गया। इसमें बुजुर्ग एवं महिलाओं ने अपनी जांच कराई। समिति के कार्यवाहक अध्यक्ष राजेन्द्र सेन ने शिविर की जानकारी दी।

शिविर के मुख्य अतिथि पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र के पूर्व निदेशक डॉ. देवेन्द्र धोदावत थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता समिति के अध्यक्ष गणेश डागलिया ने की। विशिष्ट अतिथि 44 चेनल के संपादक मानवेन्द्र सिंह थे। इस अवसर पर ब्लड प्रेशर जांच की श्रुतिदास गुप्ता, पुलकेश पुरकेत ने मधुमेह की जांच की। शिविर में डॉ. निर्मल कुणावत, डॉ. जयराज आचार्य, अरविन्द चित्तौड़ा, राजेन्द्र सेन, अशोक राठौड़, जय किशन चौबे, नजमा मेवाफरोश, रूपशंकर पालीवाल, रामप्रसाद गुप्ता, राकेश चित्तौड़ा, जमनालाल दशोरा, रमेश निमावत, राजेन्द्र राठौड़, अजीत जैन, पुष्कर सोनी, राधाकिशन व्यास, भंवर भारती, राजकुमार सोनी, मीनाक्षी शर्मा, गणपत सोनी, पुरुषोत्तम जोशी, प्रशान्त भारद्वाज, मनीष तिवारी, संजय शर्मा, भंवर तोषनीवाल, राजेश बी. मेहता इत्यादि का सराहनीय श्रम रहा।

www.terapanthinfo.com

संग्रहणीय एवं पठनीय कृति

एल.आर. भारती

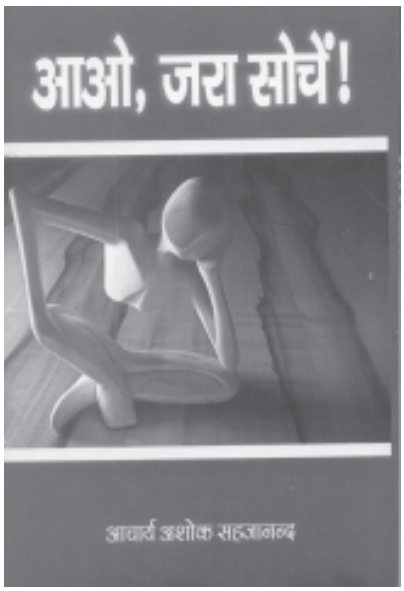

अणुव्रत लेखक अशोक सहजानन्द की नवीनतम कृति 'आओ जरा सोचें!' में उनके 31 लेखों का संकलन है। इस कृति में लेखक ने समकालीन राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक प्रवृत्तियों पर बड़ी स्पष्टता से अपने विचार प्रस्तुत किए हैं, जिनमें से कुछ चर्चित शीर्षक हैं ''हमारी मासूम आदत नासूर न बन जाए'', ''खुलकर प्रेम करने की छूट'', ''आतंकवाद - एक समीक्षा'', ''मिनिस्टर या मॉनस्टर'', ''आध्यात्मिकता या व्यवसायिकता'', ''मीडिया की भूमिका'', ''एक अनुकरणीय प्रयत्न'', ''सावधान इन तांत्रिकों से'', ''ज्योतिष का सच'', ''प्रासंगिकता वास्तुशास्त्र की'', ''एकल परिवार की बलि चढ़ती वयोवृद्ध पीढ़ी''। लेखक अणुव्रत आंदोलन एवं अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी की अवधारणा के प्रति नतमस्तक हैं और अणुव्रत पाक्षिक से जुड़े हुए हैं। आइए देखें उनके चिंतन की कुछ झलिकयां

विकसित होते, विकासमान देश बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के आर्थिक साम्राज्यवाद का सहज शिकार होते हैं। 'वेलेन्टाइन डे' जैसे त्यौहार, 'ब्यूटी कांटेस्ट' जैसे आयोजन उनके उत्पादों की खपत बढ़ाने के प्रपंच हैं। दूसरे अर्थ में उनके लाभ दोगुने-तिगुने हो जाते हैं। भारत जैसे देश में जहां कुपोषण, कुस्वास्थ्य बढ़ता जा रहा है, वहां युवा पीढ़ी की सृजनात्मक शक्ति को सही दिशा की ओर न मोड़कर इस तरह के आयोजनों में उलझना कहां तक उचित है?

आतंकवाद का मुख्य कारण है राजनीतिक वर्चस्व स्थापित करने का विकट संकल्प। आज आतंकवाद किसी भी देश के राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक विकास को छिन्न-भिन्न करने का एक प्रबल हथियार बन गया है। सबसे बड़ी बात है, हमारी सरकारों की भीतरी ईमानदारी और कर्मठता। आज किसी भी राजनीतिक दल के नेतृत्व में इन दोनों गुणों का सर्वथा अभाव है।

ज्योतिषियों की भविष्यवाणी हैं कि 21वीं सदी के शुरुआत में ही भारत एक महाशक्ति बन जाएगा। एक सहज जिज्ञासा होती है कि आखिर किस कीमत पर? क्या सामरिक श्रेष्ठता और विज्ञान-टेक्नॉलाजी की उन्नति ही किसी देश को शक्ति-सम्पन्न बनाती है? हमारा विचार है कतई नहीं। देश महान और महाशक्ति सम्पन्न तभी बनता है जब उसकी आम जनता खुशहाल होती है। अशिक्षा, बेरोजगारी, कुपोषण, धर्मान्धता तथा व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए राष्ट्रहित को बलि चढ़ा देने वाला नेतृत्व नहीं होता। आज भारत में ये सब अपना वर्चस्व बनाए हुए हैं।

हम भी सांसदों या विधायकों की रीति-नीति की आलोचना करते रहते हैं, शर्मसार होने का दिखावा करते हैं और चुनाव के समय सब कुछ भूलकर तरह-तरह के प्रलोभनों, वायदों और नारों से सम्मोहित होकर पुनः उन्हें ही निर्वाचित करते हैं। देश की इस विडम्बनापूर्ण स्थिति के लिए राजनीतिक दलों से अधिक जिम्मेदार हम मतदाता हैं।

पुस्तक के विषय बहुआयामी हैं और विश्लेषण भी बहुआयामी है। लेखक ने अपने विचारों को किसी एक बिन्दु पर केन्द्रित नहीं किया है और अणुव्रत अवधारणा के अनुरूप अपने चिंतन को आगे बढ़ाया है। उन्होंने विशुद्ध वैचारिकता को अपनी कसौटी बनाया है और पूर्वाग्रहों को परे रख विषय को पर्त-दर-पर्त खोला है। पुस्तक की भाषा और शैली सहज एवं सरल है। सहजानंदजी ने अपनी विषय-विवेचना को व्यवहारिक जीवन के अनुभवों की कसौटी बनाने का प्रयास किया है।

यही कारण है कि विषयों का चुनाव भी लेखक ने उनकी उपयोगिता तथा उपादेयता को समझते हुए किया है। लेखक का मानना है कि बदलती हुई वैश्विक परिस्थितियों के नकारात्मक प्रभावों से एक बौद्धिक विचारधारा ही निजात दिला सकती है। आज के प्रश्नों को सही ढंग से विवेचित करने की आवश्यकता है। जीवन को उन्नत एवं सुखद बनाने के लिए अणुव्रत के नियमों को जीवन में उतारने की महत्ती आवश्यकता है।

पुस्तक की साज-सज्जा उच्च कोटि की है। पुस्तक का आवरण-चित्र विषयानुरूप एवं आकर्षक है। एक श्रेष्ठ पुस्तक के लेखन एवं प्रकाशन के लिए लेखक तथा प्रकाशक निश्चय ही साधुवाद के पात्र हैं। आशा ही नहीं, अपितु पूर्ण विश्वास है कि उनकी यह कृति पाठकों में विशिष्ट स्थान बनायेगी।

पुस्तक	: आओ, जरा सोचें!
लेखक	: आ. अशोक सहजानन्द
पृष्ठ	: 128 मूल्य : 150 रुपये
प्रकाशक	: स्वाति अकादमी बी-5/263, यमुना विहार, दिल्ली-110053

रोशनारा रोड़, दिल्ली–110007

www.terapanthinfo.com

www.terapanthinfo.com

अणुव्रत योगक्षेमी विसर्जन योजना

अणुव्रत की आचार संहिता व्यापक आचार संहिता है। अणुव्रत का अर्थ है–नैतिकता। आज चहुँ ओर हाहाकार है। समूचा मानव समाज पीड़ित है अनैतिकता से। विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका, संचार माध्यम, शिक्षण संस्थान सभी भ्रष्टाचार, नशा और आडम्बर में लिप्त हैं। बढ़ते भ्रष्टाचार, नशा और आडम्बर ने हमारी विकास यात्रा की गति को मंद कर दिया है। समाज में व्याप्त इन बुराइयों के विरुद्ध आवाज उठाना भी आसान नहीं है क्योंकि हर डाल पर वे अपना डेरा डाले बैठे हैं। हाँ, इन बुराइयों के मूल कारणों पर प्रहार कर एक दीपक जला समाज में नैतिकता के प्रति निष्ठा को पुनः पैदा किया जा सकता है।

अणुव्रत आंदोलन ने समाज में व्याप्त बुराइयों पर अँगुली उठाई है। हमारे साधन, शक्ति सीमित हैं। अँगुली निर्देश का यह क्रम न सिर्फ गतिशील रहे वरन् लोकव्यापी बने और अणुव्रत की कार्यकर्ता शक्ति अनैतिकता के सामने प्रतिरोधक शक्ति बनकर खड़ी हो इस दृष्टि से अणुव्रत महासमिति के पास पूरे साधन हो यह भी अत्यन्त आवश्यक है।

आने वाले पाँच वर्षों में अणुव्रत की सर्व प्रवृत्तियाँ सुचारू रूप से संचालित हों और अणुव्रत के आंदोलनात्मक स्वरूप में तेजस्विता आए इस दृष्टि से अणुव्रत योगक्षेमी विसर्जन योजना का वर्ष 2009–10 से प्रारंभ हुआ है। इस योजना के अन्तर्गत प्रतिवर्ष एक निश्चित अर्थ राशि विसर्जित करने वाले अर्थ प्रदाताओं के तीन वर्ग हैं–

विशिष्ट अणुव्रत योगक्षेमी	**प्रतिवर्ष 51000=00 रु. का अर्थ सहयोग**
विशेष अणुव्रत योगक्षेमी	**प्रतिवर्ष 21000=00 रु. का अर्थ सहयोग**
अणुव्रत योगक्षेमी	**प्रतिवर्ष 11000=00 रु. का अर्थ सहयोग**

अणुव्रत योगक्षेमी विसर्जन योजना के अन्तर्गत पाँच वर्षों तक नियमित रूप से अर्थ विसर्जन का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। महाप्रतापी अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी के जन्म शताब्दी वर्ष को दृष्टिगत रखते हुए अणुव्रत महासमिति की प्रवृत्तियों के सुचारू संचालन हेतु इस योजना का श्रीगणेश हुआ है। आप सभी से विनम्र अनुरोध है कि अणुव्रत योगक्षेमी विसर्जन योजना से जुड़कर अणुव्रत आंदोलन के प्रचार–प्रसार में सहभागी बनें। आपका अर्थ सहयोग हमारे कार्य का आधार सम्बल बनेगा। अणुव्रत योगक्षेमी विसर्जन योजना में अभी तक निम्न महानुभावों ने जुड़कर अणुव्रत के आंदोलनात्मक स्वरूप को निखारने में अपनी सहभागिता अंकित कराई है

- **विशिष्ट अणुव्रत योगक्षेमी**

1. श्री जुगराज नाहर	चैन्नई	2. श्रीमती शांता नाहर	चैन्नई
3. श्री बी.सी भलावत	मुम्बई	4. श्री रमेश धाकड़	मुम्बई
5. श्री कमलेश भादानी	तिरूपुर	6. श्री मगन जैन	तुषरा

- **विशेष अणुव्रत योगक्षेमी**

1. श्री बाबूलाल गोलछा	दिल्ली	2. श्री सम्पत सामसुखा	भीलवाड़ा
3. श्री जसराज बुरड़	जसोल	4. श्री निर्मल नरेन्द्र रांका	कोयम्बतूर
5. श्री गोविन्दलाल सरावगी	कोलकाता	6. श्री ताराचंद दीपचंद ठाकरमल सेठिया	जलगांव
7. श्री रूपचंद सुराना	गुवाहाटी		

- **अणुव्रत योगक्षेमी**

1. श्री जी.एल.नाहर	जयपुर	2. श्री विजयराज सुराणा	दिल्ली
3. श्री मीठालाल भोगर	सूरत	4. श्री बाबूलाल दूगड़	आसीन्द
5. श्री गुणसागर डॉ. महेन्द्र कर्णावट	राजसमन्द	6. श्री अंकेशभाई दोषी	सूरत
7. श्री इन्द्रमल हिंगड़	भीलवाड़ा	8. श्रीमती भारती मुरलीधर कांठेड़	दिल्ली
9. श्री लक्ष्मणसिंह कर्णावट	उदयपुर	10. श्री सुबोध कोठारी	गुवाहाटी
11. श्री जयसिंह कुंडलिया	सिलीगुडी		

अणुव्रत योगक्षेमी विसर्जन योजना से जुड़कर हम सभी प्रयास करें स्वस्थ समाज संरचना के सपने को धरती पर उतारने का। इस क्रम में आपका त्वरित सहयोग प्राप्त हो यही अनुरोध है। आप अपनी विसर्जन राशि बैंक ड्राफ्ट से अणुव्रत महासमिति के नाम से नई दिल्ली भिजवायें या केनरा बैंक की किसी भी स्थानीय शाखा में अणुव्रत महासमिति के खाता क्रमांक **0158101010750** में जमा करायें।

आपका सहयोग : हमारा आधार संबल

www.terapanthinfo.com